ॐ श्रीनिष्कलङ्काय नमः ॥

सत्य शब्द संग्रह

लेखक और प्रकाशक :—

रघुनाथ स्वामी

नरेला निवासी।

BY

RAGHUNATH SWAMI.

28TH APRIL, 1925.

दशमावृत्ति २०००] वि० सं० १९८२ [मूल्य प्रेम।

पुस्तक मिलने के पते :—

पं० वासुदेवजी शर्म्मा भारद्वाज,

नं० ६५ लोवर चितपुर रोड कलकत्ता।

—:*:—

भगवद्भक्ति आश्रम रामपुरा (रेवाड़ी)

जि०—गुडगांवां।

—:*:—

श्रीस्वामी पुस्तकालय नरेला

(सूबा—देहली)

भूमिका।

कलौ केशव कीर्तनात

श्रीस्वामी पुस्तकालय नरेला

(बुवा—देहली)

भूमिका ।

कलौ केशव कीर्तनात्

कलियुग में केशव कीर्तन से कल्याण होता है ।

आकाशात्पतितं तोयं यथा गच्छति सागरम् ।
सर्वदेव नमस्कारं केशवं प्रति गच्छति ॥ १ ॥

अर्थ—जैसे आकाश से वर्षा हुआ जल समुद्र को जाता है ऐसे ही सर्व नमस्कार केशव को प्राप्त होते हैं ।

नूतन जलधर रुचये, गोप वधूटी दुकूल चौराय।
नस्मै कृष्णाय नमः संसार महीरुहस्य बीजाय ॥ ३ ॥

दोहे:—नूतन जलधर की रुचि, गोपि दुकूल चुराय।
ऐसे काले कृष्ण को, बार बार शिर नाय ॥ १ ॥
कलियुग में काले हुए, जोवन काला जान।
कृष्ण कुटिल जग लोग हैं, भगवत् कुटिल महान् ॥२॥
कृष्ण भये जैसे भगत, कलियुग के कुटिलाय।
भक्त हेतु अवतर धरें, जासे दिल फँस जाय ॥ ३ ॥

प्यारे पाठक सज्जनो! मैं आपकी सेवा में एक बड़े उत्तम कल्प वृक्ष के पुष्प समर्पण करता हूं, कि जिनकी सुगन्ध से तुम्हारा मन रूपी भ्रमर आप से आप उड़ना छोड़ शान्त होकर

प्यारे पाठक सज्जनो ! मैं आपकी सेवा में एक बड़े उत्तम कल्प वृक्ष के पुष्प समर्पण करता हूं, कि जिनकी सुगन्ध से तुम्हारा मन रूपी भ्रमर आप से आप

आनन्द को प्राप्त होगा। वह पुष्प सच्चे आप्त पुरुषों के शब्द हैं, जिनका भगवद्भक्तों में बड़ा ही आदर है। और जिन कल्प वृक्ष महात्माओंके इस पुस्तकमें शब्द हैं उनके निम्न लिखित ये नाम हैं नरसी, नानक, नामदेव, सूरदास, तुलसीदास, मीरांबाई, रविदास चरणदास, मछन्दरनाथ, गोरखनाथ, गुलाबनाथ, भानीनाथ, रघुनाथ, सुन्दरदास, देवीसहाय, घीसादासादि इन भजनों से आप लोगों का अन्तः करण रूपी दर्पण जब निर्मल होवेगा, तब आपको बड़ा ही आनन्द विदित होगा। इन शब्दों में भक्ति, ज्ञान, वैराग्य, और योग, भरा हुआ है। जब इनमें हम लोग प्रवेश करते हैं तो अपूर्व ज्ञान और प्रेम के दर्शन होते हैं। ये शब्द हमें

बड़े ही परिश्रम से प्राप्त हुए हैं, इनके गाने वालों को जो प्रेम होता है वही जानते हैं "मूका स्वादनवत्" जैसे गूंगे के गुड़ का स्वाद गूंगा ही जानता है। प्रथम प्रार्थना उपासना के शब्द हैं, तदुनन्तर ज्ञान भक्ति रूप शब्द हैं। ये क्रमशः चित्त के मल विक्षेप आवरण को दूर करते हैं, और सोऽहं ज्योति का प्रकाश करके श्रुतिको गगन पर चढ़ा कर सच्चे स्वामीमें लय कर देते हैं।

॥ हरिः ओ३म् तत्सत् ॥

विनीतः—

पं० रघुनाथ शर्म्मा, स्वामी

रामनवमी
सं० १९८२

स्थान—शान्तिकुटी "सफ़ियाबाद"

पो०— [illegible] (जि० [illegible])

विनीतः—

पं० रघुनाथ शर्म्मा, स्वामी

स्थान—शान्तिकुटी "सफियाबाद"

रामनवमी

सं० १९८२

संग्रहकर्त्ता पं० रघुनाथ स्वामी।

Burman Press, Calcutta.

संसार सागरे मग्नं मामुद्धर जगद्गुरोः ।

संसार सागरे मग्नं मामुद्धर जगद्गुरोः ।

जय श्री राधे श्याम ॥

श्रीवृन्दावन विहारिणे नमः ।

श्रीकृष्ण रुक्मिणी कान्त गोपी जन मनोहर ॥

• ॐ •

उपदेश संग्रह

* ॐ *

सदुपदेश संग्रह

हरिः ओ३म् तत्सत् पर ब्रह्मणेनमः।

समुद्र जब स्थिर रहता है, तब उसे ब्रह्म कहते हैं, और उसी समुद्रमें जब लहर उठती हैं तब उसीको हम शक्ति या माया कहते हैं; वही देश काल निमित्त स्वरूप है। सविशेष सगुण; निर्विशेष निर्गुण; उसके दो रूप हैं। पहिले रूपमें वह ईश्वर जीव और जगत् है और दूसरे रूपमें वह अज्ञात और अज्ञेय है। सर्व-

२ शक्तिमत्ता सर्वव्यापकता अनन्तदया उसी जगज्जननी जगदम्बा प्रेमरूपिणी भगवतीके गुण हैं। प्रत्येक व्यक्तिके पीछे अनन्त शक्ति विद्यमान् है। एक कण बिन्दु, राम, कृष्ण, बुद्ध, ख्रीष्ट आदि और जगत्का विस्तार एक बिन्दुको प्रकाशित करता है। एक आत्मा ब्रह्म भिन्नभिन्न सर्व उपाधियोंमें प्रकाशित होता है। बड़प्पन की डींग, दलबन्दी, ईर्ष्यादि सदाके लिये छोड़ दो, पृथ्वीकी भांति सहिष्णु बनो लड़कपनकी चंचलता और युवापनकी गम्भीरता दोनों मिलाकर सबके साथ प्रेममें रहो।

आत्माके स्वरूपका व्यक्त, और कभी अव्यक्त, भाव होता है। आत्मा मानों बादलोंसे ढके हुए सूर्यकी न्याईं है। हृदयको

३ समुद्रके समान महान् बना डालो, क्षुद्र भावोंको पारकर

समुद्रके समान महान् बना डालो, क्षुद्र भावोंको पारकर जाओ, अमङ्गलके आनेपर भी आनन्दमें उन्मत्त हो जाओ। संसारको एक चित्रकी भांति देखो, जगत्में कोई तुमको विचलित न कर सकेगा। अहन्ताको दूरकर दृढ़ता से खड़े हो जाओ, काम, कांचन, मान, यश, को छोड़कर ईश्वरको दृढ़तासे पकड़ो। विधि, निषेध, के घेरेमें पड़े रहनेसे आत्माका प्रसार नहीं होता। जो जितनी ही आत्मानुभूतिका प्रकाश कर सकता है उसके उतने ही विधि निषेध कम हो जाते हैं। दूसरोंकी सेवा शुभ कर्म है। इसीके प्रभावसे चित्त शुद्ध होता है, इसीके प्रभावसे सबके भीतर बैठे हुए अन्तर्यामी भगवान् प्रकाशित होते हैं। आदेशके अनुसार

४ | सङ्गठन करनेका उद्योग करना धर्मका यही लक्ष्य है, यही उद्देश्य है। आदर्श धार्मिक, क्षमा, धृति, शौच, शान्ति, उपासना, और ध्यानमें परायण आदर्शका अवलम्बन विस्तार ही जीवन और संकीर्णता ही मृत्यु है। जहां प्रेम वहीं विस्तार और जहां स्वार्थता वहीं संकोच। अतएव प्रेमही जीवनका एक आधार है। अवश्य अहैतुक प्रेम करना चाहिये वही एकमात्र जीवन गतिका नियमन करनेवाला है। जिस कर्ममें जीवोंके मनमें धीरे २ ब्रह्मभावके उदय होनेमें सहायता पहुंचे वही कर्म उत्तम है। यदि किसीको अधिक सुभीता देना होतो बलवानकी अपेक्षा दुर्बलको अधिक सुभीता दो। सदा दाता बनो अपना सर्वस्व दे डालो, पर बदलेमें कुछ न

५ | चाहो। दूसरोंसे प्रेम करो सहायता, करो, सेवा करो तुमसे जो |

[illegible] सहायता पहुंचे वही कार्य उत्तम है। यदि किसीको अधिक सुभीता देना होतो बलवानकी अपेक्षा दुर्बलको अधिक सुभीता दो। सदा दाता बनो अपना सर्वस्व दे डालो, पर बदलेमें कुछ न

५ चाहो। दूसरोंसे प्रेम करो सहायता, करो, सेवा करो तुमसे जो कुछ बने दूसरोंके लिये करो पर सावधान पलटेमें कुछ न चाहो। व्यक्तिगत, देशगत, कालगत, कर्माकर्मका साधन करो।

"परोपकाराय सतांहि जीवनम्"

—पत्र—

ओ३म् श्री गुरुचरण कमलेभ्यो नमः ॥

आलस्यं मृत्युरित्याहु यत्नं जीवन मित्युत।
पिपीलिकाः कणशः कणशो ऽन्नं समाहृत्य २
विवरं प्रपूरयन्ति पुत्तिका वल्मीक सञ्चयात् त्वण-

मपि न विरमन्ति। सूर्यादयोदेवाःमहता वेगेन भ्रमन्तः क्षणमपि विश्रान्तिंनकांक्षन्ति क्षणमपि स्तभिते समीरणे कथमिव व्याकुली भवन्ति जीवाः॥

हे सच्चिदानन्द अनन्त ज्ञानस्वरूप, नित्य शुद्ध बुद्ध, मुक्त-स्वभाव सर्वशक्तिमान् सर्व हृदयान्तर्गत सर्व व्यापक प्रभु, यदि मैं तुमको यहां मनुष्य शरीरमें रहते हुए भी अपने आत्मामें साक्षात् नहीं कर पाता तो और कहां पा सकूंगा? अय! मेरे प्यारे पर-

मात्मा मेरे हृदय और नेत्रोंमें प्रगट होकर साक्षात् दर्शन दिखाओगे

तुमको यहां मनुष्य शरीरमें रहते हुए भी अपने आत्मामें साक्षात् नहीं कर पाता तो और कहां पा सकूंगा ? अय ! मेरे प्यारे पर-

७ मात्मा मेरे हृदय और नेत्रोंमें प्रगट होकर साक्षात् दर्शन दिखाओगे तो इस जीवका कल्याण होगा, ओ३म् परमात्मा यह है न वह वरंच सारे पदार्थोंमें है। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड उसका जीवन चरित्र है, जो सबके हृदयमें विराजमान होकर वह स्वयं लिख रहा है । सारे पदार्थ परमात्माके शब्द हैं और बोलते हैं कि आवो २ मेरी ओर आवो। जो ईश्वरध्वनिको नहीं सुनता वह बहरा है। जो मनुष्य उत्पन्न हुए पदार्थोंके सौन्दर्यको नहीं देखता वह अन्धा है, सौन्दर्य विवेक धर्म एक ही है तर्कसे हम परमात्माका चिन्तन करते हैं, परन्तु सौंदर्य साक्षात् दर्शन कराता है वह मनुष्य जो इन सकल पदार्थोंको निरीक्षण करके भी धन्यवाद गायन नहीं

करता वह गूंगा है। संसारकी सुन्दर वस्तुयें एक विशेष सौन्दर्य की सत्ताको साक्षी हैं । प्रत्येक मधुर वस्तु अत्युत्तम मधुको दर्शाती है। जो अन्य पदार्थोंके सौन्दर्य्य और उत्तमताका स्रोत है उसीको परमात्मा कहते हैं। जो वस्तु ईश्वरके समीप है वह उत्तम है और जो दूर है वह निकृष्ट कहाती है। जो अच्छा है वह अपनेसे अत्युत्तम श्रेष्टताकी अस्तित्वका प्रमाण है, उच्च स्वरसे सकल पदार्थ पुकार रहे हैं कि परमात्मा सबमें विद्यमान् है । जब हम किसी वस्तुसे प्यार करते हैं, तो उसके आभ्यन्तर वास करने वाले परमात्माके कारणसे करते हैं। प्यासा मनुष्य जलको अभिलाषा इसलिये करता है कि जलमें परमात्मा निवास करते

हैं। परमात्मा भक्तोंके हृदयमें निवास करते हैं। परमात्मा भक्तों

अभिलाषा इसलिये करता हूं कि जलमें परमात्मा निवास करते

हैं । परमात्मा भक्तोंके हृदयमें निवास करते हैं । परमात्मा भक्तों के हृदयमें प्रगट होते हैं महान्से महान् सुख अच्छे कामोंके चिन्तनसे होता है परमात्मा उनसे प्यार करते हैं, जो बुरे कामों से घृणा कर श्रेष्ठ कार्यानुरक्त रहते हैं ।

दश नियमाः ।

१—मनुष्यका पहिला कर्त्तव्य है कि सद्गुरुकी शरणमें जावे, और उनकी कृपा सम्पादन करनेके लिये शुद्ध चित्तसे उनकी सेवा करे ।

२—उन सद्गुरुके वचनोंपर दृढ़ विश्वास रक्खे ।

३—एक ही मत मार्ग का अनुरसण करे।

४—साधु सज्जनका सत्सङ्ग करे।

५—विषयोंके आधीन न हो।

६—शत्रुओंको मित्र बनावे।

७—अधिक उपाधि न बढ़ावे।

८—निरन्तर सारासारका विचार करता रहे।

९—भूत मात्रपर दया रक्खे।

१०—अहर्निश परमात्माका ध्यान करके उनपर दृढ़ आस्था रक्खे।

२०—अहर्निश परमात्माका ध्यान करके उनपर दृढ़ आस्था रक्खे।

॥ प्रार्थना ॥

हे परमेश्वर परम पिता परमात्मन्! आप हमारे संरक्षक और सहायक तथा प्रेरक हैं, हम सब मिलकर एक तुम्हारी ही भक्ति करें, तुम्हारे ही चरणोंमें श्रद्धा भक्ति पूर्वक शिर झुकाते रहें और एकमात्र तुम्हारी ही सहायता चाहें। अय हमारे आत्मा जगदीश्वर आप अनन्त क्षमास्वरूप और दयालु हो। हे हमारे सर्वस्व परमात्मन् हम तुम्हारे पवित्र चरणोंको बारम्बार प्रणाम् करते हैं। आपही हमारी टेक हो और पत रखने वाले हो। प्रतिज्ञा पर आप ही दृढ़ताके स्थिति स्थापक हो। हे अनन्त, अपार, प्रकाश स्वरूप,

१२ पवित्र ज्योतिः परमात्मन् ! आप हमको श्रेयस्कर श्रेष्ठ मार्गसे अपनी प्राप्तिकी ओर लेचलिये आपही हमारे सत्पथ-प्रदर्शकनेता तथा संचालक हैं । हे अन्तर्यामिन् हम तेरे हैं, हमको अन्तर्यामी रूपसे प्रेरणा करो कि हम तेरे उस मार्गपर चलें कि जिसपर तेरे पूर्ण भक्त ऋषि महर्षि चले हैं और जिस मार्ग द्वारा तुमको प्राप्त हो चुके हैं जिनपर तुम्हारा परम अनुग्रह तथा प्रसाद हुआ है । और हे सर्वशक्तिमान् ! हमारे प्रभु हमें उस मार्गसे कभी मत चलाओ जिसपर तेरे अभक्त चले हों और तुम्हारी प्रसन्नता से हम कभी वंचित न रहें, हे प्रभु ! तुम हमारे अन्तर्यामी प्रेरक सखा हो, हम तुम्हारी ही शरण हैं । अतएव हमारी रक्षा करो ।

१३ हे जगदीश्वर जगदाधार ! हमको वह पवित्र दृढ़ात्मिका बुद्धि

से हम कभी वंचित न रहें, हे प्रभु ! तुम हमारे अन्तर्यामी प्रेरक सखा हो, हम तुम्हारी ही शरण हैं। अतएव हमारी रक्षा करो ।

३३ हे जगदीश्वर जगदाधार ! हमको वह पवित्र दृढ़ात्मिका बुद्धि प्रदान करो कि जिसमें केवल एकमात्र तुम्हारा ही दृढ़ विश्वास तथा निश्चय हो। हमको वह अहंकार दो कि जिसमें हम अपना आपा तुमको कह सकें, मनमें तुम्हारा शिव संकल्प उठे; चित्तमें तुम्हारा ही चिन्तन रहे। हमारे नेत्र और हृदय खुले हों और उनपर तुम्हारा पूरा अधिकार हो । हमारे सबके द्वारा केवल आपकी जय हो आप हमारे जीवन के नियन्ता प्राण स्वरूप हो। हे स्वामिन् हमारी सब क्रियायें और चेष्टायें आपके चरणोंमें समर्पण होवें हमारे भाव महान् उदार तथा गम्भीर हों। हम सब प्राणी मात्रको अपना ही आत्म स्वरूप देखें और सब

१४ की भलाईमें अपनी भलाई समझें, अहर्निश परोपकार में रत रहें
तुम्हारी ही भक्तिका सर्वत्र प्रचार करते हुए, अपने जीवनको
सफल करते हुए, तुम्हारे पवित्र ज्योतिर्मय चरणोंके समीप बैठने
के योग्य बनें। हे पतितपावन! दीनोंके उद्धार करनेवाले परमा-
हम! हमको ऐसी उदार बुद्धि दीजिये कि जिससे हम दीन
दुखियोंकी सहायता सच्चे हार्दिक भावसे करें। हमें तुम्हारे
प्रेममें ही जीवन प्रिय हो । हे विश्वात्मन्! विश्वस्वरूप!! हम
तुम्हारे भक्ति मार्गपर चलते हुए महान् दुःखोंको भी सानन्द सहन
कर सकें। तुम्हारे भजनमें दृढ़ रहें, सबके साथ पवित्र प्रेम करें।
हे प्रेमाकर! हम सबको अपना ही आत्मा जानें, हमारा आचरण।

१५ सबकी भलाईके लिये हो। हे अनन्त शक्ति परमात्मन्! आपको
... असीमित बेअन्दाज है, तुम्हारी दातसे कोई वह नहीं

कर सकें। तुम्हारे भजनमें दृढ़ रहें, सबके साथ पवित्र प्रेम करें।
हे प्रेमाकर! हम सबको अपना ही आत्मा जानें, हमारा आचरण

१५ सबकी भलाईके लिये हो। हे अनन्त शक्ति परमात्मन्! आपकी शक्तियां अपरिमित बेअन्दाज़ हैं, तुम्हारी दातसे कोई बढ़ नहीं सकता है। तुम्हारी दक्षिणा ज्योतिकी तरह सबके ऊपर जगमगा रही है। तुम्हारीशक्तियों सच्चे उदार वचनों और मेहरबानियोंका कोई नियन्ता नहीं है। कोई नहीं कह सकता कि उसने मुझे नहीं दिया है। तुम्हारे द्वारसे कोई निराश नहीं गया है। सबने अभीष्ट फल प्राप्तकर जीवनका फल पाया है। हे राम कृष्ण आदि अनन्त नामों और रूपोंके धारण करनेवाले, हमारे सच्चे प्रभु, अन्तमें हमारी यही प्रार्थना है, कि हम तेरे सच्चे भक्त बनें, तेरी ही भक्तिका प्रचार करें। हम सबके द्वारा तुम्हारी

इच्छापूर्ण हो, सर्वत्र तुम्हारा ही राज्य हो । हे अनन्त अपार ज्ञानानन्द स्वरूप! आपको हमारा अनन्त धन्यवाद हो और आपका हमको आशीर्वाद हो । अतएव साञ्जलीबद्ध आपको भूयोपि नमस्कारोंपर नमस्कार है ।

॥ ओ३म् शंकरोतु शंकरः ॥

॥ ओ३म् ॥

॥ ओ३म् ॥

हरिः ओ३म् तत्सत् परब्रह्म परमात्मने नमः

* सत्य शब्द संग्रह *

श्लोकः—

विघ्नेशं विघ्नहर्तारं, गणराजं गजाननम् ।

शारदांवरदांनौमि, बुद्धिः जाड्यापनुत्तये ॥

दोहा—सदा भवानी दाहिनी, सन्मुख रहत गणेश।
पांचदेव रक्षा करें ब्रह्मा विष्णु महेश ॥ १ ॥
नमो नमो गोविन्द गुरु, बिनवौं अभिजन सोय।
पहले भये प्रणाम् तिन, नमो जो आगे होय ॥ २ ॥
नमो नमो श्री रामजू सत् चित आनन्दरूप।
जेहि जानत जग स्वप्नवत, नाशत भ्रम तम कूप ॥३॥

शब्द नं० १

दोहा—ओ३म् निरंजनं, दुखभञ्जनं, ररंकार ओंकार।
सत्य पुरुष सोऽहं तुही अलखं सर्वाधार ॥

ओ३म् निरजन, ररंकार, प्रभु, सोऽह सत्य नाम करतार।

सत्य पुरुष सोऽहं तुही अलख सर्वाधार ॥

१६ ओ३म् निरंजन, ररंकार, प्रभु, सोऽहं सत्य नाम करतार।
अच्युत गुरु गोविन्द दातार परमानन्द, रूप निरधार ॥ टेक ॥
एक अखंड ज्ञान भंडार तुमरी ज्योति का उजियार।
मैं में मैं पन सर्वाधार, नेति नेति कर वेद उचार ॥ ओं० १ ॥
राम, आत्मा अपरम्पार, शङ्कर ब्रह्म सर्वका सार।
ओत प्रोत सबमें निरंकार, जीवन प्राण आप ओंकार ॥ ओं०२ ॥
हरिनारायण अवतार, देव देव मैं करूं हूं पुकार।
कृष्णानन्ताचल हे गौड हुं फट अल्ला सर्व पसार ॥ ओं०३ ॥
बिनवौं तुमको बारम्बार, प्रीतम प्यार करो उद्धार।
तब्रन गणपति नैन मंझार, होवेऽअनन्त तुम्हे नमस्कार ॥ओं०४॥

शब्द नं० २

दोहा—राम नाम के लेत ही, होत पाप को नाश।
ज्यों चिनगारी आगकी, पड़े पुरानी घास॥
तुलसी अपने रामको; रीझ भजो चाहे खीज।
उलटा सूधा जामिये पड़े खेतमें बीज॥
पुरुष प्रकृति ईश मिल, अकार उकार मकार।
सर्व वेदका मूल है, एक शब्द ओंकार॥

हमारे प्रभु एक तुम्ही ओंकार!
माता पिता गुरु बन्धु सहोदर धन विद्या परिवार॥ टेक॥

 मन बल बुद्धि प्राण तुमही हो नयननमें उजियार।

हमारे प्रभु एक तुम्हीं आकार !

माता पिता गुरु बन्धु सहोदर धन विद्या परिवार ॥ टेक ॥

मन बल बुद्धि प्राण तुमही हो नयननमें उजियार ।

हरि होकर हरे रंगमें दीसो पत्र पुष्प फल डार ॥ ह०१ ॥

धरणी आकाश शशि और तारे बिजली में चमकार ।

ऊपर नीचे पर्वत सागर सब तुम अपरम्पार ॥ ह०२ ॥

तुमही सूरजमें हो गरजो बरपो अमृत धार ।

एक धुनि हो तुमसे सबकी तुमरा वार न पार ॥ ह०३ ॥

सुन्दर शक्ति विकाश शुद्धता हमको दे दातार ।

काम क्रोध मद लोभ निवारो परमानन्द दो प्यार ॥ ह०४ ॥

शब्द नं० ३

दोहा—अच्युत अगम अपार तुम तद्वत ब्रह्म अनन्त ।
परमहंस अज ईश शिव सबके आद्यरुअन्त ॥

मेरा गुरु स्वामियां हो जी । भजोरे मन शुद्ध सच्चिदानन्द । टेक
सकल ब्रह्माण्ड पुकारें जिनको अनन्त अपार अखण्ड ॥ भजो०१॥
पुष्पकुमार गगनमें तारे बरणत सूरज चन्द ॥ भजो०२ ॥
सभी वस्तुका सुन्दरतायें जितलावें गोविन्द ॥ भजो०३ ॥
ओंकार अज ज्योति स्वरूपा पूरण परमा नन्द ॥ भजो०४ ॥

ॐ मामेव प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते । ॥ इति भगवद्वचनम् ॥

शब्द नं० ४

२३

शब्द नं० ४

दोहा—अवगुण किये तो बहु किये करत न मानी लाज ।
पतित उधारण नाम सुन, बिसर गये सब काज ॥
हो प्रभुजी थारो अनमिट माया हो जी
हमारे प्रभु अवगुण चित्त ना धरो ।
समदर्शी है नाम तिहारो चाहो तो पार करो ॥ टेक ॥
इक नदिया इक नार कहावत मैलो नीर भरो ।
जब मिल गयो तब रूप एक भयो गंगा नाम परो ॥ह०१॥
इक लोहा पूजामें राखो एक घर बधिक परो ।
ऊँच नीच पारस नहीं जाने कंचन करत खरो ॥ह०२॥

अबकी बेर मोय नाथ उबारो नहीं प्रण जात टरो।
यह माया भ्रमजाल निवारो सूरदास सगरो ॥ हमारे० ३ ॥

भजन नं० ५

दोहा भाव पात्रमें अर्पकर, सुन्दर जीवन फूल।
ईश्वर के अर्पण करो, यही ज्ञान का मूल ॥

दीनानाथ दयानिधि स्वामी, कौन भांति मैं तुम्हें रिझाऊं।
श्रीगङ्गा चरणों से निकसी, शुचो नीर कहांसे प्रभु लाऊं ॥
कामधेनु कल्पवृक्ष तुम्हारे, कौन सो पदारथ भोग लगाऊं।
चार वेद तुम मुखसे भाखे, और कहा प्रभु पाठ सुनाऊं ॥

अनहद बाजे बजत तुम्हारे, ताल मृदङ्ग क्या शंख बजाऊं।
कोटि भान थारे नखकी शोभा, दीपक ले प्रभु कहा दिखाऊं ॥

चार वेद तुम मुखसे भाखे, और कहा प्रभु पाठ सुनाऊं ॥

२५ अनहद बाजे बजत तुम्हारे, ताल मृदङ्ग क्या शंख बजाऊं ।
कोटि भानु थारे नखकी शोभा, दीपक ले प्रभु कहा दिखाऊं ॥
लक्ष्मी थारो चरणन की चेरो, कौन द्रव्य प्रभु भेंट चढ़ाऊं ।
तुम तिरलोको के कर्ता हर्ता, तुम्हें छोड़ प्रभु कौन पै जाऊं ॥
सूर श्याम प्रभु विपत विडारण, मनवांछित फल प्रभु तुमहीसे पाऊं ॥

शब्द नं० ६

दोहा—गुरु को कीजे दण्डवत, कोटि कोटि परणाम ।
कीट न जाने भृङ्ग को, गुरु कर ले आप समान ॥
मेरे हो मनमाना है गुरु नज़र निहाल दयाल ॥ टेक ॥
अधर अकाश अधर बाको बङ्गला घट २ आप समाना है ।

२६ सब से परे दूर नहीं नेड़े अद्भुत रूप लखाना है।
भवसागर से उतरण कारण गुरु शब्द जलखाना है॥
षट् दर्शनमें पड़ो जी खटपटी चढ़ा सोई जिन जाना है।
घीसा सन्त शरण सतगुरु की जिन डारा मानगुमाना है॥ १॥

शब्द नं० ७

दोहे—मनके हारे हार है, मन के जीते जीत।
कहँ कबीर हरि पाइये, मनही के परतीत॥
यह मन साधू ले मिलो, नहीं तो लेगा उथान।
मन मुनसिफ़ से पूछ ले नीको हो तो मान॥

२७ मन परदेशी ही ये नहीं अपना देश॥ टेक॥

मन मुनसिफ़ से पूछ ले नीको हो तो मान ॥

२७ मन परदेशी हो ये नहीं अपना देश ॥ टेक ॥
सत् का कहना सत् में रहना आनन्दरूप किसी का भय ना ।
जो कोई कहै सभी की सहना ये ही रटन हमेश ॥ मन० १ ॥
गुरु का बचन सत्य कर मानो जगत् जाल झूंठा कर जानो ।
तत्व मसि का रूप पिछानो कट जायँ करम कलेश ॥मन० २॥
जो दीखे सो रूप हमारा कोई नहीं है हमसे न्यारा ।
मित्र और शत्रु कोई न हमारा मिट गये राग और द्वेष ॥मन०३॥
शाह गुरु शुकदेव विराजे चरणदास चरणों में साजे ।
गुरु के बचन कभी नहीं त्यागे यही सत्य उपदेश ॥ मन० ४ ॥

शब्द नं० ८

दोहा— जहां शोक व्यापे नहीं, चल हँसा उस देश।
कहैं कबीर गुरु गम गहो छोड़ सकल भ्रम भेष॥

हे जहां का बसा फेर ना मरेरे। हंसा चाल बसो वा देश॥टेक॥

जहां अगम निगम दोउ धाम वास तेरा परे से परे।
जहां वेदों की गमनाय, ज्ञान और ध्यान भी उरे॥ १॥
जहां बिन धरणी को बाट चरणों ते बिना गमन करे।
जहां बिन श्रवण सुन ले नयनोंके बिन दरश करे॥ २॥
तहां बिन देही एक देव प्राणोंके बिना श्वांस भरे।

जहां जगमग जगमग होय उजारो दिन रात रहे॥ ३॥

तहां बिन देही एक देव प्राणोंके बिना श्वांस भरे।

२६ जहां जगमग जगमग होय उजारो दिन रात रहे ॥ ३ ॥
वहां प्रेम नगरिया के घाट अधर दरियाय बहे।
जहां संत करे असनान दूजा तो कोई न्हाय न सके ॥ ४ ॥
जाके न्हाये से सुख होय तपत तेरी तन की मिटे।
तेरे जन्म मरण मिट जायं चौरासी का फन्द कटे ॥ ५ ॥
यों कहते नाथ गुलाब अमरापुर थारा वास करे।
गुण गावें भानानाथ आनन्द में सदा लगा ही रहे ॥ ६ ॥

शब्द नं० ६

दोहा—अलख इलाही एक है, नाम धराये दोय।
कहैं कबीर दो नाम सुन, भरम पड़ो मत कोय ॥

३०

अलख संग मिलियोरे, तुम चलो दिवाने देश ॥ टेक ॥
सन्त सदा उपदेश बतावें, घट अन्दर दीदार लखावें।
तन मन अर्पण करियोरे ॥ १ ॥
शब्द विहंगम बाजे तूरा, कोटि भानु जहां भभके नूरा।
बंक नाल सुध करियोरे ॥ २ ॥
पहले पहर सुघर नर जागे, चार चौंक अनहदसे आगे।
अब चल कबहु न चलियोरे ॥ ३ ॥
सुषमन देश विहंगम शीरीं, माया गस्त फिरे चहुं फेरी।
भरम भूल मत रहियोरे ॥ ४ ॥
इस पद का कोई भेद निहारे, कहैं कबीर रहदास विचारे।
नाम को व्यवहारी कोई मिलियोरे ॥ ५ ॥

३१

शब्द नं० १०

शब्द नं० १०

दोहा—हम वासो उस देश के, जहां जात वर्ण कुल नांह ।
शब्द मिलावा हो रहा, देह मिलावा नांह ॥
हें बहुर नहीं आऊंगा जाऊं हज़ारे देश ॥ टेक ॥

गुणकी गठड़ी खोल दिखाऊं, पांच तीन की रचना लाऊं ।
लग रहा सोधा तार गगन चढ़जाऊंगा ॥ १ ॥
अपने गुण पांचों दे दीने, अपने अपने उन ले लीने ।
हो तुर्या असवार परम सुख पाऊंगा ॥ २ ॥
उलटी पृथ्वी नीर मिलाऊं, ओले नीर तेज में लाऊं ।
तेज पवन में मेल पवन नभ लाऊँगा ॥ ३ ॥

३२ टूट गई आस वास कित करिये, अपना न कोई कहो कहां रहिये।
आठ पहर संग्राम में कैसे सुख पाऊँगा ॥ ४ ॥
छुठ गया भोग स्वाद गया जीका जब लग रहा तब लग रहा फ़ीका।
देखत आवे छींक तुरत उठ जाऊँगा ॥ ५ ॥
शब्द विहँगम वास बसाऊँ, जो कोई सुने उसका जन्म मिटाऊँ
अजब रङ्गीला ताक उसीमें लौ लाऊँगा ॥ ६ ॥
सन्ता दीनी मौज अजब घर छाऊँ, सुख सागर में डेरा लाऊँ।
गुण गावें भानीनाथ अधर घर छाऊँगा ॥ ७ ॥

शब्द नं० ११

दोहा—गुरु बिन माला फेरते, गुरु बिन देते दान।
गुरु बिन दान हराम है, जाय पूछो वेद पुरान ॥

३३ मेरे सारे दुख बिसर गये सतगुरु की मैंने शरण लई ॥ टेक ॥

दोहा—गुरु बिन माला फेरते, गुरु बिन देते दान ।
गुरु बिन दान हराम है, जाय पूछो वेद पुरान ॥

३३

मेरे सारे दुख बिसर गये सतगुरु की मैंने शरण लई ॥ टेक ॥
और सखी सब दूबली तू बिरहिन क्यों लाल ।
अविनाशी की सेज पर मौजां हुई है निहाल ॥ १ ॥
अविनाशी की सेज का कह कितना विस्तार ।
कहन सुनन की गम नहीं पोढ़त बेपरवाह ॥ २ ॥
सतवन्ती पीहर बसे अन्तर पिवका ध्यान ।
कहतां तो लाजा रहै ऐसा है आतम ज्ञान ॥ ३ ॥
हँसी नहीं मुसका गई रहे टकटके नैन ।
कहै कबीरा लख गये सखी सखी के सैन ॥ ४ ॥

शब्द नं० १२

मेरा मन बानियारे अपनी बान कभी ना छोड़े ॥ टेक ॥
हेर फेर के दोनों पलड़े अन्दर कानी डांडी ।
मन में झूठ कपट हिरदे में हाठ चौंसले मांडी ॥ १ ॥
पूरे बाट परे सरकावे कमती बाट टटोले ।
पासंग माहीं डांडी मारे बेगा बेगा बोले ॥ २ ॥
घर तेरे में कुबध किराडी छिन २ में चित्त चोरे ।
कुनबा तेरा बड़ा हरामी अमृत में विष घोले ॥ ३ ॥
जल में तूही थल में तूही घट् घट् में हर बोले ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो भरम धँधा जग डोले ॥ ४ ॥

कहैं कबीर सुनो भाई साधो भरम धंधा जग डाले ॥ ४॥

शब्द नं० १३

दोहा— मन के मते न चालिये, मन के मते अनेक ।
मन पर जो असवार हैं, ते साधु कोई एक ॥

जिन्होंने मन मार लिया मैं तो उन सन्तों का हूं दास ॥टेक॥
आपा मार जगत् में बैठे नहीं किसी से काम ।
उनमें तो कुछ अन्तर नाहीं सन्त कहो चाहे राम ॥ १ ॥
मन मारा तन बस किया सभी भरम भये दूर ।
बाहर तो कुछ सूझे नाहीं अन्दर झलके नूर ॥ २ ॥
प्याला पी लिया नाम का जो छोड़ा जगत् का मोह ।
हमको सतगुरु ऐसे मिल गये सहज मुक्त गई होय ॥ ३ ॥

नरसीजी के सतगुरु स्वामी दिया अमीरस प्याय।
एक बूंद सागरमें मिल गई कहा करे यमराय ॥ ४ ॥

शब्द नं० १४

दोहा—शब्द ही मारे मर गये, शब्द ही तज गये राज।
जिन ये शब्द पिछानियां, सरे उन्हीं के काज ॥
चोट सहले शेल की, लागत लेत उश्वांस।
चोट सहारे शब्द की, तास गुरु मैं दास ॥
घायल ना जीवे जाके लगे शब्द के सेल ॥ टेक ॥
लागी लागी सभी कहें रे लागी नाहीं एक।
लागी जब ही जानियेरे घाव न आवे मेल ॥ १ ॥

लागी उनको जानिये रे राज तजे अल बेल।

लागी जब ही जानियरे घाव न आवे मेल ॥ १ ॥

लागी उनको जानिये रे राज तजे अल बेल ।
अन्दर दीवा बस रहा रे घला प्रेम का तेल ॥ २ ॥
पढ़ना लिखना है नहीं रे सत्सङ्गत् का खेल ।
चार वेद घट में बसे हैं सांचे गुरुसे मेल ॥ ३ ॥
सतसँगसार अनेक हैं रे काटें यम की बेल ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो झूठे जगत् के खेल ॥ ४ ॥

शब्द नं० १५

दोहा—राम नाम मणि दीप धर; जीव देहरी द्वार ।
तुलसी बाहर भीतरो, जो चाहे उजियार ॥

हरि रस ऐसा रे जाके पिये से अमर हो जाय ॥ टेक ॥
आगे आगे दौ जले पीछे हरियल होय ।
वलिहारी वा वृक्ष की जड़ काटे फल होय ॥ १ ॥
रामरस महँगा मोल का पीवे विरला कोय ।
हरि रस को तो जो जन पीवे धड़पे शीश ना होय ॥२॥
भक्ति करो तो कुल नहीं कुल बिन भक्ति न होय ।
दो घोड़ों के ऊपर हमने चढ़ा न देखा कोय ॥ ३ ॥
भक्ति करो और कुल रहो अड़े रहो दरवार ।
दो घोड़ों की कौन चलावे चारों पे हो असवार ॥ ४ ॥
राम रस पीया नाम देव पीपा और रहदास ।
दास कबीरा ने ऐसा पीया फिर पीवन की आश ॥ ५ ॥

दास कबीरा ने ऐसा पीया फिर पीवन की आश ॥ ५ ॥

शब्द नं० १६

दोहा—जो सिर मांडे हरि मिले, तो पुनि लीजिये दौड़ ।
नारायण ऐसी न होय, गाहक आवे और ॥

बनजारिन नयन उघार (उठ विरहिन सुरत सँभार)
टांडा तेरा लद जायगा ॥ टेक ॥

टांडा तेरा लद चला है तू विरहिन रही सोय ।
जब जागी तब एकली है नयन गवांवे रोय ॥ १ ॥

चन्दन की चोकी बनी है बीच में जड़ दिये लाल ।
हीरां की घुण्डी लगी है पच पच मरे सुनार ॥ २ ॥

लाखों सिर तू दे चुकी है यमराजा की भेंट ।
एक शीश तैंने ना दिया है श्रीनारायण हेत ॥ ३ ॥

सिर मांटी का तूंबरा हे सबी करके जान।
सिरके सांठे हरि मिलें तो भी सस्ता जान.॥ ४ ॥
कहैं कबीर सुनो केसवा हे धारी गत अगम अपार।
जिन लादा हरि नाम पर हे सन्त उतारें पार ॥ ५ ॥

शब्द नं० १७

दोहा—बालक रूपी साइयां, खेले सब घट् मांह।
जो चाहे सो करत है, भय काहू का नांह ॥
आप ही धारमधारो हो स्वामी आप ही खेल खिलारी हो ॥टेक॥
तम्बू से असमान बनाये ज़मी ग़लीचा डारो है।
चांद सूरज दो मिसल बनाये तारागण फुलवारी है ॥

चांद सूरज दो मिसल बनाये तारागण फुलवारी है ॥

४१ सुरत निरत की चौसर माड़ी तो पासा जगसारी है।
जिसको नरद जीत घर आवे सो नर सुघड़ खिलारी है ॥२॥
सतको चीन्ह विहंगम चोरा जिसको शून्य अटारी है।
जापर सतगुरु राजी होवें उसका जगत् भिखारी है ॥ ३ ॥
अमरलोक को किया पयानर ज्ञान घोड़े असवारी है।
कहत कबीर सुनो भाई साधो अबको जीत हमारी है ॥ ४ ॥

शब्द नं० १८

दोहा—धूमधाम में दिन गया, सोचत हो गई सांझ।
एक घड़ी हरि ना भजा, जन जतनी भई बांझ ॥

भजन बिन बावरे तैंने हीरासा जन्म गँवाया ॥ टेक ॥
कभी न आया सन्ते शरणा ना तैं हर गुण गाया ।
वह वह मरा बैल की न्याईं सोय रहा उठ खाया ॥ १ ॥
ये संसार हाट बनिये की सब जग सौदा आया ।
चातुर माल चौगुणां कीना मूरख मूल ठगाया ॥ २ ॥
ये संसार फूल संभल का शोभा देख लुभावा ।
मारी चौंच रुई निकस्याई मूड़ी धुन पछताया ॥ ३ ॥
ये संसार माया का लोभी ममता महल चिनाया ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो हाथ कछू ना आया ॥ ४ ॥

शब्द नं० १९

दोहा—ज्यों तिल माहीं तेल है, चकमक मांहो आग।
तेरा साईं तोय में, जाग सके तो जाग॥

मन्दर में कांई ढूंढ़ती फिरे कुंजगली में भगवान्
(घट ही में दीनानाथ)॥ टेक॥

मूरत तो मन्दरमें मेली मुखसे नाहीं बोले।
करनी पार उतरनी बन्दे वृथा जन्म क्यों खोले॥ १॥

गऊजो मुखसे गङ्गा निकली पांचो कपड़े धोले।
बिन साबुन तेरा मैल कटेगा हर भज हलुवा होले॥ २॥

तनकर कूंडी मनकर साबुन याही में शील समोले ।
सुरत ज्ञान का करे ने मोगरा दिलका दागल धोले ॥ ३ ॥
शील सत्य की नवका चढ़के हर के दर्शन जोले ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो पर्वत राई के ओहले ॥ ४ ॥

शब्द नं० २०

दोहा—जैसी लकड़ी ढाक की, ऐसा यह तन देख ।
यामें केशू छुप रहा, या में पुरुष अलेख ॥

बंगला भला बना दरवेश जामें नारायण परवेश ॥ टेक ॥
पांच तत्वकी ईंट बनाई तीन गुणोंकी गारा ।
छत्तीसों की छात बना कर चिन गया चिननै हारा ॥बंग०१॥

इस बंगले के दश दरवाजे बीच पवन का थंबा ।

छत्तीसों की छात बना कर चिन गया चिनन हारा ॥बंग०१॥

इस बंगले के दश दरवाजे बीच पवन का थंबा ।
आवत जावत कोऊ न जाने देखो बड़ा अचम्भा ॥ बंग० २॥
इस बंगले में चौपडमांड़ी खेलें पांच पचीस ।
कोई तो बाजी हार चला है कोई चला जुग जीत ॥ बंग०३॥
इस बंगले में पातर नाचे मनुवा तान लगावे ।
सुरत निरत के पहर घूंघरू राग छत्तीसों गावे ॥ बंग० ४॥
कहें मछन्दर सुन बाले गोरख जिन यह बङ्गला गाया ।
इस बङ्गलेका गाने वाला बहुर जन्म नहीं आया ॥ बङ्ग० ५॥

शब्द नं० २१

दोहा—अङ्गन बेल आकाश फल, अनब्याई का दूध ।
ससासिंह के धनुष को खींचे बांझ का पूत ॥

लाडो मेंडुकी री तूतो पानो में को रानी ॥ टेक ॥
कउवा तेरा भैया भतीजा चील लगे दौरानी ।
बगुला तेरा छोटा देवर वाय देख मुसकानी ॥ १ ॥
* अन्धे ने मणिके को बींधा बिन अँगुली सुई चलानो ।
बिन ग्रीवा के माला पहरी बिन जिह्वा के वाणी ॥ २ ॥
चार बिरैयां मङ्गल गावें टौंटा ताल बजावे ।
सूतन पहर गवैया नाचे ऊंट बिसन पद गावे ॥ ३ ॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो ये पद है निर्वाणी ।
जो इस पद की निन्दा करे है उसको नर्क निशानी ॥ ४ ॥

---

* अन्धो मणिमाविध्यत्तम नङ्गुलि रावयत् ।
अग्रीवस्त प्रत्य मुञ्चत्तम जिह्वोभ्य पूजयत् ॥

शब्द नं० २२

अग्रावस्त प्रत्य मु चत्तम जिह्वाभ्य पूजयत् ॥

शब्द नं० २२

४७

दोहा—कबीर सोय के क्या करे, बैठा रहे उठ जाग।
जा संग से तू बीछड़ा, वाही के संग लाग ॥
मेरी सुरत सुहागन जागरी ॥ टेक ॥
क्या तूं सोवे मोह नींद में उठके भजन बिच लागरी ॥ १ ॥
अनहद शब्द सुनो चित दे के उठत मधुर धुन रागरी ॥ २ ॥
चरण शीशधर विनती करियो पावे अचल सुहागरी ॥ ३ ॥
कहत कबीर सुनो म्हारी सुरता जगत् पीठ दे भागरी ॥ ४ ॥

शब्द नं० २३

सुरत मेरो राम पलक मेरो राम से लगो समझ सुहागन।
सुरता नार तीरथ में माया जाल में फँसी ॥ टेक ॥

लगनी लहँगा पहर सुहागन बीती जाय बहार ।
धन जोबन है पावहना री आये न दूजो बार ॥ १ ॥
राम नाम का चुड़ला पहरो निर्गुण सुरमा सार ।
नखवेसर हरि नाम कोरी उतर चलोने परले पार ॥ २ ॥
ऐसे बरको कहा वरूं जो जन्म तड़ा मर जाय ।
वर पाऊं श्रीसांवरोजो चुड़ला अमर होजाय ॥ ३ ॥
मैं जान्यो हरि मैं ठग्यो जी हरि ठग ले गयो मोय ।
लख चौरासी मोरचे जो पल मे है डारे तोर ॥ ४ ॥
सुरत चली जहां मैं चली निरंकार भनकार ।
अविनाशी की पौर पर मीरां करे पुकार ॥ ५ ॥

शब्द नं० २४

अविनाशी का पीर पर मीरां करे पुकार ॥ ५ ॥

४६

शब्द नं० २४

दोहा—गगन गरजे वर्षे अमी, बादल गहर गम्भीर।
चहुं दिश दमके दामिनी, भीजें दास कबीर ॥

बादला झुक आया भीजे म्हारी कायारो चीर ॥ टेक ॥

प्रेम घटा ओलर आईरे गगनसे तनमन भीज गया हरि रङ्गसे।
बरषे निर्मल नीर इन्दु ज्यों लहराया ॥ बादला० १ ॥

जहां वर्षे जहां बिजली चमके, घन गरजे और दामिनी दमके।
वर्षे अमृत धार इन्द्र ज्यों झड़ लाया ॥ बादला० २ ॥

बस्ती बसो चाहे बन उठ जावो, तीरथ जावो चाहे मल २ न्हावो।
जिनका तन मन होगया फ़कीर, शब्दमें चितलाया ॥ बादला०३॥

नाथ गुलाब दिया गुरु हेला भानीनाथ सुनो निज चेला ।
उलट् पवन को डाट गगन थारो घर छाया ॥ बादला० ४ ॥

शब्द नं० २५

ऐसो२ हाल लखायो म्हारे सतगुरु देख अचंभा आया रहोजी ।टेक।
बिना मूल एक बिरछा देखा, बिन पत्तर बाको छाया रहोजी ।
बिना देव एक शक्ति देखी अलख पुरुष थारी माया रहोजी ।
धरणी नहीं जहां आसन मांड्यो बिन धुनि ध्यान लगाया रहोजी२॥
भेद अभेद कहा नहीं जावे, निर्मल मण्डप छाया रहोजी ।
जित देखूं तित आपाही दीखे दूजा नज़र नहीं आया रहोजी ॥३॥

पांच पचीसों करें रखवाली त्रिगुण रङ्ग लगाया रहोजी।

पांच पचीसों करें रखवाली त्रिगुण रज्जु लगाया रहोजी।
निर्गुण सरगुण दोनों ठाड़े, बीच में आप समाया रहोजी ॥४॥
उलटा वेद मरम कोई जाने, काल जीत घर आया रहोजी ॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो प्रेम मगन होके गाया रहोजी ॥५॥

शब्द नं० २६

दोहा – काया काठी कालघुन, जन्म २ घुन खाय।
काया माहीं काल है, काहू भरम न पाय ॥

चरखा चलता नहीं रे मेरा चरखा हुआ पुराना ॥ टेक ॥
पग खूंटा दोउ हिलने लागे, बिच मण्डला ढ़लकाना।
सभी पखरियां पड़ गईं ढीली चलता नहिं मन माना ॥ १॥

नया चरखला रङ्गा चङ्गा सब का चित्त चुरावे।
जब चरखे का रङ्ग उतर गया देखा हू ना भावे ॥ २ ॥

रसना तकली ऊबल खागइ कहो कैसे कर छूटे।
शब्द तार सीधा नहीं निकसे घड़ी घड़ी पै टूटे ॥ ३ ॥

मोटा महीन कातलो कुड़ियां कर अपना सुलझेड़ा।
कहैं कबीर सुनो भाई चेतो क्यों न सवेरा ॥ ४ ॥

शब्द नं० २७

मरना तुझे जरूर गुरु कोई धारो रे ॥ धारो ॥
बिरले जीव बचन गुरु माना उनको चढ़ा सरूर ॥ १ ॥

शांति सरोवर मज्जन कीना छोड़ा सभी गरूर ॥ २ ॥

शांति सरोवर मज्जन कीना छोड़ा सभी गरूर ॥ २ ॥
अन्तर दृष्टि करी घट भीतर निरखा झिलमिल नूर ॥ ३ ॥
पद्मदास फिर सत्यलोक में निरखा कुल हुजूर ॥ ४ ॥

शब्द नं० २८

दोहा—गुरु समान दाता नहीं, याचक शिष्य समान।
तीन लोक को सम्पदा, सो गुरु दीनी दान ॥
हमारे गुरु ने दीनी है ज्ञान जड़ी ॥ टेक ॥
यह तो जड़ी मोय प्यारी लागे, अमृत रस को भरी ॥ १ ॥
काया नगर में अधर एक बङ्गला वा में गुप्त धरी ॥ २ ॥

पांच नाग पच्चीस नागिनी सूंघत तुरत मरी ॥ ३ ॥
इस काली ने सब जग खाया सतगुरु देख डरी ॥ ४ ॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो ले परिवार तरी ॥ ५ ॥

शब्द नं० २९

दोहा—मैं अपराधी जन्म का, नख शिख भरा विकार ।
तूं दाता दुख भञ्जना मेरी करो संभार ॥
लज्जा मोरी राखो ने श्याम हरी ॥ टेक ॥
कीनी कठिन दुशासन मोय से गह केशों पकड़ी ॥ १ ॥
आगे सभा दुष्ट दुर्योधन चाहत नगन करी ॥ २ ॥

पांचो पाण्डु सभी बलहारे इनसे कछू ना सरी ॥ ३ ॥

आगे सभी दुष्ट दुर्योधन चाहत नगन करो ॥ २ ॥

पांचो पाण्डु सभी बलहारे इनसे कछू ना सरी ॥ ३ ॥
भीष्म द्रोण विदुर भये विस्मय इन सब मौन धरी ॥ ४ ॥
अब नहीं मात पिता सुत बांधव एक टेक तुमरी ॥ ५ ॥
बसन प्रवाह दिये करुणानिधि सेना हार परी ॥ ६ ॥
सूरदास जब सिंह शरण लई स्यालों की क्या है डरी ॥ ७ ॥

शब्द नं० ३०

दोहा—प्रेम २ सबही कहैं, प्रेम न चीन्हे कोय।
जौन प्रेम साहिब मिले, प्रेम कहावे सोय ॥

जगत् में झूठी देखी प्रीत ॥ टेक ॥

अपने ही सुख से सब जग लागे क्या दारा क्या मीत ॥१॥
मेरो मेरो सभी करत हैं हित से बांधो चीत ॥ २ ॥
अन्त काल संगी नहीं कोई यह अचरज की रीत ॥ ३ ॥
मन मूरख अजहूं नहीं समझत सिख दे हारो नीत ॥ ४ ॥
नानक भव जल पार परे जो गावे प्रभु के गीत ॥ ५ ॥

शब्द नं० ३१

दोहा—मानुष जन्म दुर्लभ है, होवे न बारम्बार।
तरवर से पत्ता झड़े, बहुरि न लागे डार ॥
सब कुछ जीवत को व्यवहार ॥ टेक ॥
मात पिता भाई सुत बान्धव और पुत्र घर को नार ॥ १ ॥

तनते प्राण होत जब न्यारे टेरत प्रेत पुकार ॥ २ ॥

भात पिता भाई सुत बान्धव और पुत्र घर को नार ॥ १ ॥

तनते प्राण होत जब न्यारे टेरत प्रेत पुकार ॥ २ ॥
आधी घड़ी कोऊ नहीं राखत घरते देत निकार ॥ ३ ॥
मृगतृष्णा ज्यों जग रचना है देखो हृदय विचार ॥ ४ ॥
सत्गुरु शरण सन्त की सेवा काम क्रोध मद मार ॥ ५ ॥
कहै नानक भज राम नाम नित्य जाते होय उद्धार ॥ ६ ॥

शब्द नं० ३२

सत्गुरु मिले म्हारे सारे दुख बिसरे, अन्तर के पट खुलगयेरी ।
ज्ञान की आग जगी घट भीतर कोटि कर्म सब जल गयेरी ॥
पांच चोर लूटें थे रात दिन आपते आपही टल गयेरी ।
बिन दीपक म्हारे भया उजाला तिमिर कहां जाने नस गयेरी ॥

त्रिवेणी से म्हारे धार बहत हैं, अष्ट कमल दल खिल गयेरी।
कोटि भानु म्हारे हुआ प्रकाशा और हो रङ्ग बदल गयेरी॥
अठसट् तीरथ हैं घट् भीतर आपसमें रल मिल गयेरी।
शून्य मण्डलमें वर्षा होई अमीके कुण्ड उम्हल गयेरी॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो नूरमें नूर जो मिल गयेरी॥

शब्द नं० ३३

दोहा—श्वांस २ में राम जप, वृथा श्वांस मत खोय।
ना जानूं इस श्वांस का, आवन होय न होय॥
तुम राम सुमर लो, मंज़िल कठिन पड़ो॥ टेक॥

श्वांस तेरा ये विरथा जावे मानुष जन्म फेर नहीं पावे।

श्वांस तेरा ये विरथा जावे मानुष जन्म फेर नहीं पावे।
आंख खोल ज़रा किधर लखावे सिरपर मौत खड़ी ॥ १ ॥
भाई बन्धु तेरा कुटुम्ब कबीला, यम ले चले जब होगयाढोला।
नारी भी तेरी छैल छबीलो, रोवेगी खड़ी रे खड़ी ॥ २ ॥
इन्द्री वेग बड़े बलवानी, वेद पढ़ें पण्डित मुनि ज्ञानी।
हार चले स्वामी ब्रह्मचारी, डुल गये घड़ी रे घड़ी ॥ ३ ॥
चक्षु रूप अनौखा चाहैं नाक कहैं हम इतर लगावें।
कान कहैं मानो गन्धर्व गावें, पांचों को बन्धी रे लड़ी ॥ ४ ॥
रसना रण हत्या चढ़वावे काम जो वेश्यासे पिटवावे।
हरनन्द कहै भाई राम बचावे, भूलो न एक घड़ी ॥ ५ ॥

शब्द नं० ३४

[दोहा—वह दिन गया अकार्थी, संगत भई न सन्त।
प्रेम बिना पशु जीवना, भक्ति बिना भगवन्त॥
अच्छे दिन पीछे गये, हरि से किया न हेत।
अब पछताये होत क्या, चिड़िया खाया खेत॥
हरि के नाम बिना तेरा जन्म अकारथ जाय॥ टेक॥
जो नर बैठे सभा बिरानी भजन भागवत नाहिं सुना।
वे नर होंगे अब अपराधी. माताने एक पशु रे जना॥ १॥
कोटि यज्ञ और कोटि गलीचे दान करो सुमेर घना।
बिना भजन तेरी मुक्ति न होगी, अठसट् तीरथ न्हावे न्हा॥२॥

ध्रू सुमेर सभी डिग जायेंगे शेषनाग धरणी धरणा ।
चांद सूर्य एक छिनमें जायँगे, तूं नर जीवे कितने दिना ॥३॥
सात समन्दर पार उतरले ना कोई होगा अपना ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो यह जोवन जैसे सुपना ॥ ४ ॥

शब्द नं० ३५

चरखा तोहि अजब मिला तूं तो कात सुहागन नार ॥ टेक ॥
कारीगरने घड़ा चरखला चौंसट् बन्द लगाय ।
पूर्व जन्मसे तोहि मिल्यो है काते न मन हर्षाय ॥ १ ॥
शील धर्म व्रत नेम खूटडी सुन्दर ना हिल जाय ।

६२ चितजतनी से बीस पंखड़ी चोकस बन्द लगाय ॥ २ ॥
मन माल है न त्याग बावरी मत की नाव बनाय ।
तप तकला और दया दमड़का चरखा चित्त बनाय ॥ ३ ॥
राम नामकी तार बांध ले सुरता मत गरमाय ।
शम्भुनाथ की नाव झोझरी सतगुरु पार लंघाय ॥ ४ ॥

शब्द नं० ३६

दोहा—सहज ही धुन लग रही, कहैं कबीर घट मांह ।
हृदय हर २ होत हैं, मुखको हाजत नांह ॥
हर हर हर होरही हिये में और वार्ता रे सब झूठी ॥ टेक ॥

६३ प्रेम घटा झार सतगुरु लाये अमृत बूंदां हद मीठी ।

। हर हर हर हरिहां हिये में और बातां रे सब झूठी ॥ टेक ॥

६३ प्रेम घटा म्हार सत्गुरु लाये अमृत बूंदां हद मीठी ।
तिरवेणी के रङ्ग महल में साधां लालां हद लूटी ॥ १ ॥
रुणझुण रुणझुण बाजे बाजै जगमग झलक रहा ज्योती ।
ओंकार के सोऽहंकार में हंसला चुग रहा निज मोती ॥ २ ॥
पांच चोर तेरी काया नगर में इनकी पकरो ने शिर चोटी ।
पांचोंको मार पचीसोंको वशकर जब जानूंगा तेरी बुधचोखी ॥३॥
सत् समरणका सेल बनाले ढाल बनाले धीरज की ।
काम क्रोध मनमार के हटाले प्यारे जब जानूंगा तेरी रजपूती ।४॥
पकी घड़ी की तोल बनाले काण न राखो एक रती ।
शरण मच्छंद्र जति गोरख बोले अलख लखे सोइ खरा जती ॥५॥

शब्द नं० ३७

सो म्हारे साधो राम नाम धन खेती ॥ टेक ॥

मन कर हरिया सुरति बरधिया ज्ञान ध्यान दोउ जोती ।
ओ३म् नाम को बीज जो बोयो उपजी नव निध सेती ॥

ध्रुव बोई प्रहलाद ने बोई उनकी हुई है अगेती ।
काम क्रोधके जो नर वश हैं उनको पड़त पछेती ॥

चोर न चोरे राज न डांडे भेज न लगत टके को ।
इस खेतोमें बहुत नफ़ा है कहियो सन्तन सेती ॥

मोरांके प्रभु गिरधर नागर आन मिलो हित सेती ॥

शब्द नं० ३८

इस खेतोमें बहुत नफ़ा है कहिया सन्तन सेती ॥
मीराके प्रभु गिरधर नागर आन मिलो हित सेती ॥

शब्द नं० ३८

सासरे में ना जाऊंगी मोय गुरु मिले रविदास ॥ टेक ॥
एक बेल के दो तूंमरी एक ही उनकी जात ।
एक तो रुडती डोले गलिन में एक सत्गुरु के हाथ ॥ १ ॥
एक मिट्टी के दो हैं बर्तन एक ही उनकी जात ।
एक में घलते मक्खन मिश्री एक धोबी के घाट ॥ २ ॥
आये गयो को पहनी गांठे बैठ्यो सरे बजार ।
भूखों को तो भोजन देता आख़िर है जात चमार ॥ ३ ॥
कांखमें से रापी काढ़ो चीरा अपना गात ।
चार युगोंकि दीखे जनेऊ आठ गांठ नव तार ॥ ४ ॥

अपने महलसे मीरां उतरी घट् ही में गङ्गा न्हाय ।
पां पूजूं इस रहदास के अमर लोक लिये जाय ॥ ५ ॥

शब्द नं० ३९

सो राणाजी ते ज़हर दियो म्हाने जानी ॥ टेक ॥
भर २ के दिये ज़हर पियाले है गयो अमृत पानी ॥ १ ॥
जबलग सोना कसिये नाहीं होत न बारा बानी ॥ २ ॥
मोय भरोसा श्यामसुन्दर का मेरो घटत न कानी ॥ ३ ॥
मीरां के प्रभु गिरधर नागर चरण कमल लिपटानीं ॥ ४ ॥

शब्द नं० ४०

मीरां के प्रभु गिरधर नागर चरण कमल लिपटानां ॥ ४ ॥

शब्द नं० ४०

पढ़ोरे भैया कृष्ण, गोविन्द मुरार ॥ टेक ॥
कहै प्रहलाद सुनोरे भाई बालक, लीजो जन्म सुधार ॥ १ ॥
को है हिरणाकुश अभिमानी, जो सके तुमको मार ॥ २ ॥
राखनहारो और कोई है, श्याम धरे भुज च्यार ॥ ३ ॥
सूरदास प्रभु शरण तिहारी, तुम सब के घर बार ॥ ४ ॥

शब्द नं० ४१

क्या तन मांजता रे आखिर माटीमें मिल जाना ॥ टेक ॥
माटी ओढ़न माटी पहरन माटी का सिरहाना ।
माटीका कलबूत बनायो जामे भंवर समाना ॥ १ ॥

मात पिताका कहना मानो हरसे ध्यान लगाना ।
सत्य वचन तुम निश दिन बोलो सबको सुख पहुंचाना ॥२॥
इक दिन दुहले बने बराती शिरपर ढुले निशाना ।
इक दिन जाय जङ्गलमें सोवे कर सूधे पग ताना ॥ ३ ॥
पढ़ना लिखना कभी न छोडो जो चाहो कल्याणा ।
सबके स्वामी पालनकर्त्ता उनका हुकुम बजाना ॥ ॥ ४ ॥

शब्द नं० ४२

सखी मधुबन में है बैन बाजे ॥ टेक ॥
रिम झिम बर्षे ज्योति शिव की देख रूप शत काम लाजें ॥ १ ॥

मोर मुकुट पीताम्बर सोहैं सब गोपिन बिच कान नाचे ॥ २ ॥
कोटिन रवि शशि हुआ प्रकाश

रिम झिम बर्षे ज्योति शिव की देख रूप शत काम लाजें ॥ १ ॥

६६ मोर मुकुट पीताम्बर सोहै सब गोपिन बिच कान नाचे ॥ २ ॥
कोटिन रवि शशि हुआ प्रकाशा अनहद धुन सुन ज्ञान जागे ॥३॥
सोऽहं बंशी ज्योति स्वरूपी जग मगाय लख तिमिर भाजे ॥ ४ ॥
परमानन्द हुआ मन मेरा एक ब्रह्म ही सर्व राजे ॥ ५ ॥

शब्द नं० ३२

* अवधो सो योगीगुरु मेरा जो इस पदका करै निवेरा ॥ टेक॥

यथा मुण्डकोपनिषदिः—

* द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते ।
तयो रन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्यन श्नन्यो अभिचाकशीति ॥ १ ॥

तरुवर एक मूल बिन ठाडा बिन फूले फल लागे।
शाखा पत्र कछू नहीं वाके अष्ट कमल दल गाजे ॥ १ ॥

चढ़ तरुवर दो पक्षी बोले एक गुरु एक चेला।
चेला रहा जगत् चुन खाया गुरु निरन्तर खेला ॥ २ ॥

शून्य शिखर पर गाय बियानी धरती क्षीर जमाया।
माखन रहा सो सन्तन खाया छाछ जगत् भरमाया ॥ ३ ॥

पक्षी खोज मीनके मारग कहै कबीर दो भारी।
अपरम्पार पार पुरुषोत्तम मूरति की बलिहारी ॥ ४ ॥

अपरम्पार, पार पुरुषोत्तम मूरति की बलिहारी ॥ ४ ॥

शब्द नं० ४४

दोहा—सुरती रूपी घोड़ियां, चलो गगनमें जायँ।
अमरलोक से प्रेम है, डाटी नांह डटायँ ॥

गगन में घोड़ो जाय चली डाटे से डटती नांयँ ॥ टेक ॥

चीडी चाली सासरे नो मन सुरमासार।
हाथो लीया गोद में ऊँट लपेटे जाय ॥ १ ॥

बच्छा गऊ के पेट में हटरी हाट बिकाय।
सुगरा होय जब समझ परत है निगुरे को गम नाय ॥ २ ॥

दशों दिशा में अनहद बाजे घोर रही नभ छाय ।
* रिम झिम रिम झिम ज्योति झलके आनन्द हिये ना समाय॥३॥
परमानन्द गगन घनघोरे अमृत बरसे आय ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो दिया आवागमन नसाय ॥ ४ ॥

शब्द नं० ४५

दोहा – धीरे धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होय ।
माली सींचे केवड़ा, ऋतु आये फल होय ॥

* भाव – वृत्ति ध्यान द्वारा जब हलकी हो जाती है तो कीड़ीकी तरह सूक्ष्म होकर मन रूपी हथीको गोदमें लेकर अहंकार रूपी ऊंटको लपेटे जाती है ।

रे भूले मन धीरी क्यों ना धरे ॥ टेक ॥

होकर मन रूपी ...को गोदमें लेकर अहंकार रूपी ऊंटको लपेटे जाती हैं ।

७२ रे मूर्ख मन धीरी क्यों ना धरे ॥ टेक ॥
अजगर पड़ी धरण में लोटे वो भी पेट भरे ।
अलल पंख वो भारी योधा दिन भर भूख मरे ॥ १ ॥
कबहू बूंद गगन में बरसे कबहू तलाब भरे ।
कबहु पत्थर तिरते देखे लोढ़े डूब मरे ॥ २ ॥
मंझारी सुत आवा में राखे शिर पे अग्न झरे ।
खम्भफार हिरणाकुश मारे नृसिंह रूप धरे ॥ ३ ॥
नरसी के प्रभु गिरधर नागर आकर भात भरे ।

दोहा—घर में घर दिखलाय दे, सो गुरु चतुर सुजान ।
पांच शब्द धुनकार धुन्ध, बाजैं शब्द निशान ॥

शब्द नं० ४६

सत्गुरु आवो हमारे गेह रे ॥ टेक ॥

सब कोई कहै तुम्हारो मोको नारी मोको अति सन्देह रे ॥ १ ॥
एक मेक होय सेज न सोवैं तब लग कैसा सनेह रे ॥ २ ॥
रात दिवस मोय नींद न आवे नयनन बरसे मेह रे ॥ ३ ॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो हरि चरणनसे नेह रे ॥ ४ ॥

शब्द नं० ४७

साधो अब ना लगेगा थारा दाव रे ॥ टेक ॥

जागत अमुल[illegible] सोवत नाहीं तुम[illegible] मत मैं बड़ा चावरे ॥ १ ॥
अबके लौट [illegible] घर जावो फेर लौट तुम आवो रे ॥ २ ॥

अबके लौट बन्दे घर जावो फेर लौट तुम आवो रे ॥ २ ॥
रिम झिम रिम झिम ज्योति झलके मनमें समझ समाव रे ॥ ३ ॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो आवागमन नसाव रे ॥ ४ ॥

शब्द नं० ४८

दोहा—साहब से सब होत है बन्देसे कुछ नांह।
राई से पर्वत करे पर्वत राई मांह ॥

साधो राम करे सोई होय रे ॥ टेक ॥
परवा पछवा पवन चलत है, असुर रह्यो है सोय रे ॥ १ ॥

तोरो या गढ़ को भीतर आवो, बंधी धरी हैं दोय रे ॥ २ ॥
सब जग अपने धन्धे में लाग्यो, तुम्हें न देखे कोय रे ॥ ३ ॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो लखे निरन्तर जोय रे ॥ ४ ॥

शब्द नं० ४९

पानीमें मीन पियासी मोय सुन २ आवे हांसी ॥ टेक ॥
जल थल सागर पूर रहा है भटकत फिरे उदासी ॥ १ ॥
आतम ज्ञान बिना नर भटके कोई मथुरा कोई काशी ॥ २॥
गङ्गा जाय गोदावरी कीनो भक्ति बिना सब नाशी ॥३॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो सहज मिलै अबिनाशी ॥४॥

शब्द नं० ५०

कहत कबीर सुनो भाई साधो सहज मिले अविनाशी ॥४॥

शब्द नं० ५०

दोहा—बहुत गई थोड़ी रही, नारायण अब चेत ।
काल चिरैया चुग रही, निश दिन आयु खेत ॥

सुमरण कर श्रीराम नाम, दिन नीके बीते जाते हैं ॥ टेक ॥
तज विषय भोग और सभी काम, तेरे सङ्ग न चलसी एक दाम ।
समझो इसको सुबह शाम, जो देते हैं सो पाते हैं ॥ १ ॥
कौन तुम्हारा कुटुम्ब परिवारा, किसके हो यहां कौन तुम्हारा ।
किस के बल हरि नाम बिसारा, सब जीते जी के नाते हैं ॥२॥
लख चौरासी भरम के आया, बड़े भाग्य मानुष तन पाया ।
ता पर भी नहीं करी कमाई, फिर पीछे पछताते हैं ॥ ३ ॥

जो तूं लागे विषय विलासा, मूरख फंसे मौजकी फ़ांसा।
क्या देखे श्वासनकी आशा, गये फेर नहीं आते हैं ॥ ४ ॥

शब्द नं० ५१

दोहा—इस अवसर पर चेता नहीं, पशु ज्यों पाली देह।
राम नाम जाना नहीं, अन्त पड़ो मुख खेह ॥

मत जाइयो रे हंस पियासा, सुखसागर में आयके ॥ टेक ॥
गगन मण्डल में अमी रस भरिया, पीले सांसम सांसा।
धन्ने ने पीया सुदामा ने पीया, और पीया रहदासा ॥
ध्रू ने पीया, प्रह्लाद ने पीया, मिट गई यमकी त्रासा।
गोपीचन्द भर्थरी ने पीया, हुआ शब्द परकाशा ॥

शिवरी ने पीया कमालो ने पीया, मीरांबाई पी गई ख़ासा।
कहैं कबीर प्रेम रस पीओ, थारो पूरण हो जाय आशा॥

शब्द नं० ५२

रङ्गमहल के बीच पुरुष मतवाला है॥ टेक॥
उलटे प्राण गर्भमें डारे,
अलख पुरुष का खेल मरम से न्यारा है।
गगन मण्डलमें अमी रस भरियां;
नुगरा प्यासा जाय हिये अन्धियारा है।
पांचो आत्मा अपनी सारो नांगन का फन उलटा मारो,
मेरु दण्ड को शोध पवन दुधारा है॥

शब्द नं० ५३

मेरी चुनरी के लाग्यो दाग पिया ॥ टेक ॥
धोवत फिरूं दाग नहीं छूटे मन मूरख अभिमान किया ॥ १ ॥
महँगे मोलकी मेरी आई चुनरिया तन मन धन कुर्बान किया ॥२॥
सत्गुरु धोबिया मिले सहज में दाग़ ज़िगरका साफ किया ॥३॥
अब जगमग जगमग करे चुनरिया कोटि भानु प्रकाश किया ॥४॥

शब्द नं० ५४

जुगलिया च.म की जामे बोले रमता राम ॥ टेक ॥
चाम ही का ऊंटड़ा चामका नङ्गारा ।
चाम ऊपर चाम बैठा चाम बजावन हारा ॥ १ ॥

चाम ही की गाबड़ी चाम ही का बच्छा ।

चाम ही की गावड़ी चाम ही का बच्छा ।
चाम नीचे चाम ऊंचे चाम दुहावन हारा ॥ २ ॥
चाम ही की धर्तली चाम का आकाशा ।
चाम ही के नोलख तारे जिनमें है परकाशा ॥ ३ ॥
कहैं रहदास सुनो भाई साधो कौन चाम से न्यारा ।
जो इस चाम से न्यारा कहिये सो ही गुरु हमारा ॥ ४ ॥

शब्द नं० ५५

सखी मेरे जगे पूर्वले भाग आज गुरु दर्श दिखाय दियोरी ॥टेक॥
सब से तोड़ एक सँग जोड़ी हमारी अटल धुनि रही लाग ।
जब सत्गुरु मेरे अँगना में आये हमारे भरम भूत गये भाग ॥

घर अँगना परिवार बगर में हमारो अभय नङ्गारो रह्यो बाज।
प्रेम पिया सँग हिलमिल राची मैंने नेक न मानी लाज ॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो मुझे सुख का दिया सुहाग ॥

शब्द नं० ५६

तुम को मेरी लाज रघुवर ॥ टेक ॥
सदा सदा मैं शरण तुम्हारो तुम हो गरीब नवाज़ ॥१॥
पतित उधारण विरद तिहारो श्रवण सुनो हो अवाज़ ॥२॥
हो तो पतित पुरातन कहियो पार उतारो जहाज़ ॥३॥
अघ खण्डन दुख भञ्जन जन के यही तिहारो काज ॥४॥
तुलसीदास पर किरपा करिये भक्ति दान दो आज ॥५॥

शब्द नं० ५७

शब्द नं० ५७

तुम पलक उघारो दीनानाथ, मैं हाज़िर नाज़िर कबकी खड़ी ।टेक।
साऊ सो तो दुश्मन हो गये लागूं कड़ी कड़ी ।।
तुम बिन मेरा कोई नहीं है, तुम बिन नैया मेरी अटक रही ।।१।।
तन में हूल बदन में लागी सूंकूं खड़ी खड़ी ।
पल २ हो गई वर्ष बराबर मुश्किल होरही मैंने घड़ी रे घड़ी ।।२।।
हार हमेल सभी सुख त्यागे मोतियन तजी लड़ी ।
ज्ञान बाण हिरदे में लाग्यो, प्रेम कटारी हिये रड़क रही ।। ३ ।।
किया करम मेरे सन्मुख आ गया धुरकी क़लम अड़ी ।
बार बार मीरांबाई गावे धन हो साहिब मैंने आजका घड़ी ।।४।।

शब्द नं० ५८

दोहा—ऊंचा तरवर गगन फल, बिरला पक्षी खाय।
उस फल को तो जो भखे, जीवत ही मर जाय ॥ १ ॥
जब लग आश शरीर की, निर्भय भया न जाय।
काया माया मन तजे, चौरे रहे बजाय ॥ २ ॥

हरि भज २ जन्म सुधर जाय कर्म कोट की कटे फांसी ॥ टेक ॥
तीरथ बरत धरम सब मन के क्या मथुरा भाई क्या काशी।
भटक फिरे खाली रह जायगा अन्त समय यमकी हो फांसो ॥१॥
गम दीपक और तेल ग़रीबी श्रुति की बातो अति खासो।
चांदना हुआ मंदर में दरस्यो पूरण साहिब अविनाशी ॥ २ ॥

पूरण ब्रह्म सकल घट्वासी क्या जोगी क्या सन्यासी।
घर और बाहर है दर दर में सांचा साहिब अविनाशी ॥ ३ ॥
साध सन्त मिल सौदा करले भक्ति भाव ना है हांसी।
घीसा सन्त शरण सत्गुरु को अगम महल के हैं बासी ॥ ४ ॥

शब्द नं० ५६

दोहा—कबीरा प्रेम रस जिन पिया, अन्तरगत लौ लाय।
राम रोम में रम रहा, और अमल क्या खाय ॥

कोई पीवो रामरस प्यासा रे ॥ टेक ॥
गगन मंडल में अमृत बरषे पीलो सांसम सांसारे।
ऐसा महंगा अमी बिकत है छै रत्तो बारह मासारे ॥

जो पीवे सो युग युग जीवे कबहु न होत विनाशारे।
इस रस कारण हुए नृप जोगी छोड़े भोग विलासारे।
सहज सिंहासन बैठे रहते भस्म लगाय उदासारे।
गोपीचन्द भर्थरी रसिया और कबीर रहदासारे॥
गुरुदादू प्रसाद को चुन के पाया सुन्दरदासारे।

शब्द नं० ६०

दोहा—मोमें तोमें सर्व में जित देखू तित राम।
राम बिना क्षण एक ही, सरे न एकहु काम॥

घट् घट् में पक्षी है बोलता॥ टेक॥
आप ही डंडो आप तराजू आप हो बैठा है तोलता॥ १॥

आप हो माली आप बगीचा आप हो कलियां है तोड़ता ॥ २ ॥
सबमें सब पन आप विराजे जड़ चेतन में है डोलता ॥ ३ ॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो मन की घुंडी है खोलता ॥ ४ ॥

शब्द नं० ६१

मेरे सैयां डिगर गये मैं ना लड़ी थी ॥ टेक ॥
इस कायाके दश दरवाजे ना जानूं कौनसी खिड़की खुली थी ॥
पांच जिठनियां दश दौरनियां ना जानूं इनमेंसे कौन लड़ी थी ॥
ना मैं बोली ना मैं चाली ओढ़े डुपट्टा सोई पड़ी थी ।
कहैं कमाली कबीर को दई बेटी इस ब्याहीसे क्वारी भली थी ॥

शब्द नं० ६२

छांड़ो लंगर मोरी बेयां गहो ना ॥ टेक ॥
मैं तो नार पराये घरकी मेरे भरोसे गोपाल रहो ना ॥ १ ॥
ज़ो तुम मेरी बैया गहत हो नयना मिलाय मेरे प्राण हरो ना ॥२॥
वृन्दाबनकी कुञ्ज गलिन में रीत छोड़ अनरीत करो ना ॥३॥
मीरांके प्रभु गिरधर नागर चरण कमल चित टारो टरे ना ॥४॥

शब्द नं० ६३

दोहा—ज्यों ही एक ही शिला में, प्रतिमा विविध प्रकार।
कहैं कबीर त्यों ही बसे, ब्रह्म मध्ये संसार॥

अजि एजी साधो एक रूप सब मांही ।
दूजा कर्म धर्म है कृत्रिम ज्यों दर्पण परछाईं ॥ टेक ॥
जलतरङ्ग ज्यों जल से उपजे फिर जल मांहि रहाईं ।
काया छाया पांच तत्व की विनशे कहा बसाईं ॥ १ ॥
वही ब्रह्मा वही विष्णु महादेव सब देवनपति साईं ।
रूपों में सब रूप धरे हैं बिन गुरु दरशे नाहीं ॥ २ ॥
घट में बसे लखे कोई थोरा माया जाल भ्रमाईं ।
जब सतगुरु की कृपा होवे भेद भाव मिट जाई ॥ ३ ॥
सब जीवन सङ्ग वैर छोड़ मत निन्दा करे पराई ।
कहत कबीर जगत् सब मिथ्या ज्यों सुपना रहे नाहीं ॥ ४ ॥

शब्द नं० ६४

दोहा—पावक रूपी राम है, घट् घट् रहा समाय।
चित चकमक लागे नहीं, धुआं हो हो जाय॥

म्हारे प्रेम विरह के बाण लगेंगे काहू हरिजन के ॥ टेक ॥

माया वश हो रहा अज्ञानी जिनके सत्गुरु लगे नहीं कानी।
चुवक चुवक रह जाय हथो जैसेड घनके ॥ म्हारे० १ ॥
धन सम्पत्ति में फिरत भुलाया गुरुका शब्द नहीं चितलाया।
अन्त समय पछताय नर्कमें जब लटके ॥ म्हारे० ॥
विरही की तो विरही जाने बेदरद नहीं पीड पिछाने।
फटा कलेजा जाय बींध गया सब तन के ॥ म्हारे० ३ ॥

जो दीखे सो रूप हमारा अलख लखे सोई लखने हारा।
रूम रूमके बीच एक हुआ हरि चमके ॥ म्हारे० ४ ॥
शुद्ध सच्चिदानन्द अमाया ओंकार अज ध्यान लगाया।
परमानन्द प्रकाश हुआ गया जम नसके ॥ म्हारे० ५ ॥

शब्द नं० ६५

दोहा—सभो खिलौना खांड मध खांड खिलौने मांह।
तैसे सब जग ब्रह्म में, ब्रह्म जगत् के मांह ॥
कर महलोंमें दर्श महल में प्यारा है ॥ टेक ॥
मूल कमल पद चित्र बखानो किङ्ग जाप लाल रङ्ग मानो।
देव गणेश तहां रूपा ठाणो ऋद्धि सिद्धि चँवर डुलारा है ॥ १ ॥

स्वाद चक्र षट् दल विस्तारो ब्रह्मा सावित्री रूप निहारो ।
उलट् नागिनी का सिर मारो तहां शब्द ओ३म्कारा हैं ॥ २ ॥
नाभी अष्ट कमल दल राजा श्वेत सिंहासन विष्णु विराजा ।
हिरङ्ग जाप तासु मुख गाजा लक्ष्मी शिव आधारा है ॥ ३ ॥
द्वादश कमल हृदय के मांहीं जनक गुरु शिव ध्यान लगाहीं ।
सोई शब्द तहां धुनि छाई गण करें जय जयकारा है ॥ ४ ॥
दो दल कमल कण्ठ के माहीं तेहि मध्य (बसे) अविद्या माई ।
हरि हर ब्रह्मा चँवर डुलाई जहां शटं नाम उचारा है ॥ ५ ॥
तापर कंज कमल है भाई इक भौंरा दो रूप दिखाई ।
निज मन करी जहां ठकुराई सो नयनन पिछवारा है ॥ ६ ॥

कमलन भेद क्रिया निरवारा यह रचना सब पिण्ड मझारा।
सत् सङ्गत कर गुरु शिर धारा वहां सत्य नाम उचारा है ॥ ७ ॥

शब्द न० ६६

दोहा—माला जपूं न कर जपूं, मुखसे कहूं न राम।
मन मेरा सुमरण करे, कर पाया बिसराम ॥
लगन बिन जागे ना निर्मोही ॥ टेक ॥
बिना लग्न की प्रीति बावरे ओस नीर ज्यों धोई ॥ १ ॥
हम तो रहते राम भरोसे रज़ा करे सोई होई ॥ २ ॥
बिन कृपा सद्गुरु नहीं पावें लाख जतन करो कोई ॥ ३ ॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो गुरु बिन मुक्ति न होई ॥ ४ ॥

शब्द नं० ६७

हरदम तसवी ने फेर भाई तेरे अन्दर अमोला लाल ॥ टेक ॥
बिन तागे यह तसवी पोई बिना सारका बीज ।
अन्दर सुमरणी एक न फेरी रहा काठ पे रीझ ॥ १ ॥
मरजा जिकर मिटे सब तेरा मरके तेरा जीव ।
लाख दुहाई तेने तेरे सतगुरुकी तेरे में तेरा पीव ॥ २ ॥
एक हजार छे सौ बीचरे चांद सूरजके बीच ।
नौ दरवाजे बंधकर राखे दशमें बसे जगदीश ॥ ३ ॥
पहिले आपा खोजिये फेर मुंडाइये मूंड ।
इधर उधर को क्या ढूंढें हैं इसी ढूंढ में ढूंढ ॥ ४ ॥

मौजी साध बन्देगी वाकी जिन गुरु दियो उपदेश।
कहर स्याहने सैन लखाई दिल अन्दर दरवेश ॥ ५ ॥

शब्द नं० ६८

दोहा--लोहा जैसे काठ संग. चलत फिरत जल माहिं।
बड़े न डूबन देत हैं जाकी पकरे बाहिं ॥

अगम नहीं गुरू बिन सूझ पड़े ॥ टेक ॥

चार वेद पढ़े पुराण अठारा नोपट् खोज मरे ॥ १ ॥
ज्ञानी बना भरम नहीं छूटा झूंठा ही वाद करे ॥ २ ॥
कहैं गुरु शब्द आकाश बांसपर श्रुति गगन चढ़े ॥ ३ ॥
तन विराट जीवतर तुलसी सहज ही भव उतरे ॥ ४ ॥

शब्द नं० ६६

दोहा—बैठ कुसङ्ग चाहत कुशल तुलसी बड़ो अफ़सोस।
महिमा घटी समुद्र की, रावण बसो पड़ोस॥

सङ्गत तो कर ले साध की जासे उपजे गे आतम ज्ञान।टेक।
जल देखे शुचि ऊपजे साधु देखे ज्ञान॥
माया देखे लोभ ऊपजे तिरिया देखे काम॥ १॥

साधु मिलन जब चालिये तज माया अभिमान।
ज्यों २ पग आगे धरे त्यों २ यज्ञ समान॥ २॥
साधु हमारी आत्मा हम सन्तन की देह।
रोम रोम में ऐसा रम रहा ज्यों बादल में मेह॥ ३॥

साधु माई बाप हैं साधु भाई और बन्धु ।
साधु मिलावें राम ते काटें यम के फन्द ॥ ४ ॥
एक घड़ी आधी घड़ी आधी से भी आध ।
तुलसी सङ्गत साध की हरै कोटि अपराध ॥ ५ ।

शब्द नं० ७०

तजो रे मन हरि विमुखन को सङ्ग ॥ टेक ॥
जाके सङ्ग कुमति उपजत है पड़त भजन में भङ्ग ॥ १ ॥
क्या हो काग कपूर चुगाये श्वान न्हुवावत गङ्ग ॥ २ ॥
क्या हो व्याल को दूध पिलाये विष नहीं तजत भुजङ्ग ॥ ३ ॥
चन्दन लेपन गर्धव लाये मर्कट भूषण अङ्ग ॥ ४ ॥

सूरदास यह काली कंबरिया चढ़े न दूजो रङ्ग ॥ ५ ॥

शब्द नं० ७१

दोहेः—तुलसी रसना तो भली जो तूं सुमरे राम।
नातर काट बगाइये मुख में भलो न चाम ॥ ६ ॥

मोहनी मूरत श्याम की, हृदय रही समाय।
लाली महँदी पात ज्यों, देख लखी ना जाय ॥
दलाली लालन की म्हारे सतगुरु दई है बताय ॥ टेक ॥
लाल पड़ा मैदानमें कीच रहा लिपटाय।
निगुरे निगुरे लख गये सुगरे ने लियो उठाय ॥ १ ॥

सबके पल्ले लाल है सब ही साहूकार ।
गांठ खोल परखा नहीं रे इस विध आ गई हार ॥ २ ॥

इधर से अन्धा आवता उधर से अन्धा जाय ।
अन्धे से अन्धा मिला रस्ता कौन बताय ॥ ३ ॥

लाली लाली सभी कहैं लाली लखी न कोय ।
लाली लखी कबीर ने मुक्ति पाई सोय ॥ ४ ॥

शब्द नं० ७२

दोहा—भली भई जो गुरु मिले, नातर होती हान ।
दीपक ज्योति पतङ्ग ज्यों, परता आय निदान ॥

वा घर की सुध कौन बतावे जा घर से जीव आया ओम् ॥टेक॥

ब्रह्मा विष्णु महेश नहीं थे किसने जीव बनाया ओम् ॥ १ ॥

पानी पवन को दही जमाया अग्नि को जामन दीना ओम् ॥२॥

चन्द सूरज दो बने अहीरा मथ के माखन काढ़ा ओम् ॥४॥

कहत कबीर सुनो भाई साधो वो घर गुरु ने लखाया ओम् ॥५॥

शब्द नं० ७३

दोहा—पपीहा प्रण कबहूं न तजे, तजे तो तन बेकाज।

तन छूटे तो कुछ नहीं, प्रण छूटे तो लाज ॥

आज जो मैं हरिहुं न शस्त्र गहाऊं।
तो लाजूं गङ्गा जननी को शांतनु सुत न कहाऊं ॥ टेक ॥
स्यन्दन खण्ड सारथी खंडूं कपीध्वज सहित गिराऊं ॥ १ ॥
पांडव दल सन्मुख ह्वै धाऊं सरिता रुधिर बहाऊं ॥ २ ॥
इतनी न करूं शपथ मोय हरि की क्षत्री गति नहीं पाऊं ॥३॥
सूरदास रणभूमि बिजय बिन जीवित न पीठ दिखाऊं ॥४॥

शब्द नं० ७४

दोहा--भूले थे संसार में, माया के संग आय।
सतगुरु राह बताइयां, फिर फिर मिलेंगे आय ॥

माया हो रङ्ग बादली जामें चन्दा दरशे नांह ॥ टेक ॥

काया में माया बसे ज्यों पत्थर में आग ।

जो तेरी इच्छा हरि मिलनकी चकमक होकर लाग ॥माया०१॥

चोर चुराई तूंबरी जल में डूबे नांह ।

वो डोबे वह ऊभरे करनी छानी नांह ॥ माया० २ ॥

काम क्रोध के बने बदलवा गर्ज रहा अहङ्कार ।

आशा तृष्णा बिबें बीजली भीज रहा संसार ॥ ३ ॥

ज्ञान पवन जब से चलो सब बादल दिये उड़ाय ।

कहत कबीर सुनो भाई साधो चन्दा हो दर्शे आय ॥ ४ ॥

कहत कबीर सुनो भाई साधो चन्दा ही देश आय ॥ ४ ॥

शब्द नं० ७५

तनक हरि चितवो मेरी ओर ॥ टेक ॥
खड़ी खड़ी मैं अर्ज करत हूं अर्ज करत भयो भोर ॥ १ ॥
तुम से हमको कोई नाहिं, मिलेंगे हमसी लाख करोर ॥ २ ॥
बन मांहा व्याकुल भई डोलूं ढूंढ़ फिरी चहुं ओर ॥ ३ ॥
मीरां के प्रभु कब जो मिलेंगे सुन्दर प्रीतम मोर ॥ ४ ॥

शब्द नं० ७६

चल गगन मण्डल के बीच जहां तेरा पिया सजनी ॥ टेक ॥
वहां एक आवे एक जाय वाके संग क्यों न चली ॥ १ ॥

जहां झिलमिल २ होय खिल रही चम्पा की कली ॥ २ ॥
तुम चढ़ो छमाछम जाय पिया की सुखमन सेज बिछी ॥३॥
मिल एक रूप हो जाय, दुई तो तुरत मिटो ॥ ४ ॥
यों कहते नाथ गुलाब मुकत की यही है गली ॥ ५ ॥
गुण गावें भवानीनाथ पिया से जाकर मिली ॥ ६ ॥

शब्द नं० ७७

चले गये दिल के दामनगीर ॥ टेक ॥
जब सुध आवे तुमरे दरश की उठे कलेजे पीर ॥ १ ॥
नटवर भेष नयन रतनारे सुन्दर श्याम शरीर ॥ २ ॥
वृन्दावन वंशीवट त्यागो निर्मल जमना नीर ॥ ३ ॥

आप ही जाय द्वारका छाई खारी नद के तीर ॥ ४ ॥
सब गोपियन का नेह बिसारो ऐसे भये बेपीर ॥ ५ ॥
सूरदास ललिता उठ बोली, आखिर जात अहीर ॥ ६ ॥

शब्द नं० ७८

दोहा—राजा राना राव रङ्क, बड़ा जो सुमरे राम ।
कहैं कबीर सब में बड़ा, जो सुमरे निष्काम ॥

तूं सुमरण करले मेरे मना तेरी बीती जात उमर हरि नाम बिना ।
पंछी पंख बिन हस्ति दन्त बिन नारी पुरुष बिना ।
जैसे पण्डित वेद विहीना तैसे प्राणी हरिनाम बिना ॥ १ ॥

देह नयन बिन रैन चन्द्र बिन धरणीं मेघ बिना ।
जैसे पुत्र पिता बिन हीना तैसे प्राणी हरि नाम बिना ॥ २ ॥
कूप नीर बिन धनुष वीर बिन मन्दिर दीप बिना ॥ ३ ॥
वृथा हिये ज्यों ज्ञान बिहीना तैसे प्राणी हरि नाम बिना ।
काम क्रोध मद लोभ निवारो त्यागो पाप तुम सर्व जना ॥
कहैं नानक स्याह सुनो भगवन्ता या जगमें नहीं कोई अपना ॥४॥

दोहा—जो ऊगे सो आथवे, फूले सो कुमलाय ।
जो चिनिये सो ढै पड़े, जामे सो मर जाय ॥

शब्द नं० ७६

करले मन मेरा जो कुछ करना होय ॥ टेक ॥
काल करे सो आज कर जो कुछ करना होय ।
अवसर चूके औसर नाहीं पीछे झुरना होय ॥ १ ॥
क्या तूं फिरे मग्न मन अपने जङ्गल हिरना होय ।
भंवर फँसा है चौकड़ी सारी भूला ही भरना होय ॥ २ ॥
जोबन जोम ओस का मोती एक दिन ढलना होय ।
अपनी चलती बुरी न करिये सब दिन डरना होय ॥ ३ ॥
मौत निशानी खड़ी शीश पर एक दिन मरना होय ।
बांध रहा वर्षों के सामे पलकी खबर नहीं तोय ॥ ४ ॥

जो तुझको भव धार सिन्धु से पार उतरना होय ।
कर लेना मन नाव नाम की सत्गुरु शरना होय ॥ ५ ॥

शब्द नं० ८०

सुरता हे म्हारी धोवनियां म्हारा दाग जिगर का धोय । टेक।
तनकर कूंडी मति मसाला या ही में खूम करो ।
लोभ लकरिया ठोक जराओ कुन्दी तो खूम करो ॥ १ ॥
समता नीर ज्ञान का साबुन सत् का माचा दो ।
शील शिला पर दे फ़टकारो या विधि साफ़ करो ॥ २ ॥
चिवंच तान कर तह बनालो गुलझट मत राखो ।
जन्म जन्म के दाग लगे हैं अब के तो डालो वाने धोय ॥३॥

शब्द नं० ८१

मालिक कुल आलम के हो, तुम सच्चे श्रीभगवान् ॥ टेक ॥
सूरज चांद पवन और पानी, धरती बीच असमान ।
सब में जलवा तेरा ही देखो, कुदरत पर कुरबान ॥ १ ॥
भारत में अर्जुनके कारण आप बने रथवान ।
उसने अपने कुल को देखा, छुट गये तीर कमान ॥ २ ॥
ना कोई मारे ना कोई मरता, तेरा ही अज्ञान ।
आतम एक अचल अविनाशी, यह गीता को ज्ञान ॥ ३ ॥
मुझ आजिज पर कृपा कीजो, बन्दा अपना जान ।
मीरां माधो शरण तुम्हारी, लगा चरण से ध्यान ॥ ४ ॥

शब्द नं० ८२

भोर भयो पक्षी गण बोले, उठो अब हरिगुण गाओ रे ॥१।

लखि प्रभात प्रकृति की शोभा, बार बार हर्षाओ रे ।

प्रभुकी दया सुमिर निज मनमें,सरल स्वभाव उपजाओरे ॥३॥

हो कृतज्ञ प्रेम में उनके, नैनन नीर बहाओ रे ॥ ४ ॥

ब्रह्म रूप सागर में मन को, बारम्बार डुबाओ रे ॥ ५॥

निर्मल शीतल लहरें ले ले, आतम ताप बुझाओ रे ॥ ६ ॥

शब्द नं० ८३

मन पछतैया है अवसर बीते ॥ टेक ॥
दुर्लभ देह पाय हरिपद भज कर्म, वचन, अरु होते ।
सहसबाहु दशवदन आदि नृप बचे न काल बलीते ॥ २ ॥
हम हम कर धन धाम संभारे, अन्त चले उठ रीते ॥ ३ ॥
सुत बनतादि जान स्वारथरत, ना कर नेह इन्हींते ॥ ४ ॥
अन्तहु तोहि तजेंगे पामर; तू ना तजे अब हीं ते ॥ ५ ॥
अब नाथहिं अनुराग जाग जड़ त्याग दुराशा जीते ॥ ६ ॥
बुझै न काम अग्नि तुलसी कहुँ बहु विषय भोग अरु घीते ॥

शब्द नं० ८४

मना तैंने राम न जाना रे ॥टेक ॥

जैसे मोती ओस का रे, तैसे यह संसार ।
देखत ही को झिलमिला रे, जात न लागे बार ॥ १ ॥

सोने का गढ़ लङ्क बनाया, सोने का दरबार ।
रत्ती सोना ना मिला रे, रावण मरती बार ॥ २ ॥

दिन गंवाया खेल में रे, रैन गंवाई सोय ।
सूरदास भजो भगवन्ता, होनी होय सो होय ॥ ३ ॥

शब्द नं० ८५

अरी ऐरी ऊदां लागी का नाम न ले ॥ टेक ॥
ज़ल से प्रीति करी मछली ने तड़फ २ जिया दे ॥ १ ॥
हिरनों की प्रीति लगीं नादों से, सन्मुख सेल सहे ॥ २ ॥
दीपक से प्रीति लगी है पतंग को, वार फेर जिया दे ॥ ३ ॥
मीरां की प्रीति लगी है सन्तों से गुरु चरणों चित्त दे ॥ ४ ॥

शब्द नं० ८६

तुम्हारे बिना बिगरी कौन सुधारे ॥ टेक ॥
जी एक दिन बिगरी पिता पुत्र में बांध खम्भ सूं मारे।
जन अपने के काज दयानिधि, रूप नरहरि धारे ॥ १ ॥

जी एक दिन बिगरी भ्रात भ्रात में लात दशानन मारे।
राजपाय विभीषण फ़तह के, बाजत लङ्क नगारे॥ २॥
जी एक दिन बिगरी राज सभा में, द्रोपदि दीन पुकारे।
ताको अनन्त चीर बढ़ाये दुष्ट दुशासन हारे॥ ३॥
एक दिन बिगरी जन नरसो की, समधो जू के द्वारे।
सब भांति से भात भरा है, कारज जन के सारे॥ ४॥
जब जब भीर परी भक्तनपर, तब तब कारज सारे।
अब की बार कहां पर सोये, विपति विडारन हारे॥ ५॥

अब की बार कहां पर सोये, विपति विडारन हारे ॥ ५ ॥

शब्द नं० ८७

दोहा—चोरी हिंसा अरु व्यभिचार, कायाके त्रय दोष विचार।
निन्दा अरु कटुवाद असत्य, वाणीके यह दूषण सत्य ॥
तृष्णा द्वेष बुद्धि अरु क्रोध, त्रिविध दोष मनमें तू शोध।
इह प्रकार नव दूषण त्याग, कर सत्सङ्ग खुलेंगे भाग ॥

जन्म तेरो बातों में बीत गयो, तैंने कबहूं न नाम कह्यो ॥टेक॥
पांच बरसका आला भोला अब तो बीस भयो।
मकर पचीसी माया कारण, देश विदेश गयो ॥ १ ॥
तीस बरस अब मति उपजी, लोभ बढ़े नित नयो।
माया जोडी लाख करोड़ी अजहूं न तृप्त भयो ॥ २ ॥

वृद्ध भयो जब आलस उपज्यो, जप तप कंठ रह्यो।
साधु को सङ्गत कबहुं न कीनी, विरथा जन्म गयो ॥ ३ ॥

यह संसार मतलब का लोभी, झूंठा ठाठ रच्यो।
कहत कबीर समझ मन मूरख, तू क्यों भूल गयो ॥ ४ ॥

दोहा—जिसका कोई न होय हृदय से उसे लगावे।
प्राणी मात्र के लिये प्रेम की ज्योति जगावे ॥
सब में विभु को व्याप्त जान सब को अपनावे।
है बस ऐसा वही भक्त की पदवी पावे ॥

है बस ऐसा वही भक्त की पदवी पावे ॥

शब्द न० ८८

मुरलिया ने कियो है कठिन तप भारी ॥ टेक ॥

मुरलिया याही ते हरि ने मुख धारी ॥

जन्मत ही ऐसी मत गाढ़ी बन में रहो एक पग ठाडो ।

वर्षा शीत उष्णता बाढ़ी सो सहो तन पर सारी ॥

मुरली निज तपके फल लीने ब्रह्मा रुद्र इन्द्र वश कीने ।

चेतन थे सो जड़ कर दीने अधरन चढ़ी मुरारी ॥

एक मन्त्र विधि हरि से पावें ताते इतनो सृष्टि उपावें ।

हरि याकूँ नित मन्त्र सुनावें, अचरज भयो कहारी ॥

हरि वृज में नित वैन बजावें तीन लोक धुनि सुनि सुख पावे।
झब्बीलाल मनावे वृज को वास मिले बनवारी ॥

शब्द नं० ८६

सुना है हमने निर्बल के बलराम ॥ टेक ॥
जबतक गज बल अपना कीनो, सरो ना एकहु काम।
जब गज ने हरि नाम सम्हारो, आ गये आधे नाम ॥ १ ॥
दीन होय जब द्रोपदी टेरो, बसनरूप धरा श्याम।
बहुत ही साख सुनी सन्तन की, अड़े संवारे हैं काम ॥ २ ॥
नरसी भक्त की हुण्डी पेलो, दिये रोकड़ा दाम ॥ ३ ॥
जप बल, तप बल, और भुजा बल, चौथे बल हैं दाम।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, हारेके हरि नाम ॥ ४ ॥

शब्द नं० ९०

सिया रघुवीर भरोसो ऐसो ॥ टेक ॥ वारि न बोरि सके।
प्रहलादहि पावक नाहिं जरो सो। ऐसो० ॥ १ ॥
हिरणाकुश बहु भांति सतायो हठ कर बैर करो सो।
मारो चहै दास नरहरि को, आपै दुष्ट मरो सो ॥ २ ॥
मीरां के मारन के कारण पठायो ज़हर खरोसो।
राम नाम अमृत भयो ताको, हँस हँस पान करो सो ॥ ३ ॥
द्रुपद सुता को चीर दुशासन, मध्य सभा पकरो सो।
ऐंचत ऐंचत भुज बल हारे, नेक न अङ्ग उघरो सो ॥ ४ ॥

भारतमें भंवरीके अण्डा, कोटिन दल बटरो सो।
राम नाम जब पंछिन टेखो घण्टा टूटि परो सो ॥ ५ ॥

जासो लङ्क अञ्जनी नन्दन, देखत पुर सगरो सो।
ताके मध्य विभीषण को गृह राम कृपा उबरो सो ॥ ६ ॥

रावण सभा कठिन प्रण अङ्गद, हठकर हरि सुमरो सो।
मेघनाथ सम कोटिन योधा, लागे पग न टखोसो ॥ ७ ॥

तुलसीदास विश्वास रामपद, जो नर नारी नरो सो।
और प्रभाव कहां लग वरणों, जेहि यमराज डरो सो ॥ ८ ॥

शब्द नं० ९१

दोहा—सब स भला मधुकरी, भांत भांत का नाज ।
दावा काहू का नहीं, बिना विलायत राज ।।
राजा राना राव रङ्क, बड़ा जो सुमरे नाम ।
कहैं कबीर बडवन बड़ा, जो सुमरे निष्काम ।।

देखोरी ये कैसो बालक रानी यशुमति जायो है ।। टेक ।।
सुन्दर बरण कमल दल लोचन देखत चन्द्र लजायो है ।
पूरण ब्रह्म अलख अविनाशी प्रगट् नन्द घर आयो है ।।
मोर मुकुट् पीताम्बर सोहे केशर तिलक लगायो है ।
कानन कुण्डल गल बिच माला कोटि भानु छवि छायो है ।।

शङ्ख चक्र गदा पद्म विराजे चौभुज रूप बनायो है।
परमेश्वर पुरुषोत्तम स्वामी, यशुमति सुत कहलायो है॥

मच्छ कच्छ बाराह अरु बामन राम रूप दरशायो है।
खम्भ फार प्रगटे नर हरि वपु जन प्रहलाद छुड़ायो है॥

परशुराम बुद्ध निहकलङ्क होय भुवि का भार मिटायो है।
काली मर्दन कंस निकन्दन गोपीनाथ कहायो है॥

मधुसूदन माधव मुकुन्द प्रभु भक्तवछल पद पायो है।
शिव सनकादिक और ब्रह्मादिक शेष सहस्र मुख गायो हैं॥

सो परब्रह्म प्रकट होय ब्रज में लूट लूट दधि खायो है।
परमानन्द कृष्ण मनमोहन चरण कमल चित्त लायो है॥

झंझोटी ९२

अब मैं अपने रामको रिझाऊँ ॥ टेक ॥

डार पातके हाथ न लाऊँ, ना कोई वृक्ष सताऊं ।
पात पात में साहिब मेरा; झुककर शीश नवाऊँ ॥ १ ॥

गङ्गा जाऊं न यमुना जाऊं, ना कोई तीरथ न्हाऊं ।
अठसट् तीरथ हैं घट् भीतर, वाही में मल २ न्हाऊँ ॥ २ ॥

औषधि लाऊँ न बूंटी लाऊँ, ना कोई वैद्य बुलाऊँ ।
पूरण वैद्य मिले अविनाशी, उनको ही नबज़ दिखाऊं ॥ ३ ॥

ज्ञान कुठारा कसकर बांधूं, सुरति कमान चढ़ाऊं ।
पांच चोर हैं या घट भीतर, उनको मार गिराऊँ ॥ ४ ॥

योगी हो ना जटा बढ़ाऊँ, ना मैं अङ्ग विभूत रमाऊँ ।
जिस रङ्ग रङ्गे विधाता, वाही में आनन्द मनाऊँ ॥ ५ ॥

गजल ९३

इतना तो करना स्वामी, जब जान तनसे निकले ॥टेक॥
गोविन्द नाम कहकर, मेरे प्राण तनसे निकले ॥
श्री गङ्गाजीका तट हो, या यमुनाजी का वट हो ।
और सांवरा निकट हो, फिर प्राण तनसे निकले ॥ १ ॥
श्रीवृन्दावनका स्थल हो, मेरे मुखमें तुलसीदल हो ।
विष्णुचरणका जल हो, फिर प्राण तनसे निकले ॥ २ ॥
सन्मुख सांवरा खड़ा हो, बन्सीका सुर भरा हो ।
तिरछा चरण धरा हो, फिर प्राण तनसे निकले ॥ ३ ॥

शिर सोहना मुकुट हो मुखड़े पै काली लट् हो।
यही ध्यान मेरे घट् हो, फिर प्राण तन से निकले ॥ ४ ॥

उस वक्त जल्दी आना, ना कौल भूल जाना।
नूपुर की धुनि सुनाना, फिर प्राण तन से निकले ॥ ५ ॥

मेरे प्राण निकले सुख से, तेरा नाम निकले मुख से।
बच जाऊँ घोर दुःख से, फिर प्राण तनसे निकले ॥ ६ ॥

जब कण्ठ प्राण आवें, कोई रोग ना सतावे।
तू दर्श यदि दिखावे, फिर प्राण तनसे निकले ॥ ७ ॥

यह नेकसी अरज है, मानो तो क्या हरज है।
कुछ तेरा भी फरज है, फिर प्राण तनसे निकले ॥ ८ ॥

भजन न० ९४

किन तेरो गोविन्द नाम धरो ॥ टेक ॥
लेन देनके तुम हितकारी, मोते कछू ना सरो ॥ १ ॥
विप्र सुदामा कियो अयाचक, तन्दुल भेंट धरो ॥ २ ॥
द्रुपदसुता को तुम पति राखी, अम्बर दान करो ॥ ३ ॥
सन्दीपन के तुम सुत लाये, विद्या पाठ पढ़ो ॥ ४ ॥
सूर की विरियां निठुर होय बैठे, कानन मूंद धरो ॥ ५ ॥

भजन नं० ९५

अरे मन तू गोविन्द के गुण गाना रे ॥ टेक ॥
नाहक चिन्ता करता डोले, जो पाना सो खाना रे ॥ १ ॥

झूँठा धाम झूँठी है दौलत, काहे चित्त फँसाना रे ॥ २ ॥
अन्त समय कोई काम न आवे, हाथ पसारे जाना रे ॥ ३ ॥
कोटि यतन चाहे कर ले मूरख, पच २ कर मर जाना रे ॥ ४ ॥
जो ललाट लिखा साँई मिलिहै, अधिक ना मिले दाना रे ॥ ५ ॥
काम क्रोध का पहिन चोलना, काहे को इतराना रे ॥ ६ ॥
राधा माधव हित सो भज ले, याते हो कल्याणा रे ॥ ७ ॥

भजन नं० ९६

जगदीश्वर तुम्हारा सहारा हमें, यहां दीखे न कोई, हमारा हमें ।टेक।
गर्भ यातना के सङ्कट से, करके कृपा जो उभारा हमें ॥ १ ॥

दांत नहीं थे जब दूध दियो तब फिर भी कभी न बिसारा हमें ॥२॥
सदा रह्यो साथी घट् भीतर, पलभर भी करते न न्यारा हमें ॥३॥
जो कुछ सुख तुम देहु दयाकर, क्या कोई देगा विचारा हमें ॥४॥
धर्मदास कहें भववारिधि से, पार कबीर उतारा हमें ॥ ५ ॥

गजल नं० ९७

आलम में किसका डर है, जिसपर नज़र हो तेरी।
बेशक वह बेखतर है, जिसपर मेहर हो तेरी ॥

दुशमन न कोई उसका, होवे तू दोस्त जिसका।
दुनियां ही यार होवे, हां जब मदद हो तेरी ॥

दुनियां ही यार होवे, हां जब मदद हो तेरी ॥

दरदो अलम वहां के, ऐब वो गुनाह जहां के।
कोई न पास आवे, जिसको पनाह हो तेरी ॥
राई से कोह कर दे, खाली को दम में भर दे।
थोड़े से तू बहुत दे, पर जब रज़ा हो तेरी ॥

ख्याल नं० ९८

सच्चा सत्गुरु मिले तो चेला, पलट् के कोड़े से भृङ्ग होकर।
समाया अपने में आप फिर मैं, मिसाले जलकी तरङ्ग होकर ।टेक।
इडा पिङ्गला सुषुम्ना, तीनों नाड़ी के सङ्ग होकर।
हमेशा बहती है यह त्रिवेणी हमारी भृकुटियों में गङ्ग होकर ॥
यह दिलको धोया मैं खूब मलमल, मिसाले दर्पणके रङ्ग होकर।
दुई दूरकर हुआ मैं इकता, दुरङ्ग से फिर इकरङ्ग होकर ॥

रूप सच्चिदानन्द है मेरा, कहा ज़बां से सोऽहं होकर।
समाया अपने में आप फिर मैं, मिसाले जल की तरङ्ग होकर॥

दिल तायर के कतर लिये पर, हुआ वह बेपर अपङ्ग होकर।
क्या मजाल है उड़ान भर ले, हमारा दिल ये मतङ्ग होकर॥

ज्ञान का अङ्कुश लगाया हमने, हमेशा सन्तों के सङ्ग होकर।
बिन सत्सङ्गति कोई न सुधरे, कुसङ्ग छोड़ा सुसङ्ग होकर॥

नाभि कमल से गया मैं सोधा, बङ्क नाल की सुरङ्ग होकर।
शून्य शिखर में सोया मैं सुख से, जन्म मरण से निसङ्ग होकर।
क्या मजाल है वहां काल की, जो देखे मुझको बदरङ्ग होकर।
योगी जुगत से जीवें हमेशा, युगान युग इस प्रसङ्ग होकर॥

सूरजगिरि कहें संन्यासी से, अड़े कोई फुकरा मलङ्ग होकर।
तो खूब ठहरे बराबरी का, सभा में शब्दों से जङ्ग होकर॥
संसारी नहिं अड़े सन्त से, अड़े कोई नङ्गा निहङ्ग होकर।
आखिर को फिर जले ज्ञान बिन, मिसाले दीपक पतङ्ग होकर।
कवितागिरि कहें कविताई को, ढङ्ग से मतकर कुढङ्ग होकर॥

भजन नं० ९६

मैं वारि जाऊँ सत्गुरु की, मेरो कियो भरम सब दूर॥ टेक॥
प्यालो प्यायो प्रेम को, घोर सजीवनमूर।
चढ़ी खुमारी नाम की हो गई चकनाचूर॥ १॥
विमल प्रकाश अकाश में, लख्यो बिना शशि सूर।
मगन भयो मन गगन में, सुनके अनहद तूर॥ २

ममता घट् समता बढ़ी, उर अन्तर भरपूर ।
राग द्वेष जग से मिटो, अब मन भयो मजूर ॥ ३ ॥
शब्द सुनत यमदूत के, मुख में लागी धूर ।
आप मिले धर्म्मदास को, सत्गुरु हाल हजूर ॥ ४ ॥

शब्द नं० १००

मस्तक लाग रहो म्हारे, गुरु चरणन की धूर ॥ टेक ॥
जब यह धूल चढ़ी मस्तक पै, द्विविधा होगई दूर,
इडा पिङ्गला ध्यान धरत है, सुरती पहुंची दूर ॥ १ ॥
यह संसार विघन की घाटी, निकसत विरला शूर ।
प्रेम भक्ति गुरु रामानन्द लाये, करी कबीर भरपूर ॥२॥

॥ इति प्रथमो भाग समाप्त ॥

शान्ताकारं भुजग शयनं पद्मनाभं सुरेश ।
विश्वाधारं गगन सदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम् ॥

लक्ष्मी कान्तं कमल नयनं योगिभिर्ध्यान गम्यं ।
वन्दे विष्णुं भव भय हरं सर्वलोकैक नाथम् ॥

* हरिः ॐ परमात्मने नमः *

द्वितीय भाग

शब्द नं० १०१

दोहा—प्रजापति यह मेघ है, जग में बरसे आय।
नदी सरोवर सब भरें, अन्न पसारा पाय॥
मेघला झुक आया, कर के शब्द घन घोर॥ टेक०॥
आकर सबको शब्द सुनाया, प्रजापति सन्देश बताया।
* यह बिरलों के ज्ञान समाया, द, द, द, दंग मोर॥ १॥

* दाम्यत, दत्त, दयध्वम्। देव, मनुष्य, राक्षस।

दमन किया तब देव विशाला, ये ही वणे किया प्रतिपाला ।
होगया उनको दिव्य उजाला, धारण कीया ज़ोर ॥ २ ॥

दान, करो तुम नर तन धारी, ब्रह्मा के बनो आज्ञाकारी ।
इससे होगी जीत तुम्हारी, दान करो उठ भोर ॥ ३ ॥

तीजा द, असुरों के ताईं, दया करो सब होय रिहाई ।
यह फ़रमाते आप गुशाईं, वज्र पड़े करो शोर ॥ ४ ॥

दरिद्रता के हो तुम नाशक, पारब्रह्म सबके परकाशक ।
निज भक्तन पर तुम हो आशिक, पहुंचा दो निज ठौर ॥५॥

परमानन्द स्वरूप लखाया, रघुनाथ ने ध्यान लगाया ।
शुद्ध रूप निज हिय में छाया, इत उत को तूं छोर ॥ ६ ॥

शब्द नं० १०२

दोहा:—सलिल मोह की धार में, बह गये गहर गम्भीर।
सूक्ष्म मछली सुरत है, चढ़े जो उलटे नीर॥

मोह माया की धारा में जग बह गयो री॥ टेक०॥

रावण दुर्योधन से बह गये, कोई २ साधु जन रह गयोरी।
मैं मेरे में जगत् जाय सब, सत् गुरु नावका है गयोरी॥

यह संसार स्वप्न की लीला, सत् गुरु मोते कह गयोरी।
जो कोई लाग्यो विषय भोग में, सर्वस अपना देगयोरी॥

जिसने रटा राम को निश दिन, वही यहांसे कछु लेगयोरी।
कहैं रघुनाथ शरण गुरु की ले ब्रह्म रूप जीव है गयोरी॥

शब्द नं० १०३

दोहाः—इन पांचो से बंधकर, फिर फिर धरे शरीर।
जो यह पांचो बस करे, उसी का लागे तीर॥

तजो रे मन इन्द्रिय सुख दुःखदाई ॥ टेक ॥
इन का भोग नहीं सुख देवे, निश्चय कर समुझाई ॥ १ ॥
राग बन्ध में हरिण देखो, आतम देत गंवाई ॥ २ ॥
काम आसक्त जो हस्ती होवे, गर्त में जात बंधाई ॥ ३ ॥
रूप पतङ्ग जब आके देखे, जिस्म की भस्मि बनाई ॥ ४ ॥

श्लोक—कुरंग मातंग पतंग भृङ्ग मीनाः हताः पंचभिरेव पंच।
एकः प्रमादी स कथं न हन्यते यः सेवते पंचभिरेवपंच॥

मीन स्वाद में जिह्वा वश हो, जाल में जात फंसाई ॥ ५ ॥
भृङ्ग देख लो कमल पुष्प में, फंस कर देह नशाई ॥ ६ ॥
इन्द्री सुख तुम जानो मृत्युकर, रघुनाथ बतलाई ॥ ७ ॥

शब्द नं० १०४

माता समान जग में, नहीं दूसरा है कोई ॥ टेक० ॥
पहलो गुरु यही है, मल मूत्र अंग धोई ॥ १ ॥
पालन करे वो ऐसे, बहु दुःख भार ढोई ॥ २ ॥
ऐसे ही मातृ देवी, सुख रूप सबकी होई ॥ ३ ॥
करो पुत्र इनकी सेवा, रघुनाथ विन्ति सोई ॥ ४ ॥

शब्द नं० १०५

कृष्ण के चरित्र के सदा गुण गाओजी ॥ टेक० ॥

वेद हैं वचन जिनके, विप्र मुख गायेजी।
धेनुगण जिनका प्यारा, पाय हर्षायेजी ॥ १ ॥ कृ० ॥

देवता हैं अङ्ग सारे, हीया साधु पायेजी।
कोटिन ब्रह्माण्ड जिनके, अङ्ग में समायेजी ॥ २ ॥ कृ० ॥

बन बन घूमे श्याम, बंसरी बजायेजी।
गिरिवर ठाय लीनो, अङ्गुली लगायेजी ॥ ३ ॥ कृ० ॥
राधा के हो प्राण नाथ, जग को जगायेजी।
प्रेम में हो पूरण स्वामी, रघूनाथ न्हाये जो ॥ ४ ॥ कृ० ॥

गजल नं० १०६

मगन हो प्रेम के अन्दर भजन कर ईश का प्राणी ॥ टेक० ॥
लगाकर पद्म आसन को, महल त्रिकुटी कर ध्यानी ॥ १ ॥
जहां ना चन्द्र और सूरज, अगम ज्योतिः जगे जानी ॥ २ ॥
प्रेम का पन्थ न्यारा है, जो पावे शिर को दे दानी ॥ ३ ॥
गुरु चरणों की किरपा से, नाथ रघुवर के मन मानी ॥ ४ ॥

शब्द नं० १०७

अच्छे मीठे चाख चाख बेर लाई भीलनी ॥ टेक० ॥
ऐसी कहा आचारवती, रूप नहीं एक रती ।
नीच कुल ओछो जात, अति ही कुचीलणी ॥ १ ॥

झूठे फल लीन्हें राम प्रेम की प्रतीत जान।
ऊँच नीच जाने नहीं, रस की रसीलणी ॥ २ ॥
ऐसो कहा वेद पढ़ी, छिन में विमान चढ़ी।
हरि जू से बंध्यो हेत, बैकुंठ में झूलणी ॥ ३ ॥
ऐसी प्रीत करे कोई, दास मीरा तरे सोई।
पतित पावन प्रभु, गोकुल अहीरणी ॥ ४ ॥

शब्द नं० १०८

अरे मन वृक्षों का मत लेरे ॥ टेक० ॥
काटनिये से बैर नहीं है सींचनिये से नहीं सनेह रे ॥ १ ॥
जो कोई वाके पत्थर मारे वाहू को फल देयरे ॥ २ ॥

शीत घाम सब आप ही ओटे औरों को सुख दे रे ॥ ३ ॥
कहैं कबीर शरण ले गुरु को, भवसागर तीरण होरे ॥ ४ ॥

शब्द नं० १०६

आये, आये विदुर घर पावना जो ॥ टेक ॥
विदुर नहीं घर थी विदुरानी. आवत देखे शारंग पाणी ।
फूली, अंगन आवे चिन्ता, भोजन कहा जिमावनाजी ॥ १ ॥
केला एक प्रेम से लाई, गिरी गिरी सब देत गिराई ।
छिलका देत श्याम मुख माहीं, लागे परम सुहावनाजी ॥२॥
इतने माहीं विदुर जी आये, खोटे खारे वचन सुनाये ।
छिलका देत श्याम मुख माहीं, लागे परम सुहावनाजी ॥३॥

केला विदुर लिये हाथों मांही, गिरी देत गिरधर मुख मांहीं
कहैं कृष्णजी सुनो विदुर जी, सो स्वाद नहीं आवनाजी ॥४॥
बासो कूसे रूखे सूखे हम हैं विदुर जी प्रेम के भूखे।
धन्य २ गोप वृज नारी, कृष्ण विदुर घर पावना जी ॥ ५ ॥

रसिया नं० ११०

श्रीकृष्ण खड़े आंगन में, कैसे सोय रही वृज नार ॥ टेक० ॥
जिस मोहन पर फिरें दिवानी, मेरी सुनी न मनकी मानी।
वो ही आये हैं हम जानी, खड़े पुकारें द्वार ॥ १ ॥
सोऽहं सोऽहं धूम मचाई, पड़ा गज़ब नहीं देत सुनाई।
श्याम सुन्दर हैं राम दुहाई, टेरत भई बड़ी बार ॥ २ ॥

चाल अनौखी चितवन बांकी, रस भरे नैन मनोहर झांकी ।
जग मग ज्योति जरे नयनों की, खिल रही अजब बहार ॥ ३ ॥
सेज बिछी है शून्य अटारी, उठ शिंगार कर निर्भय प्यारी ।
परमानन्द हो खोल किवाड़ो, क्यों बैठी मन मार ॥ ४ ॥

ध्वनि प्रेमानन्द नं० १११

भजो राधे * कृष्ण राधे कृष्ण राधे गोविन्द ॥ टेक ॥
केशोजी कल्याण, गिरिधरण छबीले लाल ।
नन्द को नन्दन श्री वृन्दावन चन्द ॥ १ भजो० ॥
देवकी को छैया बलभद्रजो को भैया लाल ।
जाके मुख देखे ते, मिटत दुःख द्वन्द ॥ २ भजो० ॥

ब्रजपति ब्रजराज, सन्तन सदा सहाय ।
हर हर मुरलीधर, नैना देखे ते आनन्द ॥ ३ भजो० ॥
जादो पति जादो राज सूरन के सारे काज ।
याही विधि गावें, स्वामी पद्मानन्द ॥ ४ भजो० ॥

कुण्डलिया नं० ११२

पृथ्वी पवन अकाश है, नीर अग्नि शशि भान ।
कपोत गुरु अजगर लख्यो, और सिन्धु को जान ॥
और सिन्धु को जान, पतंगी, भँवरा कहिये ।
माखी हाथी मृग मीन, अरु पिङ्गला लहिये ॥
चिल्ह बाल कन्या कहूं, तीर बनावन हार ।
सांप माकरी भृंग ज्यों, चौबीसों उर धार ॥

छप्पय नं० ११३

छप्पय नं० ११३

तृण जो दन्त तर धरहिं, तिनहिं न मारत सबल कोई।
हम नित प्रति तृण चरहिं, बैन उच्चरहिं दीन होई॥
हिन्दुहि मधुर न देहिं, कटुक तुर्कन न पिलावहिं।
पय विशुद्ध अति स्रवहिं बच्छ, महि थम्बन जावहिं॥
सुन शाह अकबर, अरज यह करत गौ जोरे करन।
सो कौन चूक मोहि मारियत, मुये चाम सेवहु चरन॥

शब्द नं० ११४

दोहे—गुरु भक्ति से कटत हैं, सभी जगत् के बन्ध।
सद्गुरु भक्ति विहीन जो, वही जान जन अन्ध॥२॥

गु, वाचक अज्ञान का रू, बिनशे अज्ञान ।
अन्धकार अज्ञान को, मेटें गुरू सुजान ॥ १ ॥
दर्शन दीजे गुरुवर देव, तुम पार उतारन वाले ॥ टेक ॥
तुम सम ना कोई दाता, तुम ही हो मेरे विधाता ।
तुम सब के हो महाराज, जन तुमरे हुआ हवाले ॥१ ॥
जो सेवक तुमको भजते, शिव ज्ञान वेश से सजते ।
दिया है अञ्जन डाल, मेरे गये नेत्र के जाले ॥ २ ॥
तुम देश अलख के वासी जहां योगी कोई सन्यासी ।
शिव रहते आप ही आपी, वहां पर दर्शे दिव्य उजाले ॥३ ॥
मैं निर्गुण दास तुम्हारा, मानू दो शक्ति इशारा ।
करो अब भव जल पार, ये रघुनाथ बे हाले ॥ ४ ॥

शब्द नं० ११५

शिव देव हमारा आधारा रे ॥ टेक ॥

तीन लोक बस्ती में बसाए, आप रहत है न्यारा रे ॥

जटा जूट में गङ्गा अद्भुत, ज्यों अमृत की धारा रे ॥ १ ॥

माथे चन्द्रमा ऐसे सोहै जैसे रत्न हज़ारा रे ॥

हस्त कपाल मुण्ड माल गल में, कण्ठ सर्प फुंकारा रे ॥ २ ॥

गौराँ सङ्ग में वृषभ वाहन, पुत्र गजानन प्यारा रे ॥

प्रलय करो तुम ग्रीष्म रूप हो, कर धूलि धूं धारा रे ॥ ३ ॥

भांग धतूरा ज़हर चढ़ावें, हर हर बं, बं, पुकारा रे ॥

परमानन्द गुरु किरपा है, रघुबर दास तिहारा रे ॥ ४ ॥

शब्द नं० ११६

दोहा—भक्ति भक्त भगवन्त गुरु, चतुर नाम वपु एक ।
तिन के पद वन्दन करूं नाशत विघ्न अनेक ॥

तुम बिन शङ्कर कोई न मेरा ॥ टेक ॥
भवसागर को पार न जानौ नाव मिले नहिं बेरा ॥ १ ॥
मोको नाथ जान निज सेवक निज पुर देहु बसेरा ॥ २ ॥
देवो सहाय दरश को लोभी उमा सहित करो फेरा ॥ ३ ॥

शब्द नं० ११७

गौरीनाथ शरण तकि आया ॥ टेक ॥
बिन तुव कृपा दयाल उमापति मोह मिटे नहीं माया ।

भ्रमत रहो निश दिवस अवनि तल विषै भोग मन लाया ॥
जब तुम दया दास पर कीन्हीं कलि मल धोय बहाया ।
अशरण शरण दीन हितकारी वेद पुरानन गाया ॥
श्री गुरु देव दया कर मोहूं जिन यह रूप दिखाया ।
देवीसहाय उमापति सेवक नाम रतन धन पाया ॥
सखा समेत बसावहु निजपुर यह आपकी दाया ॥

शब्द नं० ११८

भजन बिन जीवत पशु समान ॥ टेक० ॥
देव पितर गुरु पोषत नाहीं उदर भरत ज्यों स्वान ।
सत् सङ्गत से दूर बसत हैं सुने न वेद पुरान ॥

सपने न करत विप्र पद पूजा गनिकन को सनमान ॥
देविसहाय सार है कलि में करैं जो प्रभु पद ध्याना ॥

शब्द नं० ११९

मैं शिव हेत जन्म जग लीन्हों ॥ टेक० ॥
गौरीपति कृपाल शङ्कर को तन मन धन सब दीन्हों ।
तब से गये रोग तजि तन से नाम सुधा रस पीन्हो ॥
शिव पद पद्म पराग पियन हित नेम निरन्तर कीन्हों ।
देवी सहाय सदा शिव को यश कहत प्रेम रङ्ग भीनो ॥

शब्द नं० १२०

हे विधि कौन करम मैं कीन्हों ॥ टेक० ॥
जाते मोहि दया निधि शङ्कर कर गहि दर्शन दीन्हों ।
सुनि सुनि हाल ग्वाल शबरी को उन सम मोहि न चीन्हों ॥

जाते मोहि दया निधि शङ्कर कर गहि दर्शन दीन्हों ।

सुनि सुधि हाल ग्वाल शबरी की उन सम मोहि न चीन्हों ॥
देवीसहाय सदा शिव को यश कहत प्रेम रङ्ग भीनो ॥

शब्द नं० १२१

अब मोहि गौरी नाथ बुलायो ॥ टेक० ॥
महाराज महारानीजी ने, लिख कर पत्र पठायो ।
बांचत पत्र पवित्र भयो मन धाम ग्राम बिसरायो ॥
आनन्द बन बीथिन की शोभा चाहत मोहि दिखायो ।
देवीसहाय दास अपने को चौथे पन अपनायो ।

शब्द नं० १२२

अब हम नाम रतन धन पायो ॥ टेक ॥
जाके लिये होत निर्मल उर सो गुरु देव बतायो ।

जाको सुजस महा मुनि गावें ताको दास कहायो ॥
श्रीगुरु चरण कृपा के कीन्हे सांच शरण मैं आयो ।
देवीसहाय पाय प्रभु अपनो हिय में अति हरखायो ॥

शब्द नं० १२३

तजो रे मन लोभ बड़ा दुखदाई ॥ टेक० ॥
पाप मूल ये लोभ जान तूं, कलि इसकी अधिकाई ॥ १ ॥
लोभी रक्त जोंक सम खींचे, सांच को झूंठ बताई ॥ २ ॥
लोभ अन्त में मोह फँसावे, आखिर दुःख उठाई ॥ ३ ॥
रघुवर त्यागो सभी ईषणा, गुरु दया कर पाई ॥ ४ ॥

रघुवर त्यागी समी ईषणा, गुरु दया वर पाई ॥ ४ ॥

शब्द १५४

गौरी शिवशङ्कर से बोली सेवक लेहु बुलाई रे ॥ टेक० ॥
तारक मन्त्र जपत निश वासर ताकी सुधि बिसराई रे ।
सखा समेत बसावहु निजपुर दुख दारिद्र मिटाई रे ॥
अन्न पूरणा अन्न देत है, सुख सम्पति अधिकाई रे ।
गिरिजा वचन सुनत शिवशङ्कर, बोले अति हरषाई रे ॥
कछु दिन बीते बोलि लिहौं मेरो बचन वृथा नहिं जाई रे ।
देवीसहाय अनन्य भक्त तव, नूतन प्रीति लगाई रे ॥
ताको नाथ विलम्ब न कीजे, भृङ्गी देहु पठाई रे ।

शब्द नं० १२५

पतित शिरोमणि नाम हमारो ॥ टेक ॥

कबहुं न ध्यान धरत उर अन्तर कबहुं न नाम उचारो ॥१॥
कबहुं न सुजस सुनत शङ्कर को लगत कुसङ्ग पियारो ॥२॥
कबहुं न सन्त शरण हरि सेवा, नहिं निज पाप निकारो ॥३॥
देवीसहाय दास अपने को, अब की बेर उभारो ॥ ४ ॥

शब्द नं० १२६

शिव के शरणागत रैहौं ॥ टेक० ॥

मोहतक मृदङ्गरा तनको खाल सितार बजैहौं।
रैहों नाम शिवा शिव को नित सुरत की मूरति बनैहौं ॥

गैहों नाम शिवा शिव को नित सुरत की मूरति बनेहौं ॥
तुरत त्रिकुटी पै बसे हौं ॥

हृदय उमङ्ग रङ्ग केसर को, आशा अतर लगेहौं ।
अबीर गुलाल सनेह शील को, उनही पै बरसैहों ॥
और न कहूं चलि जैहों ॥

शिव पदमें अनुराग फाग में; निज मति ताहि नचैहौं ।
रङ्ग भीने पग निरखि पिया के, मन मधुकर को लगेहौं ॥
उतर भवसागर जैहों ॥

देवीसहाय योग जप के फल, शिवहि समर्पि सि हैहौं ॥

शब्द नं० १२७

गंगे भले गरीब निवाजे ।। टेक० ।।
तेरे दरस परस मज्जन से पाप आप से भाजे ।
तेरे तीर जीव तन त्यागे सुरपुर आय बिराजे ।।
जे नर नीर नेम सों पीवत रोग रहित तन ताजे ।
देवीसहाय भजत निश वासर भक्ति भाव के काजे ।।

शब्द नं० १२८

अब प्रभु करहु कृपा यहि भाँती ।। टेक० ।।
जाते मिटे मोह ममता मद, शिव सुमिरौं दिन राती ।
विश्वनाथ कहँ पूजन कीन्हें उमगि उठे मन छाती ।।

आनन्द वन बीथिन में डोलूं भूलि जाहुं निज जाती।
दैवीसहाय उमा शङ्कर को लिखत अरज की पाती॥

भजन न० १२९

अब हम सांब चरन रति मानी॥ टेक०॥

लोग कुटुम्ब की आस न कीन्ही गिरिजापति हित जानी।
जाको नाम जपत निश वासर नित नव मङ्गल खानी॥
आदि शक्ति जेहि वेद बखानत सो शङ्कर की रानी।
दैवीसहाय सदा गुण गावत करम वचन मृदुबानी॥

शब्द नं० १३०

भाई मोह नीच ये भारी, करता है बड़ी ख्वारी ॥ टेक० ॥
मोह बड़ा जग में दुखदाई यही अविद्या मूल बताई ।
यही भूंठ जग ठग २ खाई, यही भयङ्कर काल री ॥ १ ॥
मोह जाल में गाल बजावे, सत्य त्याग मिथ्या बतलावे ।
विषयों के वश वह होजावे, फिर दुख पावे भार री ॥ २ ॥
ये मेरा है मैं हूं इसका, भीड़ पड़े पर कौन है किसका ।
जब हो जावेगा तू ख़स्ता कोई करत ना बात री ॥ ३ ॥
ज्ञान लिया सब जग का धन्धा, रघुनाथ कथता है छन्दा ।
मोह बड़ा भारी है गन्दा, अब तज ये अज्ञान री ॥ ४ ॥

शब्द नं० १३१

तजो रे मन काम बड़ा दुखदाई ॥ टेक० ॥
एक त्रुटि को दूर करे जो, पुन दो सन्मुख आई ॥ १ ॥
इसी कमी का अन्त नहीं है, दिन प्रति बढ़ती जाई ॥ २ ॥
राम सुमर तज जग के धन्धे, नहीं फेर पछताई ॥ ३ ॥
रघुवर दास गुरु चरणन का, अबके जाय न आई ॥ ४ ॥

शब्द नं० १३२

तजो रे मन क्रोधी जन को सङ्ग ॥ टेक ॥
बिना अगनि से क्रोध शत्रु ये, भस्म करत सब अङ्ग ॥ १ ॥

क्रोध अन्ध को दीखत नाहीं, सदा करत है जङ्ग ॥ २ ॥
क्रोध करत ये अति दुर्दशा, यही बड़ा है नङ्ग ॥ ३ ॥
रघुनाथ भज कर सद्गुरु सेवा, तज दो क्रोध कुसङ्ग ॥ ४ ॥

छन्द नं० १३३

हे दीनबन्धु दयाल शङ्कर जानि जन अपनाइये ।
भव धार पार उतार मोकों, निज समीप बुलाइये ॥
जाने अजाने पाप मेरे आप तिनहिं नसाइये ।
कर जोर जोर निहोर मागौं वेगि दरस दिखाइये ॥
देवीसहाय सुनाय शिव को प्रेम सहित जय गावहीं ।
जग योनि से छुट जायं ते नर सदा अति सुख पावहीं ॥

शब्द नं० १३४

गुरु चरण कमल को करि प्रणाम।
गिरिजा शिव को नित लेत नाम॥
रसना शिव शिव रट आठ याम।
हर भजन बिना मुख सरो चाम॥
नर तन पैहैं फिर कौन काम।
शिव नाम लेत नहिं लगत दाम॥
रमि रह्यो सदा शिव सकल धाम।
वेदन ने कह्यो तव राम नाम॥
देवीसहाय भयो सुख अराम।
जब से मैं शिव को भयो गुलाम॥

शब्द नं० १३५

शिव शङ्कर सङ्कट बेगि हरें ॥ टेक० ॥
निज दीनन के दुख दूर करें। करुणा निधान की बान यही ॥
शरणागत को प्रतिपाल करें। नित प्रात उमापति ध्यावत जे ॥
तेई भव सागर पार परें। जे नाम सुधारस पान करें ॥
तिन को यम दूत निहारि डरें। शिव आप में आप दिखाय परें।

शब्द नं० १३६

शिव नाम कहो करुणा करि के ॥ टेक० ॥
कोउ ले न गयो छाती धर के। शिव नाम से पाप जाँय जरिके।
धन में धरि चित्त गये मरि के। ते प्रेत भये ममता करिके।

रागिनी सिन्ध भैरवी नं० १३७

शिव के समान दूजो, देत कौन दान है ॥ टेक० ॥

हरि को सुदर्शन दीन्हों, मानो कोटि भान है ।
आप तो दिगम्बर जाके, नन्दी सो बिमान है ॥

ब्रह्म रूप जानि जाको, वेद करे गान है ।
सोई गौरीश तीनों पुर में प्रधान है ॥

काल कूट देखे सुरा सुर मुरझान है ।

आय के महेश स्वामी, कियो विष पान है ॥
देवी को सहाय तेरा, सेवक सुजान है ।

शब्द नं० १३८

शिवसों न सनेह लगायो ॥ टेक० ॥

गर्भ वासमें जठर अग्निसे जा प्रभु तोहि बचायो ।
ताको नाम भूलि गयो पामर निमक हराम कहायो ॥
वृथा जननी जग जायो ।

करम मलीन करत निश वासर सत संगहि बिसरायो ।
गायो सठ पर नारि निरखि के लंपट नाम धरायो ॥
मूढ़ मन लाज न लायो ॥

केते पतित पवित्र किये शिव जाय अमर पद पायो ।
तिन्हूं से मोहि अधम जानि के दीनबन्धु बिसरायो ॥
दरश चरणन को न पायो ।

देवीसहाय उमापति पद गह चूक माफ़ करवायो।
प्रेम मगन शरीर सुधि नाहीं तब गिरिजा समझायो॥
जानि निज जन अपनायो।

शब्द नं० १३६

सोच ना करो रे मन में, भोला देने वाला है॥ टेक॥
गौरी अरधंगा जाके भंगा को अहारा है।
हाथ में पिनाक लीन्हे, सोई बैल वाला है॥
गोरो सो शरीर जाको, और कंठ काला है।
सोई अवधूत मेरा मोहि प्रति पाला है॥
महा विष पान कीन्हें नैन जाके लाला है।
दुष्टन के नाशिवे को, तीजे नैन ज्वाला है॥

देवी को सहाय तेरा, सेवक निराला है।
वोही मेरा स्वामी, जाके गले मुण्ड माला है॥

शब्द नं० १४०

जै जै जै गिरिजा महारानी ॥ टेक० ॥

स्वाहास्वधा स्वरूप तुही है, तुही रमा ब्रह्माणी।
तेरो ध्यान धरत सुर नर मुनि, आदि शक्ति जिय जानो।
सदा शम्भू सनमानी।

श्लोक—कर्पूर गौरं करुणावतार संसार सारं भुजगेन्द्र हारम्।
सदा वसन्तं हृदयार विन्दे भवं भवानी सहितं नमामि॥

हिम पुर बाल विनोद करत तुम तहँ सुर सुस्तुति ठानी।

हिम पुर बाल विनोद करत तुम तहँ सुर सुस्तुति ठानी ।
अभय किये सब देव दया करि, प्रगटी कला भवानी ॥
बधो महिषासुर दानी ।

मङ्गल करणि अनङ्गल हरणो, करणी कवि ने बखानी ।
वेद पुराण मन्त्र जन्त्रन में तू ही आप समानी ॥
तोहि जाने ते ज्ञानी ।

देवोसहाय भजन यश तेरो, धरों शोश निज पानी ।
अपनो जानि दया करि देखो, देहु विमल बरवानी ॥
मोहि अपना सुत जानी ॥

भवानी शङ्करौ वन्दे श्रद्धा विश्वास रूपिणौ।
याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तस्थ मीश्वरम् ॥

शब्द नं० १४१

मान लीजे हमारी पूजा ॥ टेक ॥
चन्दन धूप दीप तुलसी दल बेल पत्र के कूजा।
ममता मोह विवश मतवारे, ताते तुम्हे नहिं बूझा ॥

जापर कृपा कटाक्ष करत तुम, ताही को कुछ सूझा ।
जन्म २ के पाप कटत सब, शिवशङ्कर पद छूजा ॥

भैरवी खेमटा नं० १४२

छल छाँड़ो करो मन मेरी कही ॥ टेक० ॥
शिव शिव शिव सुमरो सार यही ।
आनन्द बन जन जानि बसै है, भव बन्धन छुटि जावें सही ॥
सुर सरि सिद्ध समाज बसै जहँ शुद्ध बुद्धि ह्वै जावै तही ॥
देवीसहाय सकल सुख सन्मुख, विश्वनाथ मेरी बहियां गही ॥

शब्द नं० १४३

गिरिजा शिव देत दिखाई ॥ टेक० ॥

हाट बाट घर बाहर तन में रहे सकल प्रभु छाई।
नेम प्रेम शिव हेतु करत जे, तिनको परत लखाई ॥
यही श्रुति सम्मत भाई।
बाम अङ्ग गिरिराज पियारी, शोभा बरनि न जाई।
शची रमा दोउ पान खवावत, देव बधू सब आई ॥
करत पूजा मन लाई।
गौर शरीर विभूति चन्द्र छवि गङ्ग छहराई।
कुण्डल झलक कपोलन पे दुति नासा सुभग सुहाई ॥
देखि मन रह्यो लुभाई।

देवीसहाय उमापति आगे राग रागिनी आई।
लेकर बीन बजावत गावत भक्ति प्रेम दरसाई॥
महूं चरण रज पाई।

रागिनी धमार नं० १४४

शङ्कर ही को भारी भरोसो ॥ टेक० ॥

श्रुति सिद्धान्त सार यह मोसौं। बार बार गुरु देव कहो सो।
उन ही कों ध्यावत जस गावत, उनहीको। जय नाम खरो सो॥
काम क्रोध खल पास न आवत। पाप ताप सब जात जरो सो।
देवीसहाय मगन निश बासर। शिव सुमरत मन होत हरो सो॥

चौपाईः—

लाख बात का एक ही जोड़, साचा पुरुष सबन सिर मोड़ ।
सच्चे चोर चुराया घोड़ा, परमेश्वर ताका रङ्ग मोडा ॥१॥

दोहेः—बिरले जन सत् भासते, बहु कथनी करें दिखाय ।
देने को कौड़ी नहीं, कहने को लख पाय ॥ १ ॥
सांच शंख कहते नहीं, देते मांगा दान ।
कथनी के शूरे बड़े, झूठे शंख महान ॥२॥

दोहेः—इक निर्धन जमीदार ने ऋण लाके रुपे दोय ।
निज नारी को दे दिये, लूं जब वर्षा होय ॥२॥
वस्त्र टूक में बांध कर, पात्र धरे निज हाथ ।

वर्षा होते शीघ्र ही. बीज बुवै सब साथ ॥ २ ॥
एक समय साधु कहैं, फेरी दे यह बात।
एक देय दो पाय लो, दोय चतुर हो जात ॥ ३ ॥
सुन कर सीधो नारि ने रुपे दिये दो आय।
रखे हुए क्या लाभ हो साधु देय सो पाय ॥ ४ ॥
मन्द पुत्र शनि सूर्य का सदा देत सन्ताप।
चन्द्र पुत्र बुध जानिये, शोल देय हरें ताप ॥ १ ॥
दो चारों के बाद में दो दोनों को खाय।
धर्म, अर्थ, अरु काम है चौथा मोक्ष बताय ॥ २ ॥
अर्थ धर्म को खात है मोक्ष काम भख जात।
गरुड़ सर्प को खात है, बिल्ली मूषक भात ॥ ३ ॥

शब्द नं० १४५

भजन बिन दीनी वयस बिताय ॥ टेक० ॥

जाके लिये जनम जग लीन्हो । कीन्हों न कछू उपाय ॥

किये बिनोद गोद जननी के । पय पीवत मुसकाय ॥

तरुण भये तन निरखन लागे । तरुणी तरुण सुहाय ॥

भये सफेद केश तन निरबल । नेन न नेक दिखाय ॥

धन और धाम काम नहिं ऐहैं । छिन में सब छूटि जाय ॥

देवीसहाय बसो आनन्द बन । साचो यहैं उपाय ॥

शब्द ० १४६

रसना राम कहो मन लाई ॥ टेक ॥

राम बिना कोउ काम न अैहैं, सुत परिवार बड़ाई ।
अन्त समय ये तोहि तजेंगे, फिर पाछे पछिताई ॥
नाम प्रताप जनि घट योनी बालमीक मुनिराई ।
निज मुख राम चरित जिन गायो, भक्ति कल्पतरु पाई ॥
दुर्लभ देह फेर नहिं पै है छांड़ कपट चतुराई ।
जब जमराज करेंगे लेखा सब कलई खुलि जाई ॥
आतम ज्ञान जोग अरु साधन या जुग में कठिनाई ।
देवीसहाय विमल गुण गावो कृपा करें रघुराई ॥

शब्द नं० १४७

गुरु बिन होगा हे नाथ उद्धार ॥ टेक० ॥
गुरु भगवान् समान जानरी ।
उनका ही नाम उचार ॥ १ ॥
उनका ही रूप ध्यान धर हिय में ।
जिन से कटत विकार ॥ २ ॥
कर किरपा निज दर्शन देवें ।
पतितन पार उतार ॥ ३ ॥
रघुवर सेवक गुरु चरणन का ।
बेड़ा करो तुम पार ॥ ४ ॥

शब्द नं० १४८

बड़ा करो तुम पार ॥ ४ ॥

१७७

शब्द नं० १४८

कोई करो मित्रता मीत, प्रीति की रीति निराली है ॥ टेक० ॥
जल ने दूध से मेल किया था, निज गुण अपना रूप दिया था ।
वो कर लिया आप समान, दुई सब दूर निकाली है ॥ १ ॥
देख अग्नि पर दूध का तपना, जल ने अङ्ग जला दिया अपना ।
नहीं जलने दिया यार, तप्त सब आप उठाली है ॥ २ ॥
दूध उफन कर गिरा अग्नि में, समझा यार जल गया लग्न में ।
फिर जल के छींटे पाय, शोक तज़ि शीतलता लई है ॥ ३ ॥
यों तो सहज है दिल का लगाना, मगर कठिन है ओड निभाना ।
टेकचन्द कर ख्याल कि वो तो तेरा ही ख्याली है ॥ ४ ॥

शब्द नं० १४९

ऊधो कर्मन की गति न्यारी ॥ टेक ॥

सब नदियां जल भर भर रहियाँ सागर किस विधि खारी ॥
उज्ज्वल पङ्ख दिये बगुला को कोयल किस गुण कारी ।
सुन्दर नयन मृगा को दीने बन बन फिरत उजारी ॥
मूरख मूरख राजे कीने पण्डित फिरें भिखारी ।

राग कालिंगड़ा नं० १५०

टेक—सब दिन होत न एक समान ।।टेक।।

इक दिन राजा हरिश्चन्द्र गृह सम्पति मेरु समान ।
इक दिन जाय श्वपच गृह सेवत अम्बर हरत मशान ॥

इक दिन जाय श्वपच गृह सेवत अम्बर हरत मशान ॥

इक दिन दुलहे बनत बराती, चहुं दिशि हुरत निशान ।
इक दिन डेरा होत जङ्गलमें कर सूधे पग तान ॥
एक दिन सीता रुदन करति है महा विपिन उद्यान ।
इक दिन रामचन्द्र मिल दोऊ विचरत पुष्प विमान ॥
इक दिन राजा राज युधिष्ठिर अनुचर श्री भगवान ।
इक दिन द्रोपदी नग्न होत है चीर दुशासन तान ॥
प्रगटति है पूरब की करनी तज मन शोच अजान ।

राग प्रभाती नं० १५१

क्यों सोया गफलत का माता जाग रे नर जाग रे ॥ टेक ॥
या जागे कोइ योगी भोगी या कोई जागे चोर रे ॥

या जागे कोई सन्त पियारा लगी राम सों डोर रे।
ऐसी जागन जाग पियारे जैसी ध्रुव प्रहलाद रे॥
ध्रुव को दीनी अटल पदवी दिया प्रहलाद को राज रे।
हरि सुमिरे सोई हँस कहावे, कामी क्रोधी काग रे॥
तनका चोला भया पुराना लगा दाग पर दाग रे।
मन है मुसाफ़िर तनुकी सराबिच तूं कीना अनुरागरे॥
साधु सङ्ग सतगुरु की सेवा पावै अचल सुहाग रे।
नितानन्द भज राम गुमानी जागन पूरन भाग रे॥

शब्द नं० १५२

आऊँगा न जाऊंगा मरूंगा न जीऊंगा।
गुरु के शब्द से मैं अमी रस पिऊंगा॥

गुरु के शब्द से मैं अमी रस पिऊंगा ॥

कोई पूजे मढ़िया कोई पूजे गौरां ।
दोनोंकी मति हर ले गया चोरां ॥
कोई जावे मक्का कोई जावे काशी ।
दोनों के गल बीच पड़ गई फांसी ॥
कोई फेरे माला कोई फेरे तसवी ।
देखो रे लोगो यह दोनों कसवी ॥
कहै कबीर सुनो नर लोई ।
हम न किसी के हमारा न कोई ॥

शब्द नं० १५३

तुम देखो सन्तो भूल भुलैयां का तमाशा ॥ टेक० ॥
ना कोई आता ना कोई जाता, झूठ जगत् का नाता ।
ना काहू की बहन भानजी, ना काहूकी माता ॥

ड्योढ़ी लग तेरी तिरिया जावे, पोलो लग तेरी माता।
मरघट तक सब जायँ बराती हँस अकेला जाता॥
एकतई ओढ़े दोतई ओढ़े, ओढ़े मलमल ख़ासा।
शाल दुशाला नितकी ओढ़े, अन्त ख़ाक मिल जाता॥
कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी, जोड़े लाख पचासा।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, सङ्ग चले ना माशा॥

शब्द नं० १५४

मन हरदम हरि भज मुखसे सीता राम बोल॥टेक॥
सीता राम राम बोल राधे श्याम श्याम बोल॥
है सार जगत् में नाम राम का अन्त कहूं मत डोल।
तज कपट दम्भ पाखण्ड ध्यान धर दिलको घुण्डो खोल॥१॥

तज कपट दम्भ पाखण्ड ध्यान धर दिलका घुण्डा खोल ॥१॥

हैं झूठे मित्र कुटुम्ब कुधातु पर ज्यों सोने का झोल।
तन मृतक भये सब तजैं आय फिर उठे न कौड़ी मोल ॥२॥
था गर्भवास में किया भजन करनेका हर से कौल।
यहां आय फँसा मायामें काल का बज रहा सिर पर ढोल ।३॥
सच्चा हीरा तन पायेगा वृथा मत पत्थर धूल टटोल।
हर सहाय मूढ़ भज कृष्ण विषय विष मत ना पीवे घोल ॥४॥

शब्द नं० १५५

गुरु के समान नाहीं दूसरा जहान में। टेक।
गुरु ब्रह्मरूप जानो शिव का स्वरूप मानो।
साक्षात् विष्णु जानो लिखा है पुरान में ॥ १ ॥

गुरु ज्ञान बतावे गुरु पाप से बचावे ।
ब्रह्म से मिलावे गुरु तुर्या पद ध्यान में ॥ २ ॥
यही श्रुति वेद कहता गुरु बिन ज्ञान कैसा ।
ज्ञान बिना मुक्ति कैसी आवे तेरा ध्यान में ॥ ३ ॥
छल कपट त्याग दीजो गुरुजी की सेवा कीजो ।
सांवरा की शरणा लीजो खेलो मैदान में ॥ ४ ॥

शब्द नं० १५६

अँखियां गुरु दर्शन की प्यासा ॥ टेक० ॥
देखन चाहें कमल नयन को हरदम रहत उदासी ॥ १ ॥
केशर तिलक माल मोतियन की वृन्दावन के वासी ॥ २ ॥

जो तन लागे वोही तन जाने लोगन के मुख हांसी ॥ ३ ॥

जो तन लागे वोही तन जाने लोगन के मुख हांसी ॥ ३ ॥
नेह लगाय त्याग दई तृण सम डाल गये गल फांसी ॥४॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो लूंगो करवत काशी ॥ ५ ॥

शब्द नं० १५७

अँखियां मोहन की बिन देखे रहा न जाय ॥ टेक० ॥
जिन नैनन में श्याम बसत हैं दूजा नाहिं सुहाय ॥ १ ॥
काजर रेख किरकिरा लागे सुरमा नाहिं ठहराय ॥ २ ॥
मेरे अँगना में आय के मटकी लेत उठाय ॥ ३ ॥
और के डरते डरपत नाहीं जसुदा देख डराय ॥ ४ ॥
बंशी वाले मोहना बंशी नेक बजाय ॥ ५ ॥

तेरी बंशी ने मेरो मन हरो घर अँगना ना सुहाय ॥ ६ ॥
सूरदास प्रभु तुम से मिलन को हर से हेत लगाय ॥ ७ ॥

शब्द नं० १५८

दोहा—तू ही मात तू ही तात है, तू ही बन्धु सुत नार।
तू ही आदि तू ही अन्त है, तू ही गुरू दातार ॥
तेरा पिंजरा बना हैं अमोल निरख पिजरे ने भाई ॥ टेक० ॥
इस पिंजरे में तोता मैना ओ३म् सोऽहं बोलत बैना।
सुरत निरत को डाट शब्द में चित लाई ॥ १ ॥
पांचो मार पचीसों वश में इन पांचों को कर ले रसमें।
शून्य शिखर की खोज भरम तेरा मिट जाई ॥ २ ॥

खम्भ गड़े हैं बड़े रसीले बन्धु मत समझो इनको ढीले।

शून्य शिखर की खोज भरम तेरा मिट जाई ॥ २ ॥

खम्भ गड़े हैं बड़े रसीले बन्धु मत समझो इनको ढीले।
लगा पवन की गांठ खम्ब में उलझाई ॥ ३ ॥
जो सत्गुरुकी शरणा आये मङ्गल मूल परमपद पाये।
हो तुर्या असवार मिटे आवा जाई ॥ ४ ॥

शब्द नं० १५९

जगत् में हरि सम मित्र न कोई ॥ टेक० ॥
भांति २ के देत पदारथ कृपा नीर से धोई ॥ १ ॥
जो नर हरि सों करे मित्रता आप हरि सम होई ॥ २ ॥
हरि सुमिरण सत्सङ्ग जगत् में सार पदारथ दोई ॥ ३ ॥
भजो कन्हैयालाल हरि को वृथा जन्म मत खोई ॥ ४ ॥

शब्द नं० १६०

कोई पहुंचे सन्त विवेकी उस मग की राह कठिन है ॥ टेक० ॥
बिना पन्थ बिन पग का मारग कोई पहुंचो बिरला जन है ॥१॥
शून्य शिखर पर चढ़ कर देखा जहां बिना नयन दर्शन है ॥२॥
बिना धरण जहां आसन मारो बिना देह इक जन है ॥३॥
मगन भई जब पिय को पायो उस पीव पर मेरा मन है ॥ ४ ॥
मङ्गलानन्द मगन सुखराशी सत् चित आनन्द घन है ॥ ५ ॥

शब्द नं० १६१

सोवे हैं नगरिया सारी जागूंरी भनेली मैं । टेक० ।
चेतन चिराग प्यारो चांदना हवेली में ।
बगड़ में अँधेरी छाई डरूं हूं अकेली मैं ॥ १ ॥

खिड़की सारी बन्द करके सोवती अकेली मैं ।

बगड़ में अंधेरी छाई डरूं हूं अकेली मैं ॥ १ ॥

खिड़की सारी बन्द करके सोचती अकेली मैं ।
पिया २ रटने लागी नार थी नुहेली में ॥ २ ॥
इतने में एक सांऽहं २ शब्द हुआ हेली में ।
श्यामसुन्दर मन्दिर के अन्दर टेरें खड़े देहली में ॥ ३ ॥
शून्य अटा पर सेज सजन की वहां पकड़ले लई मैं ।
टीकम कहैं परम सुख पाई पीछे चौसर खेला मैं ॥ ४ ॥

शब्द नं० १६२

वा घर जय्यो हे नींद जा घर राम नाम नहीं भावे । टेक ।
बैठ सभा में मिथ्या बोले निन्दा करे पराई ॥
वह घर हमने तुझे बताया जय्यो बिना बुलाई ॥ १ ॥

कैतूं जग्यो राज दुवारे के रसिया रस भोगी।
हमरा पीछा छोड़ बावरी हम हैं रमते जोगी ॥ २ ॥
ऊँचा मन्दिर धौर सबौरी जहां कामिन चँवर डुलावें।
हमरे संग क्या लेगी बावरी पत्थर पर दुःख पावें ॥ ३ ॥
कहें भरथरी सुनरी निद्रा यहां नहीं तेरा बासा।
हम तो रहते राम भरोसे गुरू मिलन की आशा ॥ ४ ॥

शब्द नं० १६३

मैं तेरा स्वामी मुझे न दिल से भूल ॥ टेक० ॥
तुही डार में तुही पात में तुही रँगीला फूल ॥ १ ॥
गोपीचन्द भरथरी राजा सिर में डाली धूल ॥ २ ॥
दास कबीर शरण तेरी आया होवे अर्ज कबूल ॥ ३ ॥

शब्द नं० १६४

दास कबीर शरण तेरी आया होवे अर्ज कबूल ॥ ३ ॥

शब्द नं० १६४

दिवाने प्यारे क्या गावे घर दूर ॥ टेक० ॥

अनलहक कह हक़ को पहुंचा सूली चढ़े मंसूर ॥ १ ॥
शेख़ फ़रीद कूए में लटका गिरे तो चकना चूर ॥ २ ॥
स्याही गई सफेदी आई चलना है बडी दूर ॥ ३ ॥
बलखबुखारे के बादशाह ने नौसो छोड़ो हूर ॥ ४ ॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो हरदम हाजिर हजूर ॥ ५ ॥

शब्द नं० १६५

मोको कहां ढूंढेरे बन्दे, मैं तो तेरे पास में ॥ टेक० ॥

ना तीरथ में ना मूरत में, ना एकान्त निवास में।
ना मन्दिर में ना मसजिद में, ना काशी कैलाश में ॥ १ ॥

ना मैं जप में ना मैं तप में, ना मैं व्रत उपवास में ।
ना मैं क्रिया करम में रहता, ना मैं योग संन्यास में ॥ २ ॥
नहीं प्राण में नहीं पिण्ड में, ना ब्रह्माण्ड अकाश में।
ना मैं त्रिकुटि भँवर गुफामें, सब श्वासन को श्वांसमैं ॥३॥
खोजी होय तुरत मिल जाऊं, एक पल ही की तलाश में ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, मैं तो हूं विश्वास में ॥ ४ ॥

भजन न० १६६

नैनो लिख लेनी साईं तेरे हजूर ॥ टेक० ॥
आगे पीछे दहने बायें, सकल रहा भरपूर ॥ १ ॥
जिनको ज्ञान गुरू का नाहीं, सो जानत हैं दूर ॥ २ ॥

जिनको ज्ञान गुरू का नाहीं, सो जानत हैं दूर ॥ २ ॥

योग यज्ञ तीरथ व्रत साधे, पावत नाहीं कूर ॥ २ ॥
स्वर्ग मृत्यु पाताल जिसी में, सोई हरका नूर ॥ ४ ॥
चरणदास गुरु मोय बतायो, सो है सबका मूर ॥ ५ ॥

शब्द नं० १६७

अब ना रहूंगी राम अटकी, म्हारी लगी जो रामसे प्रीति ॥टेक॥
मन्दिर जा चरणामृत लेसो, कपटी लोगों ने अटकी ।
ठाकुरजी आगे नृत्य करूं थी, ताल बजाऊं और चुटकी ॥१॥
राजनीति की सार न जानी, साधो रे सँग अटकी ।
देवर जेठ की कान न मानी, पड़ो घूंघट पर पटकी ॥ २ ॥
गहना गूंठी कभी न पहरूं, गल तुलसी की कण्ठी ।
नोसर हार गले रो त्यागो, भूको नागरनटकी ॥ ३ ॥

म्हाने सत्गुरू ऐसो मिल गयो, लागी ज्ञानकी गुटकी।
मीरांके प्रभु गिरधर नागर, आवागमन से छुटकी ॥ ४ ॥

शब्द नं० १६८

जो कोई चितसे मोहे न बिसारे, मैं न बिसारूँ प्रण है यही मेरा।
धर्म प्रिय हो धर्म बढ़ाऊं, सफल कार्य कर अर्थ बताऊँ ।
मुक्ति चाहे तो पार लगाऊं, पल क्षण मांहि ना लागत बेरा ।१॥
रोग हरूं चिन्ता सब टारूं, अभय करूं शत्रु न को मारूं।
अचल भक्त जन वेग उबारूं, सेवा करूं आप बन चेरा ॥ २ ॥
मेरानाम भक्त सुखदायक, सदा विपति में होत सहायक।
जो कोइ रटे कृष्ण यदुनायक, ताके हृदय करत नित डेरा ॥३॥

जो कोइ रटे कृष्ण यदुनायक, ताके हृदय करत नित डेरा ॥३॥

गजल नं० १६९

१६५

बने जो कुछ धर्म करले, यही एक साथ जावेगा। टेक।
गया अवसर न तेरे फिर, यह हरगिज़ हाथ आवेगा ॥
दिवाना बनके दुनियां में, समय अनमोल खोता है।
दिये लाखों की दौलत भी, न पल रहने तू पावेगा ॥ १ ॥
धरी रह जायगी तेरी, अकड़ सारी ठिकाने पर।
जब आके यम जकड़ गरदन, पकड़ कर धर दबावेगा ॥ २ ॥
कुटुम्ब परिवार सुत जोई, सहायक होगा न कोई।
तेरे पापों की गठरी खुद, तूं ही सिर पर उठावेगा ॥ ३ ॥
गर्भ में था कहा तूने, न भूलूंगा प्रभू तुझको।
भला तूं जाय के अपना, उसे क्या मुंह दिखावेगा ॥ ४ ॥

तुझे तो घर से जङ्गल में, तेरा ही खुद बखुद बेटा।
सुलाकर लकड़ियों के ढेर, पर तुझ को जलावेगा ॥ ५ ॥
कहै कबीर समझाई, तू कहना मान ले भाई।
नहीं तो अपनी ठकुराई वृथा सारी गँवावेगा ॥ ६ ॥

भजन नं० १७०

बन आये की बातरे ऊधो, बन आये की बात रे ॥टेक ॥
एक समय हर हमने देखे, मुख धोवत ना हाथ रे।
अब तो कृष्ण भये ब्रह्मचारी, सौ सौ बिरियां न्हात रे ॥१॥
एक समय हर हमने देखे, छोन छोन दधि खात रे।
अब तो कृष्ण भये हैं राजा, चढ़े सिंहासन जात रे ॥ २ ॥

भये है राजा, चढ़ सिंहासन जात रे ॥ २ ॥

कर पै पात पात कर ही पै, मांग २ दधि खात रे।
जो माधो इस बन नहिं आवें, तुम क्यों आवत जात रे ॥ ३ ॥
यही बात उनसे जा कहियो, और बातों की बात रे।
यह बात उनही को सोहै, जाके दो जननी दो तात रे ॥ ४ ॥
ज्यूं मद कुल बसें काष्ट में, बन्धा अम्बुज के पात रे।
जो गङ्गा देवन को दुर्लभ, तामें श्वान नहात रे ॥ ५ ॥
तेल के सङ्ग फुलेल होत है, महकत बास सुबास रे।
मोती बीच सूत का तागा, महँगे मोल बिकात रे ॥ ६ ॥
वृन्दावन में गऊँ चरावत, गोकुल ही को जात रे।
हाथ लकुटिया कांधे कमरिया, रज लिपटाये गात रे ॥ ७ ॥

यही वृन्दावन यही वन कुञ्जन, यही पलाश के पात रे।
हाथ ओट हरि हम से खाया, दधि माखन और भात रे ॥८॥
यो मन माधोजी से झगड़ूं दे कुब्जा के लात रे।
सूर श्याम कुब्जा सङ्ग विरमें, गोपिन सङ्ग लजात रे।

गजल नं० १७१

आ मौत जान मेरी, आफ़त में मुब्तला है।
झगड़े बपा है हरसू सिर पर खड़ी बला है ॥ १ ॥
आरामे जान जाना, राहत दिलो जिगर की।
ज़ख़्मों की तू है मरहम, दारू है दर्दे सर की ॥ २ ॥

... से निजात मिलती, है रंज से अलम से।

ज़ख़्मों की तू है मरहम, दारू है दर्दे सर की ॥ २ ॥

तुझ से निजात मिलती, है रंज से अलम से।
तू देती है रिहाई, दुःख दर्द और ग़म से ॥ ३ ॥

आबिद फ़क़ीर वो ज़ाहिद, हरएक है तेरा शैदा।
ख्वाहिश है सब को तेरी, सब में है तेरी चर्चा ॥ ४ ॥

आरहम कर खुदारा, परदा जरा उठा दे।
जिसकी हवस है सूरत, उसको मुझे दिखा दे ॥ ५ ॥

ऐ मौत जल्दी आजा, दे हमको ज़िन्दगानी।
तेरे तुफ़ैल पाये, हम ऐशो कामरानी ॥ ६ ॥

आशा इसे दो गीती, ऐ मौत नाम तेरा।
दुख दर्द से बचाना, है मौत काम तेरा ॥ ७ ॥

मादर की तरह शफकत, है गोद में उठाले।
मंझधार में पड़े हैं, गिरदाब से बचाले ॥ ८ ॥

गजल नं० १७२

हमें नहीं काम दुनियां से, हमें श्रीकृष्ण प्यारा है ॥ टेक॥
यशोदानन्द का ढोटा, मेरे नयनों का तारा है।
तेरी वह सांवरी सूरत, मेरे हृदय में वह मूरत ॥ १ ॥
उसी का ध्यान धरते हैं, उसी पर प्राण वारा है।
उठाया आप गिरवर को इन्द्र का मान मारा है ॥ २ ॥
गये जब आप मथुरा को पकड़ कर कंस मारा है।
चलो वैकुण्ठ को चलिये, जहां गङ्गा की धारा है ॥ ३ ॥

सुनो विनती प्रभु मेरी, सदा सेवा करूं तेरी।

चलो बैकुण्ठ को चलिये, जहां गङ्गा की धारा है ॥ ३ ॥

२०१

सुनो विनती प्रभु मेरो, सदा सेवा करूं तेरी ।
मिलोना आप खुश दिल से, हमें तेरा सहारा है ॥ ४ ॥

रसिया नं० १७३

मेरे अँगना में बांसुरी बजाय जा, खिलौना तू ने ले दूंगी ॥टेक॥
मेरे अँगना में चोंक बहुतेरो दूर खेलन मत जाय ।
अगर पड़ोसन सबही दुखिया, मत काहू के लाला जाय ॥१॥
जो लाला तू दधि को भूखो, गाय बँधा दूं तोय ।
घर घर से मैं माखन लाके, तोहि तो जिमा दूँगी ॥ २ ॥
चन्द्रसखी मोहन को मिलबो, मिले न बारम्बार ।
यो मोहन अलगोजा वारो, लेगया भजन बनाय ॥ ३ ॥

भजन नं० १७४

बता दे सखी कौन गली गये श्याम ॥ टेक० ॥
गोकुल ढूढ़ वृन्दावन ढूंढ़ा, मथुरा में हो गई शाम ॥ १ ॥
मथुरा ढूंढ़त रैन बिहानी, रात कियो विश्राम ।
भोर भयो जब बन २ ढूंढ़ा पायो कदमन छांह ॥ २ ॥
कहा कहूं वाके मुख की शोभा, कोटि उदय भये भानु ।
चन्द्रसखी भज बालकृष्ण छवि, लजत कोटि शत काम ॥३॥

शब्द नं० १७५

बं बम्भोला नाथ शिव नाथन के नाथ,
आज मेरी कामना पूरन करो ।

आज मेरी कामना पूरन करो।

मेरे बाबे की झोली में क्या क्या चीज,
लौंग सुपारी धतूरा का बीज ॥ १ ॥
कोई बजावे शङ्ख घड़ावल, कोई बजावे गाल,
कोई मांगे खड़ा होकर गोदीमें का लाल ॥२॥
कोई चढ़ावे बेल पत्र, कोई चढ़ावे भङ्ग,
बैल की सवारी कोन्हीं पारवतीके संग ॥३॥

भजन नं० १७६

अनुभव स्वरूप निजरूप लखा जिन, ओ३म् सोऽहं रटा २ रे ॥टेक॥
अक्षय धन सम्पति मिल जावे, तृष्णा कबहू मन न डुलावे।
कर सन्तोष बैठ रहो घर में, बाहर फिर मत उठा २ रे ॥ १ ॥

२०४ शान्त चित्त निर्मल बुद्धि होवे, वृथा कल्पना मन का खोवे।
अन्तर बाहर उज्ज्वल करले, मल बाधा को छुटा २ रे ॥ २ ॥
राग द्वेष के फन्द कट जावें, चहुं दिशि समता भाव दर्शावे।
निश्चय यही एक मन राखे, जब सों दृष्टि हटा २ रे ॥ ३ ॥
नाम रूप गुण लखे न जावें, सतचित आनन्द भ्रम नशावें।
माखन माखन खालो प्यारे छोड़ दो ये मठा रे ॥ ४ ॥

शब्द ० १७७

सन्तो के आगे कौन चीज बादशाही ॥ टेक ॥
बादशाह ने दुलहा बनके दश छोड़ी दश ब्याही।
तन पै खाक सन्त दुलहे ने लाई तो ओढ़ निबाही ॥ १ ॥
बादशाह घर नौबत बाजे पातर फिरें उमाहीं।
अनहद बाजा बजें सन्तन के सुन सुन मस्त इलाही ॥ २ ॥
बादशाह की भरे न तृष्णा कर दिये मुलक तबाही।
सन्तों के सन्तोष खजाना हरदम अटल अथाई ॥ ३ ॥
बादशाह चितवें मन चाही साधु सन्त हर चाही।
शम्भूदास मता सन्तन का चन्दा में दोष न स्याही ॥४॥

गजल नं० १७८

जङ्गल में जोगी बसता है, गाहे हँसता है, गाहे रोता है ॥टेक॥
दिल उसका कहीं न फँसता है, तन मन से चैन बरसता है ॥१॥

खुश फिरता नङ्गमनङ्गा है, नयनों से बहती गङ्गा है।
जो आ जावे सो चङ्गा है, मुख रङ्ग भरा मन रङ्गा है ॥ २ ॥

गाता मौला मतवाला है, जब देखो भोला भाला है।
मन मणिको उसकी माला है, तन उसका एक शिवाला है ३॥

नहीं परवा मरने जीने की, है याद न खाने पीने की।
कुछ दिन की [illegible] न महीनेको, है [illegible] रुमाल पसीने की ॥ ४ ॥

पास इसके पक्षी आते हैं, दरयायें गीत सुनाते हैं।
बादल स्नान कराते हैं; वृक्ष उसके रिश्ते नाते हैं ॥ ५ ॥

शब्द नं० १७९

चल हँसा वा देश समंद बिच मोती रे ॥ टेक ॥
चल हँसा वा देश निराले, बिन शशि भानु रहे उजियाले।
जहां लगे न काल को चोट, जगमग ज्योति रे ॥ १ ॥
जब चलने की करूँ तेयारी, द्विविधा जाल फँसा अति भारी।
जब चलनें की करूँ हँसनी रोती रे ॥ २ ॥
चाल पड़ा जब दुविधा छूटी, पिछली प्रीति कुटुम्ब से टूटी।
कर झट पट सोच विचार, पांच पेड़ी सूनी रे ॥ ३ ॥

जाकर किया समद पर वासा, फिर ना रही आवनकी आशा।
कहै कबीर विचार मौत सिर जूती रे ॥ ४ ॥

शब्द नं० १८०

तेरा यह खेल अपारा है, जित देखूँ तित तू ही तू है ॥ टेक ॥
तू ही बन में तू ही घर मन्दिर में, कूप बावड़ा तू ही सरवर में।
तू ही सबका करतार, भरम से न्यारा है ॥ १ ॥
इन्द्रियों में देखा तू ही मन है, शुद्धकरण में तू ही पवन है।
वरणों में तू ही वरण, जलों में गङ्गा धारा है ॥ २ ॥
ज्ञानी में ब्रह्मज्ञान तू ही है, योगी का मुख ध्यान तू ही है।
सबका जीवन प्राण, तू ही आधारा है ॥ ३ ॥

पात पात फल डाल तू ही है, कालोंका महाकाल तू ही है।

पात पात फल डाल तू ही है, कालोंका महाकाल तू ही है।
परमानन्द प्रकाश, शब्द ओंकारा है ॥ ४ ॥

गजल नं० १८१

अगर है शौक़ मिलने का, तो हरदम लौ लगाता जा ॥टेक॥
न रख रोजा न मर भूखा, न जा मसजिद न कर सिज़दा।
बजू का तोड़दे कूज़ा, शराबे शौक़ पीता जा ॥ १ ॥
फेक तसबी तोड़ धागा, किताबाँ डाल पानी में।
मशायक़ बनके बैठा रह, मशीयत को सिखाता जा ॥ २ ॥
इशक़ को पकड़ कर झाड़ू, सफा कर दिलके हुजरे को।
दुई की धूल को लेकर, मुसल्लम पर उड़ाता जा ॥ ३ ॥

कहैं मंसूर सुन क़ाज़ी, निवाला, कहर का मत खा।
अनलहक़ को सभी जानें, यही कलमा पढ़ाता जा ॥ ४ ॥

शब्द नं० १८२

महरम हो सोई जाने भाई साधो, ऐसा देश हमारा हैरे ॥टेक॥
बिन बादल बिजली वहां चमके, बिन सूरज उजियारा हैरे।
बिना नयन वहां मोती पुरोवें, बिन स्वर शब्द उचारा हैरे ॥ १ ॥
भंवर गुफा में अनहद बाजे, मुरली बीन सितारा हैरे।
निर्मल बूंद मिली दरिया में नहीं मोठा नहीं खारा हैरे ॥ २ ॥
जात वरण वहां सूझत नाहीं, ना वहां वेद विचारा हैरे।
वहां जाय ब्रह्म बन बैठे, कहन सुनन से न्यारा हैरे ॥ ३ ॥

वहां जाय ब्रह्म बन बैठे, कहन सुनन से न्यारा हैरे ॥ ३ ॥

कहत कबीर सुनो भाई साधो, पहुंचेगा पहुंचन हारा।
इस पदको जो समझत बूझत, अलख लखे सोई प्यारा हैरे ॥४॥

भजन नं० १८३

धरम मत हारो रे जग में जिन्दगी दिन चार ॥ टेक ॥
अगम लोक से चलकर आया, पहले ख़र्ची कुछ नहीं लाया।
यहां आके गढ़ कोट चिनाया, यूही जाता संसार ॥ १ ॥
धरमराज के जाना होगा, सारा हाल सुनाना होगा।
फिर पीछे पछताना होगा, करलो ना सोच बिचार ॥ २ ॥
अब तो चेत करो मेरे भाई, तैंने वृथा उमर गँवाई।
तैं धोखे काया लुटवाई, भज राम नाम है सार ॥ ३ ॥

बार २ सत्गुरु समझावें, मानुष जनम बहुर नहीं पावे।
गया वक्त फिर हाथ न आवे, श्रीस्वामीजी कहें हरबार ॥४॥

भजन न० १८४

दुनिया में बाबा नहीं है गुजारा किसी ढब से ॥ टेक ॥
घर में रहे तो कैसा योगी, बन में रहे तो कैसा भोगी।
मांगे भीख बतावें लोभी, त्यागी बना है कब से ॥ १ ॥
बोले तो बाचाल बतावें, अनबोले गरवाय रहा है।
करे खुशामद हार गया है, दबे हमारे डर से ॥ २ ॥
धरम करे तो द्रव्य लुटावे, नहीं करे तो सुम बतावें।
कहा कहूं कछू कही न जावे, प्रीति करें मतलब से ॥ ३ ॥

राम भजन बिन पशु बतावें, भजे तो विघनी विघन मचावें ।
राम प्रताप हरि गुण गावे, डरिये कुफ़र ग़ज़ब से ॥ ४ ॥

शब्द नं० १८५

भक्त हठ ऐसा गहना हो, प्रेम हठ ऐसा गहना हो ॥ टेक ॥
पड़ा धान की भांति, चोट दुनियां की सहना हो ।
जड़ामूल से जाय, नेह का तजे न रहनाहो ॥ १ ॥
सत्सङ्गत में बैठ, नार को नार न कहना हो ।
नर को भाई बन्धु, नार को माई बहना हो ॥ २ ॥
जो तुमको हरी दिया, घना धन दौलत गहना हो ।
दोनों हाथों बांट, देख मत बाँयां दहना हो ॥ ३ ॥

कड़ुवा बोल न बोल, किसी का हिया न दहना हो।
जो कोई हित से आवे, उसे तुम चित्त से चहना हो ॥ ४ ॥
बैठ सबर के घाट, लोभ की धार न बहना हो।
बिन मांगे मिल जाय, जहां से जो कुछ लहना हो ॥ ५ ॥
घट से बाहर होय, मेर तज कहीं भी रहना हो।
शम्भूदास हर नहीं मिलें, तो देय उलहना हो ॥ ६ ॥

शब्द नं० १८६

यह जग रोगिया रे, जाने सतगुरु वैद्य न जाना ॥ टेक ॥
जनम मरणका रोग लगा है, तृष्णा रूपी खांसी।
आवागमन की डोर लगी है अड़ी गले में फांसी ॥ १ ॥

सच्चा सत्गुरु कोई न पूजे, झूठा जग पतयावे।
अन्धे बाँह गही अन्धे की, मारग कौन बतावे ॥ २ ॥
सच्चा शब्द सजीवन बूटी घिसकर अङ्ग लगावे।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, बहुर जनम नहीं आवे ॥ ४ ॥

गजल नं० १८७

मशहूर होरहा है, आलम में नाम तेरा ॥ टेक ॥
तू है सभी का अफ़सर, साहिब गरीब परवर।
मामूर हो रहा है, कुदरत कलाम तेरा ॥ १ ॥
जल थल के जीव सारे, सब आश्रये तुम्हारे।
मशकूर होरहा है, आलम तमाम तेरा ॥ २ ॥

आलम में तू ही तू है, गुल में मिसाले बू है।
भरपूर होरहा है, सब में मुकाम तेरा ॥ ३ ॥
सुनले पुकार मेरी, करता है अब क्यों देरी ?
मजबूर होरहा है, ग़म में गुलाम तेरा ॥ ४ ॥
तेराही नाम प्यारा, जपता जहां है सारा।
गुण तेरा गा रहा हैं, बन्दा गुलाम तेरा ॥ ५ ॥

शब्द नं० १८८

कहो जी कैसे तारोगे, मेरो अवगुण भरो है शरीर ॥ टेक ॥
अंका तारे बङ्का तारे, तारे सदन कसाई।
सुआ पढ़ावत गणिका तारी, तारो है मीरांबाई ॥ १ ॥

धना भक्त को खेत जमाया, नामे छान छवाई।
सैन भक्त को साँसो मेट्यो, आप बने हर नाई ॥ २ ॥
ध्रुव तारे प्रहलाद उभारे, और गजराज उधारे।
नरसीजी के भात भरन को, रूप सांवरो सो धारे ॥ ३ ॥
काशी के हम वासी कहिये, मेरा नाम कबीरा।
करनी करके पार उतर गये, जाति वरण कुल होना ॥ ४ ॥

शब्द नं० १८६

मन रे सो बीती सो बीती ॥ टेक ॥
जो बीती सो बीत जान दे, अब तू छोड़ अनीतो ॥ १ ॥
राम नाम की राह बुहारो, राह चलो रजनी की ॥ २ ॥

यह काया तेरी यूं ही ढर जायगी, ज्यों बालू की भीती ॥३॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो गुरवन की प्रतीती ॥ ४ ॥

शब्द नं० १९०

म्हारी बिरहन दुलहन, हे वर पूरा तू वररी ॥ टेक ॥
चन्दन चौकी बग बिछाओ, प्रेम उबटना तन के लाओ ।
सत्संग नीर खुश है न्हाओ, कुमती मैल को हर री ॥ १ ॥
पांहों कङ्कन साम्य बधाओ, हाथों महँदी शब्द रचाओ ।
आंखों कजरा समझ लगाओ, शील शृङ्गार सिङ्गर री ॥ २ ॥
ज्ञान का मण्डप बेग छवाओ, चरचा चौंरी तुरत दुराओ ।
पिया के संग में गांठ घुलाओ, धीरे धीरे चल री ॥ ३ ॥

कहैं कबीर ऐसे समझाओ, मत लोभी को खूब टिकाओ।
झूठा जगत् का भरम नशाओ, अब तूं होय निडर री ॥४॥

शब्द नं० १९१

मेरी सत्गुरु पकरी बांह, नहीं तो मैं बह जाती ॥ टेक ॥
करम जाल में उरझ केरे, आय परी भवधार।
विषय वासना के बस होके, व्याकुल भई अपार॥
हृदय में अकुलाती ॥ १ ॥
मात पिता परिवार, सब लोक कुटुम धन धाम।
अन्त समय परलोक में, कोई न आवे काम॥
बन्धु बेटा नाती ॥ २ ॥

भजे नहीं सत नाम जो. जन मानुष तन पाय ।
पाप करम से परत वह, नरक वास में ज़ाय ॥
देख फाटे छाती ॥ ३ ॥
यह सत्गुरु उपदेश की, झनक परी मेरे कान ।
उदय भये विज्ञान उर, नाश भयो अभिमान ॥
बनी राती माती ॥ ४ ॥

शब्द नं० १६२

गुरु सङ्ग मेला है, तुम सुनियो सन्त सन्त सुजान ॥ टेक ॥
प्रेम नगर की औघट् घाटी, निर्भय पन्थ दुहेला है ॥ १ ॥
लोक लाज कुल को मर्यादा, सीस दिया सोहो चेला है ॥२॥

उलटी पवन शिखर धुन लागी, घर रहा ध्यान अकेला है ।।३।।
पाप पुण्य से रहता न्यारा, सत्गुरु आप नहेला है। ४।।
घीसा सन्त कहें सुनो साधो, बाहर भीतर खेला है।। ५।।

शब्द न० १९३

लगा सोई जाना रे, ज्ञान गुरु का बान ।। टेक ।।
जाके लगे सोई घायल पावे, कोई २ सन्त पहिचाना है।।१।।
वैरागी विरक्त भये साधो, काढ़ी घोटम घोट।
तत्व वस्तु जानो नहीं, बिन सत्गुरु की चोट ।। २ ।।
सती चली सत्लोक को, मेरो सुनियो मित्र सुजान।
पति अपने के कारणे, जङ्गल किया मुकाम ।। ३ ।।

शूरा रण में जाय के भाई, किसका हो आधीन।
बिना बाढ़ की तेग़ से, सन्मुख लड़े कबीर ॥ ४ ॥

शब्द नं० १९४

मन लागा राम फ़कीरी में ॥ टेक ॥
जो सुख देखा हरि के भजन में, सो सुख नांह अमीरी में ॥१॥
भली बुरी सबकी सुन लीजे, कर गुजरान गरीबी में ॥२॥
हाथमें कूंडी, बगलमें सोटा चारों कूट जगीरी में ॥ ३ ॥
आख़िर यह तन खाक मिलेगा, क्या फिरता मगरूरी में ॥४॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो साहब मिले सबुरी में ॥५॥

गजल नं० १९५

गजल नं० १९५

जिधर देखता हूं, उधर तू ही तू है।
कि हरशै में जलवा तेरा हूबहू है॥

चमनमें सरों पर, यह कहती है कुमरी।
तूही तू तूही तू तूही एक तू है॥

गुलिस्ताँ में जाकर, हरएक गुल को देखा।
न तेरी सी रङ्गत न तेरी सी बू है॥

मैं सुनता हूं हर वक्त, तेरी कहानी।
कि तेरा जिकर होरहा कू बकू है॥

भजन नं० १९६

सिया राम कहने का मजा जिसको ज़बाँपर आगया।
जीवन वह मुक्त होगया, चारों पदारथ पा गया ॥ टेक ॥

लूटे मजे ध्रुव भक्तने, उस नाम के प्रताप से।
सन्मुख प्रभु के जा बसे, त्रिलोकमें यश छा गया ॥ १ ॥

प्रहलादके लागी लगन, उस परब्रह्म के नाम की।
नरसिंह को दर्शन दिया, अपने हृदय से लगा लिया ॥ २ ॥

शिवरी जो कहिये भीलनी, जिन प्रेमसे सुमरन किया।
परमात्मा घर आय उसके, हाथके फल खा गया ॥ ३ ॥

कलिकाल के जो भक्त हैं, उनका तो रुतबा है बड़ा।

कलिकाल के जो भक्त हैं, उनका तो रुतबा है बड़ा।
नरसी की हुण्डी द्वारका से, साँवरा सिकरा गया ॥ ४ ॥

योगी, मुनीश्वर, देवता, उस रूपको खोजत फिरें।
जिसपर हुई उसकी दया, सत्गुरु उसे दरशा गया ॥ ५ ॥

भजन नं० १६७

आज मिल सब गीत गाओ, उस प्रभु के धन्यवाद।
जिसका यश नित गाते हैं, गन्धर्व गुणी जन धन्यवाद ।।१॥

मन्दिरोंमें कन्दरों में, पर्वतों के शिखर पर।
देते हैं लागातार सौ सौ बार, मुनिवर धन्यवाद ॥ २ ॥

करते हैं जङ्गल में मङ्गल, पक्षी गण हर शाख़ पर।
पाते हैं आनन्द मिल, गाते हैं स्वर भर धन्यवाद ॥ ३ ॥

कूओंमें तालाब में, सिन्धुकी गहरी धार में।
प्रेम रस में तृप्त हो, करते हैं जलचर धन्यवाद ॥ ४ ॥

शादियोंमें जलासयों में, यज्ञ और उत्सव के आदि।
मीठे स्वर से चाहिये, करें नारि नर सब धन्यवाद ॥ ५ ॥

मानकर अमीचन्द, भजनानन्द ईश्वरस्तुति।
ध्यान धर सुनते हैं श्रोता, कान धर २ धन्यवाद ॥ ६ ॥

आरती नं० १९८

हरि नारायण हरि नारायण, नारायण हरि। ओ३म्।

भव दुःखहारण, सब सुखकारेण, पतित उधारण प्रभु ॐ॥

शुद्ध सच्चिदानन्द स्वरूप, अगम अरूपा शिव ॐ।

निगम निरूपा, सुन नर भूपा, ज्योति स्वरूपा प्रभु ॐ॥

अनन्त अपारा पार न वारा निरधारा हरि ॐ।

ब्रह्म विकाश स्वयं प्रकाश जगन्निवास स्वामी ॐ॥

राम गोविन्द परमानन्द कृष्ण मुकुन्द गुरु ॐ।

* कवित्त *

मैं तो हूं पतित आप पावन पतित नाथ, पावन पतित हो तो पातक हरोहिगे। मैं तो महा दीन आप दीनबन्धु दीनानाथ, दीनबन्धु हो तो दया जीय में धरोहीगे ॥ मैं तो हूं गरीब आप तारक गरीबन के तारक गरीब होतो विरद धरोहीगे। मेरो करणीपे कछु मुकर न कीजे कान्ह करुणा निधान हो तो करुणा करोहीगे ॥ १ ॥

कैसे तुम गणिका के अवगुण न गिने नाथ कैसे तुम भीलनी के झूठे बेर खाये हो। कैसे तुम द्वारिका में द्रोपदी को टेर सुनी

कैसे तुम राज के काज नंगे पग धाये हो ॥ कैसे तुम सुदामा

के झूठे बेर खाये हो। कैसे तुम द्वारिका में द्रौपदी की टेर सुनी

कैसे तुम गज के काज नंगे पग धाये हो ॥ कैसे तुम सुदामा के छिन में दरिद्र हरे कैसे तुम उग्रसेन बन्दीते छुड़ाये हो। मेरी बेर एति देर कान मूंद रहे नाथ दीनबन्धु दीनानाथ काहे को कहाये हो ॥ २ ॥

स्वांस के भरोसे गढ़ मास में निवास लियो आशा मन माहीं राखी मानन शरीरा की। बड़े बड़े शूरवीर देख छोड़ गये मूरख रही ना निशानी जग शाहां ओवजोरांकी ॥ भज दुख भञ्जन निरञ्जन कारेरे मूढ़ नित्य रोज सुधले जो पाहन में कीरांकी। कहैं कवि धारामल सुमरण की यही पल एक एक घड़ी जाहै लाख लाख हीरां की ॥ ४ ॥

दीनता को त्यागकर अपना स्वरूप देख तूं तो ब्रह्म शुद्ध
अजदृश्य को प्रकाशी है। अपने अज्ञान से जगत सब तूही रचे
सर्वको सँहार करे आप अविनाशी है॥ मिथ्या प्रपञ्च देख
दुख जिन आनजीये देवन को देव तूं तो सब सुख राशी है।
जीव जग ईश होय माया से प्रभासे तूं ही जैसे रज्जु सांप सीप
सांप रूप है प्रभासी है॥ ५॥

श्याम तन श्याम मन श्याम ही हमारो धन आठों याम ऊधो
यहां तो श्याम ही से काम है। श्याम होये श्याम जोये श्याम
बिन नाहीं तीये आंधरे की लाकड़ो आधार नाम श्याम है॥
श्यामगति श्यामरति श्याम ही प्राणपति श्याम सुखदाई से

भुलाये घर धाम है। तुम भये बौरे यहां पातो लाये दौरे २

श्यामगति श्याम रति श्याम हो प्रतिपात श्याम ...

२३ भुलाये घर धाम है। तुम भये चौंहे यहां पातो लाये दौरे २
योग कहां राखें हम रोम रोम श्याम है ॥ ६ ॥

दाताहु महीप मानधाताहु दलीप जैसे जाके यश अजहू लों
द्वीप द्वीप छाये हैं। बली ऐसो बलवान को भयो जहान बीच
रावण समान का प्रतापो जग जाये हैं॥ बाण की कलान में
सुजान द्रोण पारथ से जाके गुण दीनदयाल भारत में गाये हैं।
कैसे कैसे शूर रचे चातुर विरञ्चि ने फेर चक चूर कर धूर में
मिलाये हैं ॥ ८ ॥

दीप में पतङ्ग परे जरे न प्रताप जाने मीन स अज्ञान भये
कुण्ड मिले मांस को। गज गजी हेत परो खात २ अँकुश

को राग में कुरङ्ग राग करे निज नाशको ॥ पङ्कज को गन्ध बीच नीच भृङ्ग मोच गहे इति आदि अज्ञनाश करें निज खांसको। अहो हा सघन महा मोह को प्रताप लहा शुभा शुभ जानो पे नहानो भोग आशको ॥ ६ ॥

सोम नाम विप्रवर गिरिजा के वर कर लीनो सुधा फलकर दीनो नरनाहके। भूपति सुरतनी को रानी निज मीतकी को ताने दीनो गीतकी को नीको फल चाहके ॥ आगे गणिका सरागेधरा पति आगे धरा नर नाथ माथ धुना सुन धुना ताहके। हा हा कामिनी के हित हते कामनी के अब ताहे तजो ताहे भजो शीश शशि जाय के ॥ १० ॥

ग्रन्थन के ग्याते माते मत्सर कीच बीच धरानाथ मद साथ

ग्रन्थन के ग्याते माते मत्सर कीच बीच धरानाथ मद साथ भरे दरशात हैं। दूषण च मोरे मोरे भूषण सुभाषण को पण्डित भूपाल तो न सुने मेरी बात है॥ पुना आन जन्तु जेते दुखी मूढ़ दीन तेते मोते सकुचात हम ओते सकुचात हैं। पात्र बिना भाषे राखे हवन को राखे तैसे जोरण भो गात मोसो बात होत जात हैं॥ ११॥

एक स्वांस खाली मत खोयलो खलक बीच,
कीचरु कलङ्क अङ्क धोय ले तो धोय ले।
उर अँधियार पाप पूर सों भस्यो है तामे,
ज्ञान की चिराग चित्त जोय ले तो जोय ले॥

मानुष जनम बार बार न मिलेगो मूढ़,
पूरण प्रभु से प्यारा होय ले तो होय ले।
देह क्षण भंगुर यामे जन्म सुधारिवोसो,
बीज के झँमके मोती पोय ले तो पोय ले॥

दास तो तिहारे जो उदास तो तिहारे,
दूर पास तो तिहारे, आम खास तो तिहारे हैं।
दीन तो तिहारे मति हीन तो तिहारे,
जो नवीन तो तिहारे प्राचीन तो तिहारे हैं॥

क्रूर तो तिहारे गुण पूर तो तिहारे।
राचे नूर तो तिहारे सांचे शूर तो तिहारे हैं॥

भायक तिहारे यश गायक तिहारे,

राचे नूर तो तिहारे सांचे शूर तो तिहारे हैं ॥

भायक तिहारे यश गायक तिहारे,
हो सहायक हमारे हम पायक तिहारे हैं ॥
सामिल ह्वै पीर में शरीर में न राखे भेद,
अन्तर कपट कछु होय तो उघरि जात ।
ठाकुर कहत यामें कठिन न मानो कछु,
हिम्मत किये ते कौन काज ना सुधर जात ।
चार जने चारहि दिशा ते चारि कोने गहु,
मेरु को हिलाये औ उखारे ते उखर जात ॥
घूमत द्वार मतङ्ग अनेक, जंजीर जरे मद अम्बु चुवाते ।
तीखे तुरङ्ग मनो गति चञ्चल, पौन को गौनहुं को लजाते ॥
भीतर चन्द्र मुखी अवलोकत बाहर भूप खरे न समाते ।
ऐसे भये तो कहा 'तुलसा' जो, पै जानकी नाथके रङ्ग न राते ॥

छप्पयः—

जय जय मीन बराह कमठ नर हरि बलि बामन।
परशुराम रघुबीर कृष्ण कीरति जग पावन॥
बुद्ध कलङ्की व्यास पृथू हरि हंस मन्वन्तर।
यज्ञ ऋषभ हय ग्रीव ध्रुव वर देन धन्वंतर॥

बदरीपति दत्त कपिल देव, सनकादिक करुणा करो।
चौबीस रूप लीला रुचिर अग्र राम उर पद धरो॥१॥
विधि नारद शङ्कर सनकादिक कपिल देव मनु भूप।
नरहरिदास जनक भीष्मरु बलि शुक मुनि धर्म स्वरूप॥

अन्तरङ्ग अनुचर हरि जूके, जो इनको यश गावे।

अन्तरङ्ग अनुचर हरि जूके. जो इनको यश गावे ।
आदि अन्त लों मङ्गल तनके श्रोता वक्ता पावे ।
अजामील प्रसङ्ग यह निर्णय परम धर्म को जान ।
इनकी कृपा और पुनि समझे द्वादश भक्त प्रधान ॥२॥

कबहुक खग मृग मीन, कबहु मर्कट तनु धरके ।
कबहुंक सुर नर असुर, नाग मय आकृति करके ॥

नटवत लख चौरासी स्वांग धरि धरि मैं आयो ।
हे त्रिभुवन के नाथ, सीम के कछू न पायो ॥

जो हो प्रसन्न तो देहु अब, मुक्ति दान मांगूं बिहंस ।
जो पै उदास तो कहहु इम मत धर रे नर स्वांस अस ॥

* सवैया *

जिनको नित मैं चितमो चितमोतिनकी रति मोतन माह रतिना।
वह आन पुमान की संगरति पुनिता मन मैं गणिका गृहकीना॥
धिक हैं अबला भृत कन्दर्प अरु मोह धिकार जो मार अधीना।
इति रीत समूह की प्रीत तजी नृप होय योगीश्वर ईश्वर चीना॥१॥

ये श्रुतिज्ञान सुजानन के अभिमान मदादि विकार निवारे।
के चित् मोसम नोचन के चित मो बहु मान मदादिक धारे॥
शून्य यथा मठ साधुन को अति मोक्ष को साधन दोष प्रहारे।
सो हम से मदनातुर को अति काम को कारण वाम समारे॥२॥

पूरण ब्रह्म लखा जिन केवल एक अखण्ड रमा भव सारे।
रूप न रेख अलेख सदा यम भाषत हैं जिनको श्रुति चारे॥
ज्ञान दिनेश चढ़ा जिनके मत मोह निशा के निटे सब तारे।
सो गुरु हैं हमरे उरमे जिन पाप महानिधि पार उतारे॥ ३॥
एक अखण्डित ब्रह्म असङ्ग अजन्म अदृश्य अरूप अनाम।
मूल अज्ञानन सूक्ष्म स्थूल समष्टि न व्यष्टि पन्यो नहीं तामे॥
ईशन सूत्र विराटन प्राज्ञ तैजस विश्व स्वरूप न जामे।
बन्धन मोक्षन भोग न योग नहीं कुछ वामे रु है सब वामे॥४॥
जाग्रत में जो प्रपंच प्रभाषत सो सब बुद्धि विलास बन्यो है।
ज्यों सुपने में ही भोग्य न भोग तउ एक चित्र विचित्र जन्यो है॥

लीन सुषुप्ति में मति होतई भेद भगे एक रूप सुन्यो है।
बुद्धि रच्यो जो मनोरथ मात्रसु निश्चल बुद्धि प्रकाश बन्यो है ।५।

जो फल थे तन मानव के वह लाभ किये हमने अब सारे।
आनन्द ब्रह्म सुधा निधि को लख दूर भये भव के भय भारे॥

क्षुद्र नदी सम मेट दिया वपु ब्रह्म पयोनिधि माह पधारे।
प्रत्येक रूप भई ममता यह पुत्र वधू अब नाहि हमारे॥

दोहा—सठ तज्जन हित अष्ट नव अङ्क समान विचार।
द्विगुण करत पुनः चतुर्गुण घटत रहत इससार॥

छन्द—प—से परमानन्द सद्गुरु मुक्त जीवन जानिये।

द्विगुण करत पु० चतुर्गुण घटत रहत इसरार ॥

छन्द—प—से परमानन्द सद्गुरु मुक्त जीवन जानिये ।
१५१ सुख के निधान सुजान पूरण ध्यान इम हिय आनिये ॥
र—से रघुवर रम रहे हैं, ज्ञान की ये खानिये ।
मान ममता मोह और सब के विनाशक मानिये ॥ १ ॥

उस दोर्घ तम को दूर करना जिनकाजी निज काम है ।
मानता वाणी जिन्हों की सर्व ही जग धाम है ॥
फल दान दाताओं में ऐसे, जैसे सुन्दर आम है ।
रघुनाथ मनके मोहने में पूर्ण राधे श्याम है ॥ २ ॥

केदारनाथ सुगुन केशर माथे तिलक चढ़ाइयां ।
श्रीराम कृष्ण आनन्द कन्दा तिनकी कीरति गाइयां ॥

रघुनाथ गुरुवर धन्य हैं, जिनकी महिमा पाइयां ।
वर्ग चारों प्राप्त होवें जो ये हरि कथा गाइयां ॥ ३ ॥

सब देव मानव असुर मल हर पाप पुञ्ज नसाइयां ।
वो पूर्ण ब्रह्म दयाल शङ्कर भक्त हिय में पाइयां ॥
गौरी गणेश रु शेष शारद कथा हो अद्भुत भाइयां ।
रघुनाथ ऐसे देव के, चरणों पे मैं बलि जाइयां ॥ ४ ॥

गुरुदेव देवन देव स्वामी महिमा तुमरी अपार है ।
संसार सागर धार भारी जाका वार न पार है ॥
जो नाम नवका लेत तुमरी उसको क्या दरकार है ।
रघुनाथ छूटें बन्ध सारे बेड़ा होवे पार है ॥ ५ ॥

आवश्यक संक्षिप्त निवेदन ।

ॐ श्रीगुरुदेव के चरण कमलों को अनन्त धन्यवाद है कि जिनकी परम कृपा से इस लघु संग्रह को संग्रह करने की शक्ति मिली है, मैंने इस पुस्तक का लेखन कार्य सन् १९१४ में परम पवित्र कुरुक्षेत्र के श्रीराम हृदय, तीर्थ में किया था। यथाः— कुरुक्षेत्रं देवानां देवयजनं सर्वेषां भूतानां ब्रह्मसदनम् (जा० उ०) जिस तीर्थ के महत्व को स्वयँ बृहस्पतिजी भी वर्णन करते हैं।

तदुनन्तर, जीन्द राजधानी के कृष्णादि अनेक भक्तों के प्रेम से प्रेरित हो अप्रैल सन् १०१५ में दिल्ली के इम्पीरियल नेटिव

प्रेस में प्रकाशित किया था। फिर क्या था इस संग्रह की इतनी मांग हुई कि पूरी भी नहीं की जा सकी। यही इसके परमोत्तम व लोक प्रिय होने का परम प्रमाण है। हाथ कंगण को आरसी क्या, सज्जन जन स्वयं अवलोकन कर लें।

पूर्व जिन सज्जनों ने आर्थिक सहायता दी है, उनके धन्यवाद सहित ये नाम हैं—

(१) श्रीमती राणीजी साहिबा—धर्म पत्नी धर्मभूषण, लेफ्टिनेन्ट राजबलवीरसिंहजी बहादुर O. B. E. जागीरदार रेवाड़ी।

(२) लाला रामजीदासजी बैंकर भटिण्डा (पटियाला)

(३) श्री पं० गोविन्दप्रसादजी साहिब बी० ए० जज, हिसार।

(४) श्री बाबु श्रीरामजी रईस नया बाँस देहली (उर्दू में)

(५) लाला शिवराम गोकुलचन्द भिवाणी आदि कई सज्जन हैं।

और जिन २ समाचार पत्रों ने इस पुस्तक की समालोचनायें की हैं उनकी नामावलि ये हैं:—

आभीर समाचार उरावर जि० मैनपुरी।

(दिसम्बर सन् १९१६)

सत्य शब्द संग्रह—यह छोटे आकार के ६० पृष्ठ पर छपी है इसके भी प्रकाशक श्री रघुनाथ स्वामी नरेला निवासी, हैं। इस पुस्तक में उपासना प्रार्थना, ज्ञान और भक्ति के बड़े २ उत्तम १०६ भजन संग्रह किये गये हैं भजन बड़े २ अनुभवी महात्माओं के हैं। विशेषता यह है कि भजन सरल होनेके कारण स्त्रियां भी बड़ी सरलता से गा सकती हैं। भक्त जनों व संतप्त हृदय मनुष्यों

को शान्ति प्रदान करने वाली पुस्तक है, यह पुस्तक भी नीचे लिखे पते से बिना मूल्य मिलती हैं डाक महसूल के लिये टिकट अवश्य आना चाहिये। मूल्य प्रेम।

दैनिक भारतमित्र।

(ता० १२ जुलाई सन् १९१६)

सत्य शब्द संग्रह—प्रकाशक—रघुनाथ स्वामी।

अनेक भक्तोंने अनेक नामों द्वारा ईश्वर का चिन्तन किया है। तथा उसके स्मरण के लिये इन नामों से पूर्ण भजन बनाये हैं। ऐसे ही भजनों का इसमें संग्रह है। भक्ति रसास्वाद से परिचय रखने वाले इसका माधुर्य्य समझ सकते हैं। मूल्य प्रेम।

सरस्वती प्रयाग।

(मार्च १९१६)

नीचे जिन पुस्तकों के नाम दिये गये हैं वे भी मिल गई हैं। भेजने वाले महाशयों को धन्यवाद—

(११) सत्य शब्द संग्रह—प्रकाशक रघुनाथ स्वामी, रेवाड़ी।

वीर भूमि दिल्ली।

(वृहस्पतिवार ३ अप्रैल सन् १९२४)

आश्रम में 'एक पुस्तकालय' है:—धर्मार्थ पुस्तकें बांटी जाती है, इनमें निम्नलिखित पुस्तकों के नाम उल्लेखनीय हैं—

भक्ति मार्ग, मुण्डकोपनिषद्, सत्य शब्द संग्रह, सार संग्रह,

आदि सत्य शब्द संग्रह की २०००० हज़ार से भी अधिक कापियाँ वितरित की जा चुकी हैं।

अब सम्वत् १६८१ के माघ मास में प्रयाग त्रिवेणी, काशी, पुरी, नव द्वीप, आदि की यात्रा से लौटने पर श्री काली माई के इस महान् नगर कलकत्ता में आया तो यहां के सुप्रसिद्ध मिष्टान्न विक्रेता गुरु भक्त शिष्य श्रीयुत लाला श्यामलाल ने हमें बड़े प्रेम आग्रह से यहां ठहराया, और इसी अवसर पर इनके पासके बद्रीश पण्डा गोकुलप्रसाद ने 'मण्डरेला' वास्तव्य पं० वासुदेव शर्मा आदि कई गुरु प्रेमियों से मिलवाया तब इन सब लोगों के प्रेम से प्रेरित हो पुनः यह पुस्तक छपवाया और बार हर गुण गाया। ओं शं [illegible] बं बं भोलेनाथ ? शिव २ दीनबन्धु दीनानाथ।

अन्तिम प्रार्थना ।

। गाया। आ श द्   बं बं भोलेनाथ ? शिव २ दीनबन्धु दीनानाथ ।

अन्तिम प्रार्थना ।

ओ३म् सुसारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽ-
भीशुभिर्वाजिन इव। हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं
जविष्ठं तन्मे मनः शिव सङ्कल्पमस्तु ॥ यजु०॥

क्या ही अद्भुत और अनुपम वर्णन है, सचमुच शरीर रूप रथ में जीवात्मा रूपी साहूकार और बुद्धि उसका सारथि और मन लगाम और इन्द्रिय घोड़े हैं, और यह रथ विषय रूपी सड़क पर चलाया जा रहा है, जिसका विज्ञान रूपी सारथि है, वह

लगाम को बड़ी सावधानी से पकड़ इन्द्रिय रूपा घोंड़ों को शुद्ध विषय वेद मार्ग पर चला कर अन्तिम जाना कहां है जो विष्णु भगवान् का परमपद है, जैसा कि धर्मराज कहते हैं:—

यस्तु विज्ञानवान् भवति मनः प्रग्रह वान्नरः।
सोऽध्वनः पारमाप्नोति तद्विष्णोः परमं पदम् ॥

लक्ष्य तो ब्रह्म तत्त्व है, ब्रह्म साक्षात्कार बिना निर्वाह कहां, अनात्म दृष्टि दुःख रूप है, खुशी २ उत्साह पूर्वक चित्त में स्नेह मोहादि रखते हो तो भैय्या काले नाग को गोदी में दूध पिला २ कर पालते हो सत्य स्वरूप एक परमात्मा को छोड और कोई विचार मन में रखते हो तो बन्दूक की गोली कलेजे में क्यों नहीं मार लेते मार्ग में कहां तक डेरे लगाओगे दुनियां सराय में मां

तो नहीं बैठी, यदि सुख चाहो तो चलो राम के धाम को। वि-

तो नहीं बैठी, यदि सुख चाहो तो चलो राम के धाम को। विज्ञान रहित अयुक्त मन वाले इन्द्रिय वेवश बिगड़े घोड़ों के तरह अभीष्ट स्थान तक तो क्या पहुंचाना बल्कि रथ को और रथ में बैठे हुए को कूओं और गढ़ों में जा गिराते हैं, जहां रोना और दांत पीसना रह जाता है, यदि इसी जन्मके घोर रौरवसे बचना इष्ट हो तो घोड़ों को सुधारना और सीधी राह पर चलाना रूप यम नियम की आवश्यकता है, पर लाख यत्न कर देखो जब तक तुम्हारा साईस सारथि धुन्धली आंखों वाला काणा सा है तब तक कीचड़ में डूबोगे रेत में धसोगे, गढ़ोंमें गिरोगे चोटें खाओगे चिल्लाओगे। बाबा सांसारिक बुद्धि को सारथि बनाना दुःख ही दुःख पाना है, अब सुनो बात फतह जय इसी में है कि

२५० लगाम को बड़ी सावधानी से पकड़ इन्द्रिय रूप। घोड़ों को ---
... ागें
श्रीकृष्ण के हाथ, बस
२५२ अपनी मन रूपी बाग डोरी दे दो उस
फिर कोई विघ्न नहीं, वह इस संसार रूपी कुरुक्षेत्र रूप रण भूमि
से जय के साथ ले ही निकलेंगे रथ हांकने में तो जगद्गुरु
प्रसिद्ध हैं। आवश्यकता है हरि को रथ घोड़े और बागें सौंप
कर पास बिठाने की अर्थात् उपासना की। यथाः—

सर्व धर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहंत्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः॥

यह जगतगुरु कृष्ण वाक्य अत्यन्त आदरणीय तथा मान-
नीय और अटल है।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वेसन्तु निरामयाः।
सर्वभद्राणि पश्यन्तु मा काश्चिद्दुःखभाग्भवेत्॥

॥ इति शम्॥

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वेसन्तु निरामयाः।
सर्वेभद्राणि पश्यन्तु मा काश्चिद्दुःखभाग्भवेत्॥

१। प्रातः स्मरण।
२। भक्ति मार्ग।
३। ओङ्कार व्याख्या।
४। गायत्र्यर्थ प्रकाशिका।
५। मुण्डकोपनिषद्।
६। बाल शिक्षा।
७। गणेश पूजन।
८। सत्योपदेश भजनमाला।

इत्यादि :—

Printed by Bankey Lall Varma,
AT THE
B. L. PRESS.
194, Cross St. Calcutta.

Published by Raghunath Swami.
of Narela DELHI.